वर्ष -३ | अंक- १० | मासिक-हिन्दी | अगस्त, २०१४ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

भारत के समाचार-पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

।। ओ३म् ।।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व की समस्त आर्यों को हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएँ

वैदिक संसार

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी

श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका स्वभाव, चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और भागवत में दूध, दही, मक्खन की चोरी, कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रास मण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा सुन-सुनाके अन्य मत वाले श्री कृष्ण की बहुत सी निंदा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निंदा क्यों होती?

यह भागवत बोबदेव का बनाया है जिसके भाई जयदेव ने गीत गोविंद बनाया हैं। उसने देखो ये श्लोक अपने बनाये हिमाद्रि में लिखे हैं कि श्रीमद्भागवत मैंने बनाया है, उस लेख के तीन पत्र हमारे पास थे।

इन भागवतादि पुराणों के बनाने वाले जन्मते नहीं, गर्भ में ही नष्ट हो जाते वा जन्मकर उसी समय मर जाते। क्योंकि इन पापों से बचते, तो आर्यावर्त देश दुःखों से बच जाता। — महर्षि दयानन्द सरस्वती

अतिवृष्टि —अनावृष्टि के प्रकोप से बचने का एकमात्र उपाय — प्रत्येक परिवार में प्रतिदिन यज्ञ

इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से वर्तना, कुटिलता का त्याग

पवित्रता का प्रकाश, पृथ्वी का राज्य, वायु रूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा

आयु, प्राणशक्ति, आज्ञाकारी संतान, पशु–दूध, घृतादि, यश, धन, ऐश्वर्य प्राप्ति

प र्या व र ण र क्षा

प्रकाशकः **मोहनलाल** T-IV-53 A अणुतारा कॉलोनी, रावतभाटा वाया–कोटा (राज.) मोबा. 09413346950

कल्पना चित्रणः **ओम प्रकाश आर्य** आर्य समाज, रावतभाटा वाया–कोटा (राज.) मोबा. 09462313797

आर्य समाज संस्थाओं तथा विद्यालयों आदि के बहुपयोगी उपरोक्त चित्र तथा इसी प्रकार के पाँच अन्य चित्र बृहद आकार में प्रकाशित किये गये हैं, ऊपर वर्णित महानुभावों से सम्पर्क कर मंगवाये जा सकते हैं।

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार
www.facebook.com/vaidiksansarindia

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४
वर्ष- ३, अंक- १०
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अगस्त २०१४
प्रकाशन आर्ष तिथि : भाद्र, कृष्णपक्ष, अमावस
सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक	*सह सम्पादक*
गजेश शास्त्री	नितिन शर्मा
०९९९३७६५०३१	०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम्)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
प्रकृति का स्वभाव क्यों बदल रहा ?	संपादकीय	०४
वेदमंत्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
हमारी महान् विभूतियाँ.....- विश्ववारा आत्रेयी	शिवनारायण उपाध्याय	०७
-आर्यवीर सेनापति दुर्गादास राठौर	पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी	०७
-राष्ट्रसंत स्वामी समर्थ रामदास	स्वामी उमाशंकर सांख्यायन	०८
-स्वामी दयानन्द सर. और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	०९
यज्ञ क्या और किसलिए ?	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	११
महर्षि यास्क द्वारा सोम ऋचा की वैज्ञानिक....	कृपालसिंह वर्मा	१३
उद्धारक सोम	बाबूलाल जोशी	१३
वैदिक ज्ञान के संरक्षण का महापर्व श्रावणी..	आचार्य अग्निमित्र	१४
स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार को क्यों चुना ?	मनमोहन कुमार आर्य	१५
आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते	डॉ. गंगाशरण आर्य	१७
दानव स्वभाव	भारतेन्द्र आर्य	१७
संसद की दीवारों के संदेश	प्रो. उमाकान्त उपाध्याय	१९
भारत वीर शहीदों की गाथा	नन्दलाल निर्भय	२०
देश की रक्षा कौन करेगा ?	रामफल सिंह आर्य	२१
अंग्रेजी भाषा की दासता कब तक ?	शिवकुमार गोयल	२५
रस्म	ओमप्रकाश बजाज	२६
इतिहास की पुनरावृत्ति	डॉ. श्रीलाल	२७
हर गाँव बढ़े-हर पौर सजे	शास्त्री दीनानाथ गौतम	२७
छत्तीसगढ़ में मिली सामवेद लिखी.........	संकलित	२८
संस्कृत भाषा	रमेशचन्द्र भाट	२९
संस्कृत भाषा की महानता एक राष्ट्रीय ध्येय	स्वामी शांतानन्द सरस्वती	२९
तुर्की भाषा से नागरी लिपी तक हिन्दी की यात्रा	मोहनलाल मगो	३१
विश्वभाषा के रूप में हिन्दी : नए प्रतिमान	डॉ. प्रभुलाल चौधरी	३३
बढ़ता अंधविश्वास और पाखण्ड कहाँ जा.....	संकलित	३५
वेदमार्गी बनों	पी.एस. यादव	३५
देवताओं तथा त्यौहारों का विरोध गलत	आचार्य रामगोपाल सैनी	३६
गांधी जी की भूलों से देश को.......	खुशहालचन्द्र आर्य	३७
भारत छोड़ो आंदोलन की ७२वीं वर्षगाठ	इन्द्रदेव	३७
राजीव गांधी का जन्म दिवस	इन्द्रदेव	३८
वैदिक संसार को वेद प्रचार वाहन किया भेंट	वैदिक संसार	३९
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	४०
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	४१
शोक-सूचनाएँ	संकलित	४२

संपादकीय

अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का स्वभाव क्यों बदल रहा?

इस समय लगभग समूचा राष्ट्र कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि से पीड़ित है। वर्षा ऋतु के प्रारंभिक तीन माह जून-जुलाई-अगस्त समाप्त हो चुके हैं किन्तु देश के अनेक भाग पानी की बूंद को तरस रहे हैं। बेतहाशा गर्मी से जन-जीवन बेहाल हैं। वहीं उत्तराखण्ड-महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, ओड़िसा अब मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा कुछ अन्य प्रदेश अतिवृष्टि की चपेट में इस बुरी तरह हैं कि प्राणी मात्र के जीवन के लाले पड़े हुए हैं। यह भी देखने में आया कि जो क्षेत्र अनावृष्टि से ग्रसित थे वे समय बीत जाने पश्चात् अतिवृष्टि की भी मार झेल रहे हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार वर्तमान में लगभग ४० लाख लोग बाढ़ की विभिषिका से जूझ रहे हैं। प्राकृतिक हल-चल से घटित घटनाएँ-दुर्घटनाएँ होना स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा है जिस पर मनुष्य का वश नहीं है किन्तु जिन दुर्घटनाओं का कारण मनुष्य का व्यवहार है तो मनुष्य अपने व्यवहार में परिवर्तन कर प्रकृति का शत्रु बनने से बच सकता है और वेद मार्ग को अपना ले तो प्रकृति का मित्र भी बन सकता है।

अनावृष्टि की विभिषिका

अतिवृष्टि की विभिषिका

अतिवृष्टि और अनावृष्टि की इन आपदाओं का प्रमुख कारण विज्ञान की दृष्टि से प्राकृतिक संतुलन को ठेस पहुँचना अर्थात् पर्यावरण प्रदूषण है। पौराणीक जगत् की रूढ़ मान्यताओं के अनुसार देवता अप्रसन्न हो गये हैं इस कारण इस तरह की आपदाएँ आती हैं तथा देवताओं को प्रसन्न करने के वे अपने स्तर के अंध विश्वासी प्रयासों में टोने-टोटके आदि करते रहते हैं।

पौराणीक जगत् के देवताओं को प्रसन्न करने के प्रयासों को छोड़कर, आपदाओं के लिये जिम्मेदार वैज्ञानिक दृष्टि से प्राकृतिक असंतुलन, पौराणीक मान्यतानुसार देवताओं का अप्रसन्न हो जाना और वेदाधारित देवपूजा अर्थात् देवयज्ञ से सामान्य जन का विमुख हो जाने की वैदिक विद्वानों की मान्यता में कुछ-कुछ समानता है।

विज्ञानानुसार प्राकृतिक घटनाओं के लिये सर्वाधिक जिम्मेदार पर्यावरण प्रदूषण है। पर्यावरण प्रदूषण के कारक तत्वों में जल और वायु के दूषित होने का प्रमुख कारण उद्योगों से विषाक्त गैसों एवं रसायनों का उत्सर्जन, प्राकृतिक सम्पदाओं के दोहन एवं भौतिक विकास की अंधी दौड़ में बेतहाशा उत्खनन, वृक्षों का विनाश आदि कारणों से ओजोन गैस की परत का क्षीण होकर सूर्य की पराबैंगनी किरणों के सीधे पृथ्वी पर पहुँचने से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने के कारण प्राकृतिक असंतुलन उत्पन्न होना है।

पौराणीक जगत् में प्रसन्नता-अप्रसन्नता का आधार मात्र लाभ-हानि है अगर लाभ प्राप्त हो रहा है तो जिससे प्राप्त हो रहा है वह प्रसन्न है और लाभ के स्थान पर हानि हो रही है तो संबंधित अप्रसन्न है। पौराणीक भाईयों की यह मान्यता उनके अल्पज्ञान तथा वैदिक ज्ञान के अभाव में व्याप्त आध्यात्मिक प्रदूषण जिसका विस्तार से उल्लेख जुलाई माह के संपादकीय में किया जा चुका है पर आधारित है क्योंकि वैदिक दृष्टि में देवता वह है जिसका **बगैर किसी स्वार्थ के देना ही धर्म है अर्थात् जो कल्याणकारी है। अतः देवता के प्रसन्न-अप्रसन्न होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।**

वैसे भी विज्ञान के पर्यावरण प्रदूषण और अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से संबंध रखने वाले देवता चेतन न होकर जड़ देवता हैं। जिन्हें वेदों में वसु देवता के नाम से संबोधित किया गया है। **वसु का सीधा सरल अर्थ है बसाने वाले अर्थात् जीवन प्रदान करने वाले न कि उजाड़ने वाले।** ३३ करोड़ देवता की प्रचलित जन धारणा भ्रांतिमूलक है जो कि कोटि शब्द की व्याख्या प्रकार के स्थान पर करोड़ किये जाने के कारण प्रचलित हुई है **अर्थात् ३३ कोटि देवता का अर्थ ३३ प्रकार के देवता है जो इस प्रकार आठ वसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्य, एक इन्द्र (विद्युत) तथा एक प्रजापति (यज्ञ) है।** इन देवताओं को चित्र रूप में प्रदर्शित करता सुन्दर चित्र श्री मोहनलाल जी आर्य एवं श्री ओमप्रकाश जी आर्य रावतभाटा, वाया-कोटा (राज.) द्वारा प्रकाशित किया गया है जो कि कैलेण्डर रूप में भी प्रकाशित किया गया है इच्छुक जन सम्पर्क कर मंगवा सकते हैं इस चित्र को वैदिक संसार के जनवरी माह २०१४ के पृष्ठ-२ पर भी प्रकाशित किया गया है। उपरोक्त अनुसार आठ वसु देवता निम्न हैं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित वेदानुकूल पंचमहायज्ञ का पालन प्रत्येक मानव के लिये पंथ-मजहब से ऊपर उठकर आवश्यक है। इन्हीं पंच महायज्ञों में दूसरे क्रम पर देव यज्ञ निर्धारित है। यह देवयज्ञ ही देव पूजा है, पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि कल्याण करने वाले इसका आशय यह नहीं है कि हिन्दू का कल्याण करने वाले देव वे हैं जो प्राणी मात्र का कल्याण करते हैं। **पंथ-मजहब, मत-मतान्तर में बाँटना अल्पज्ञानी मनुष्यों का कार्य है देवों का नहीं** तथा पूजा का अर्थ है यथा योग्य व्यवहार करते हुए सदुपयोग लेना। यह भ्रान्ति है कि देवता पूजा से प्रसन्न होते हैं। अगर यह मान भी लिया जावे तो प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि **क्या देवता अल्पज्ञानी-अल्पशक्ति धारी मनुष्य की पूजा के भूखे होते हैं? क्या अग्नि, वायु, जल, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि यह जाँच-पड़ताल कर फल प्रदान करते हैं कि किसने मेरी पूजा की है और किसने नहीं?** देव पूजा को हम अपनी तर्क शक्ति और बुद्धि अनुसार इस उदाहरण द्वारा परखें कि अग्नि देव है तथा अग्नि का धर्म है अपने सम्पर्क में आये हुए पदार्थ को सूक्ष्म अणु में परिवर्तित कर वायु देवता को प्रदान कर देना वायु देवता का धर्म है उसे दूर-दूर तक फैला देना। अब हमने अग्नि में एक

को समूल नष्ट नहीं कर पाये तो उसके मूल में उनकी जड़ों में वैदिक धर्म से प्राप्त आत्मबल था जो उन्हें अपनी संस्कृति और राष्ट्र के लिये हँसते-हँसते प्राणों को न्यौछावर करने हेतु प्रेरित करता था। इस बीच व्यापार करने की धूर्त मंशा लेकर अंग्रेज आ धमके, जिसने व्यापार करने की आड़ में दगाबाजियाँ कर यहाँ पर अपना शासन तंत्र जमाया, जो आर्य ७५० वर्ष के इस्लाम के कत्ले आमों से नहीं झुके, जिनकी स्त्रियों ने विधर्मियों के हाथों अपनी दुर्दशा करवाने से ज्यादा श्रेयस्कर जिंदा जल मरना समझा और दुनियाँ के इतिहास में १४००० तथा इसके समतुल्य स्त्रियों के एक साथ जिंदा जल मरने का अनेक बार इतिहास रच जौहर प्रथा को जन्म दे दिया, वे उच्च आत्मबल वाले आर्य मुट्ठिभर अंग्रेजों के सामने कब झुकने वाले थे परिणामत: समय-समय पर हमारे रणबांकुरों ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किये। अंग्रजों को अपना राज्य बचाना तो दूर अपने प्राण बचाना अनेक अवसरों पर दूभर प्रतित होने लगा। इस्लाम के रहबरदार कुरान की जेहादी आयतों से प्रेरित होकर तलवार के बल पर समूचे विश्व के इस्लामीकरण का सपना पाले आये थे, किंतु अंग्रेज शस्त्रों से सुसज्जित होने के साथ-साथ उसे अपनी धूर्तता पूर्ण नितियों पर गुमान था उनका, मुख्य उद्देश्य समूचे विश्व में अपना साम्राज्य स्थापित करना था बाकी बातें बाद की थी। उसके नीति नियन्ताओं ने चिन्तन कर निष्कर्ष निकाला कि वर्षों से लूटने-पीटने के बावजूद भारतवासियों के नहीं झुकने का कारण यह है कि इनका आत्मबल अत्यधिक उच्च है। ये अपने प्राणों को तो त्याग सकते हैं किंतु अपनी संस्कृति और राष्ट्र प्रेम को नहीं तथा उन्होंने पाया कि उनके उच्च आत्मबल की प्राप्ति का स्त्रोत इनकी गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था से प्राप्त त्यागवादी संस्कृति है। इसके पश्चात् उन्होंने कुटिलता पूर्वक लूटी-पिटी अवशेष रूप में आर्य संस्कृति को योजनाबद्ध तरीके से नष्ट-भ्रष्ट करने पर कार्य प्रारम्भ किया। इस हेतु उन्होंने उनके अधिन राज्यों के राज्याधिकारियों की संतानों को विदेशी शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों का प्रलोभन दिया। अपने द्वारा संचालित भोगवादी शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाया तथा उस शिक्षा प्रणाली से शिक्षित को ईस्ट इंडिया कम्पनी की नौकरी का प्रलोभन दिया। हमारे बीच के धूर्त जयचन्द-मिरजाफरों को खोजकर उन्हें प्रलोभन देकर शास्त्रों आदि में प्रक्षिप्तता तथा अर्थ के अनर्थ करवाकर हमारी संस्कृति को दूषित करने का कार्य किया।

हमारी संस्कृति के शिक्षा केन्द्रों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करते हुए उन्हें और अंग्रेजी शासन तथा उनकी नीतियों के विरूद्ध आवाज उठाने वालों को हर संभव हथकण्डे साम-दाम-दण्ड-भेद अपनाकर नष्ट करने का कार्य किया। शनै:-शनै: अंग्रेज अपनी योजना में सफल होते जा रहे थे। आर्य संस्कृति अंतिम श्वासे गीन रही थी किन्तु ईश्वरीय कृपा से देव दयानन्द का अवतरण हुआ। जिनका मन आर्यों की जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखकर अत्यंत द्रवित हुआ। उन्होंने आर्यों को सचेत किया **'कोई कितना ही कुछ करे किन्तु स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि और उत्तम होता है'** उन्होंने आर्यों की दयनीय दशा का कारण खोजा-वैदिक ज्ञान से आर्यों का विमुख होना इस हेतु उन्होंने संदेश दिया **'वेदों की और लौटो'**। अपने प्राणों की परवाह किये बगैर उन्होंने सत्य को सर्वोपरि धर्म स्थापित करते हुए उसके समर्थन में **'सत्यार्थ प्रकाश'** नामक अमरकृति की रचना की तथा धर्म-संस्कृति के नाम पर असत्य के विरूद्ध बिगुल बजा सुसुप्तावस्था को प्राप्त आर्य जाति जो दासता को अपनी नियती मान निष्प्राण हो चुकी थी को वैदिक ज्ञान का रक्त आत्मा में प्रवेश करा आत्मबल बढ़ाया। जिसका परिणाम असंख्य भारतीयों के सपूतों ने यह जाना की शरीर नाशवान है तथा आत्मा अमर है जो कभी मृत नहीं होती और हँसते-हँसते अल्पायु में जीवन को राष्ट्र की बलीवेदी पर न्यौछावर कर दिया। ऋषि के प्रदत्त सन्देशों का प्रभाव केवल इतना भर नहीं था कि देशवासी अंग्रेजी दासता के विरूद्ध खड़े हुए बल्की वे जान चुके थे हमारी दासता के कारण क्या हैं। परिणामत: वे धर्म, संस्कृति, भाषा और शिक्षा के शुद्धिकरण के लिये भी जागृत हो चुके थे जिसमें ऋषि द्वारा स्थापित संस्था आर्य समाज प्राण फूँक रही थी।

वेदों की और लौटो
-महर्षि दयानन्द सरस्वती

परिणाम लोगों का आत्मबल इतना ऊँचा हो रहा था कि देश, धर्म, संस्कृति, भाषा और शिक्षा के शुद्धिकरण के लिये आहूत होने वालों का सैलाब उमड़ रहा था। अंग्रेजों के पाँव उखड़ने लगे उसने अपनी फूट डालो आदि कुटिल नीतियों का उपयोग कर हमारे कर्णधारों जिनमें कुछ शूद्र स्वार्थी थे तो कुछ अंग्रेजों को मसिहा मानकर उनकी कृपा की झूठी आस संजोए हुए आवश्यकता से अधिक उदारता दिखाते हुए उनके द्वारा की गई भूलों ने देश को उस दो राहे पर लाकर खड़ा कर दिया जहाँ पर प्राणों की आहूति देकर देश, धर्म, संस्कृति, भाषा और शिक्षा के शुद्धिकरण के प्रयासों के कारण देश स्वतंत्र तो हुआ किंतु विभाजन का दंश भी साथ लाया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जिन प्रयासों को दृढ़ता प्राप्त होना थी, वे कहीं नेपथ्य में चले गये और आज कहने मात्र को हम स्वतंत्र हैं। छद्म धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमने हमारे विश्वगुरू के गौरव को नेस्तनाबूद कर दिया। स्वतंत्रता के ६७ वर्षों पश्चात् भी हालात यह है कि इस राष्ट्र का कोई धर्म नहीं राष्ट्र के नागरिक कहे जाने वाले धर्म के नाम पर स्वच्छन्द हैं। उनके मन में आये उसे अपनी इच्छानुसार ईश्वर मानें, अपनी मनमर्जी अनुसार चाहे जिसे धार्मिक पुस्तक मानें और मानें तो मानें नहीं मानें तो पृथक् अपना अलग-अलग ईश्वर अथवा चालीसा-कथा आदि पुस्तक बना लेवें और दस-बीस अपने जैसों को साथ लेकर अलग तथाकथित धर्म शुरु करने के लिये भी वे स्वच्छन्द हैं, उन्हें कोई रोकने वाला नहीं क्योंकि हम धर्म निरपेक्ष है। यह बात अलग है कि हमारे देश का अधिकांश वर्ग एक समय भूखा सोता हो तथा अपने पेट की आग बुझाने हेतु अपनी संतानों को तक बेच देता हो किन्तु पंथ-मजहबी-सम्प्रदाय अन्ध धार्मिक यात्राओं, मेलों-आयोजनों की व्यवस्थाओं हेतु खुले हाथों खर्च हेतु सरकार उतावली रहती है क्योंकि वोट का प्रश्न है। अज्ञानता के अन्धकार में जकड़े लोगों की मर्जी में आये तो मूक पशुओं को धर्म के नाम पर मारकर खा जाए, हमारा कानून उन्हें पूर्ण संरक्षण प्रदान करता है, उनकी मर्जी अनुसार वे यहाँ की मूल वैदिक धर्म-संस्कृति के सिद्धांतों के विपरित अपने मत को सब पर थोप उसका राष्ट्रीयकरण करने हेतु अपने तथाकथित धर्म के पालन हेतु स्वच्छन्द हैं। जब धर्म ही धर्म नहीं रहा तो संस्कृति, राष्ट्र, भाषा, शिक्षा की कल्पना करना मूर्खता है क्योंकि धर्म से ही तो मानव मनुष्य बनता है और जो श्रेष्ठ है वह एक मात्र होता है उसका अर्थात् श्रेष्ठता का विकल्प नहीं होता। उसके सिद्धांतों के विपरित निष्कृष्टता ही होगी।

शेष पृष्ठ १२ पर....

गतांक से आगे - वेदों की ऋषिकाएँ

विश्ववारा आत्रेयी

अत्रि के कुल में उत्पन्न विश्ववारा आत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी। उसका वेदों पर गम्भीर अध्ययन था। वह ऋग्वेद और यजुर्वेद पर समान अधिकार रखती थी। ऋग्वेद मण्डल ५ सूक्त २८ की वह दृष्टा है। इस सूक्त में ६ ऋचाएँ हैं। ऋचाओं में विज्ञान भरा हुआ है। सूक्त में कुल ६ मन्त्र हैं।

इस सूक्त की पहली ऋचा में बताया गया है कि जिस सूर्य को हम देखते हैं, वह कई तत्वों से मिलकर बना है और मुख्य रूप से विद्युत ऊर्जा पर आश्रित है। इसी के प्रभाव से दिन-रात होते हैं। यही दिशाओं का बोध कराने वाला है। मंत्र निम्न है-

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्प्रङ्ङुषसमुर्विया विभाति।
एति प्राची विंश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची। ।ऋ. ५.२८.१

पदार्थ - हे मनुष्यों! जो प्रज्वलित किया गया अग्नि प्रकाश में बिजलीरूप प्रकाश का आश्रय करता है और अनेक रूप वाले प्रकाश से प्रभातकाल के प्रति चलने वाला विशेष कर के शोभित होता है और संसार को प्रकट करने वाली, श्रेष्ठ गुणों को प्रशंसित करने वाली रात्रि और पूर्व दिशा दान और अंत्रादि पदार्थों के साथ प्राप्त होती है उस अग्नि को और विश्ववारा को आप लोग विशेष करके जानो।

दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि विद्वान् लोग भ्रमण करते हुए सत्य का प्रचार किया करें। तीसरे मन्त्र में कहा गया है स्त्री और पुरूष दोनों जितेन्द्रिय होकर बल प्राप्त करें तथा पुरूषार्थी होकर दुष्टों को जीतें। अब हम चौथे मन्त्र में राजा के कर्तव्य के विषय में देखते हैं।

समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम्।
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विंध्यसे।। ऋ. ५.२८.४

पदार्थ - हे राजन्! जो तुम बलिष्ठ और उत्तम हो प्रशस्वी हो और राज्य के पालन आदि व्यवहारों में प्रकाशित किये जाते हो उन प्रकाशमान और प्रकृष्ट बड़े आपके धन की मैं प्रशंसा करता हूँ।

विश्ववारा यजुर्वेद अध्याय ३३ मन्त्र संख्या १२ की भी ऋषिका है -

अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय तव द्यूम्नान्युत्तमानि सन्तु।
सं जास्पत्यँ सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभितिष्ठा महाँसि।।

पदार्थ - हे विद्वान् वा राजन्! आप बड़े सौभाग्य के अर्थ दुष्टगुणों और शत्रुओं के नाशक बल को अच्छे प्रकार उन्नत कीजिये जिससे आपके धन वा यश श्रेष्ठ हो। आप स्त्री-पुरूष के भाव को सुन्दर कीजिये और आप शत्रु बनने की इच्छा करते हुए मनुष्यों के तेजों को तिरस्कृत कीजिये।

वैदिक संसार माह दिसम्बर २०१३ में श्री रामगोपाल शास्त्री की जिज्ञासा पर लेख वेदों में नारी ऋषि कौन? पढ़ा। वे चाहते हैं कि कुछ ऋषिकाओं के विषय में लिखा जाये ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त हो सके। उनकी और उनके जैसे अनेक लोगों की जिज्ञासा शान्त करने के लिए मैं केवल पांच ऋषिकाओं के विषय में कुछ विवरण दे रहा हूँ, वैसे मैंने अपनी पुस्तक 'वेदों में शिक्षा व्यवस्था एवं वैदिक आचार्य' में भी इन ऋषिकाओं के विषय में पर्याप्त विवरण प्रस्तुत किया है।

-शिवनारायण उपाध्याय
दादाबाड़ी, कोटा (राज.)

जन्म दिवस पर विशेष प्रस्तुति

आर्यवीर सेनापति - दुर्गादास राठौर

- पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी
२५, सतीमार्ग, गोंदाचौकी, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९८२६५९२९७४

भारत के इतिहास में राजस्थान के अनेक आर्यवीर राजपूतों की गाथाएँ आज भी जन-जन में लोककथाओं के रूप में प्रचलित हैं। इन वीर आर्य योद्धाओं की जन्मस्थली होने के कारण इसने अपना नाम ''**राजस्थान**'' भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध कर लिया है। इस वीर प्रदाता भूमि पर आर्यवीर सेनापति दुर्गादास राठौर ने जन्म लेकर त्याग और बलिदान का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह भारतीय आर्यजगत् के वीर सेनानियों के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा।

वीर दुर्गादास के पिता श्री आसकरण जी जोधपुर के ग्राम सालवा के रहने वाले थे। उनका विवाह आर्य वीरांगना नेतकुंवर देवी से हुआ था। श्री आसकरण जी मारवाड़ के महाराज जसवन्त सिंह की सेना में सैनिक थे।

वीर दुर्गादास के जन्म के बारे में प्रमाणित साक्ष्यों के अभाव में प्रचलित अनेक लोककथाएँ हैं। श्री आसकरण जी ने अपनी धर्मपत्नि से सन्तान प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न किये मगर वे सारे प्रयत्न निष्फल रहे। किन्तु वे हताश नहीं हुए। एक दिन उनकी भेंट एक सन्त से हुई, उन्होंने सन्त की आवभगत की। सन्त ने प्रसन्न होकर उनसे पूछा आप की कितनी सन्तान हैं? तब आसकरण जी ने बताया कि वे सन्तानहीन हैं। सन्त ने उन्हें आश्वासन दिया, परमेश्वर पर विश्वास रखो, वह बड़ा दयालु है, वह तुम्हारे मन की अभिलाषा अवश्य पूरी करेगा। इतना कहकर वे चले गए। समय बीतता गया और कालान्तर में आर्य वीरांगना नेतकुंवर देवी गर्भवती हुई और उन्होंने १३ अगस्त १६३८ को आर्यवीर सेनापति दुर्गादास राठौर को जन्म दिया। उनके जन्म से परिवार में खुशियाँ छा गई। मिठाइयाँ बाँटी गईं, मंगल गीत गाए गए। बालक का नाम दुर्गादास रखा गया।

आर्य वीरांगना नेतकुंवर ने बचपन से ही वीर दुर्गादास के लालन-

पालन के साथ-साथ उन्हें सैन्य प्रशिक्षण देना शुरु कर दिया। माता नेतकुंवर भी रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसी युद्धकला में निपुण होने के साथ-साथ एक विदुषी, नीतिवती और धर्म परायण गृहणी थी। फलस्वरूप १७ वर्ष की आयु में ही आर्यवीर दुर्गादास ने असामान्य युद्धकौशल एवं शस्त्र संचालन में महारथ हासिल कर ली थी। आर्यवीर दुर्गादास की वीरता के चर्चे मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवन्त सिंह तक जा पहुँचे। उन्होंने आर्यवीर दुर्गादास को दरबार में आमंत्रित किया। उन्होंने आर्यवीर दुर्गादास के पराक्रम, बुद्धिमत्ता और असाधारण निर्भीकता से प्रभावित होकर उन्हें अपनी सेवा में नियुक्ति दे दी। कालान्तर आर्यवीर दुर्गादास ने नेतृत्व क्षमता एवं योग्यता के बल पर उन्नति करते हुए मारवाड़ राज्य के सेनापति का पद प्राप्त किया।

निःसन्तान राजा जसवन्त सिंह की मृत्यु २८ नवम्बर १६७८ में पेशावर में हो गई। मुगल बादशाह औरंगजेब ने मारवाड़ को अपने राज्य में मिलाने के लिए २५ दिसम्बर १६७८ को सामन्तों के नेतृत्व में एक विशाल सेना मारवाड़ भेजी। आर्यवीर दुर्गादास के नेतृत्व में राजपूतों ने मुगलों से संघर्ष किया।

महाराज जसवन्त सिंह की गर्भवती विधवा महारानी जसकुंवर और कछवाही ने क्रमशः अजीत सिंह और दलभंजन नामक राजकुमारों को जन्म दिया। वीर दुर्गादास ने रानियों और उनके पुत्रों को गुप्त रूप से अपने विश्वास पात्र सेना के अंगरक्षकों की देखभाल में रखा।

आर्यवीर दुर्गादास औरंगजेब के विरुद्ध लगभग ३० वर्षों तक गुरिल्ला युद्ध लड़ते रहे। लम्बे संघर्ष के बाद विजय श्री प्राप्त कर आर्य शिरोमणि दुर्गादास राठौर ने मारवाड़ राज्य के सिंहासन पर युवराज अजीत सिंह को बैठाकर स्वयं संसार से विरक्त होकर उज्जैन (म.प्र.) के लिए प्रस्थान किया। उज्जैन में पवित्र क्षिप्रा नदी के तट पर निवास करते हुए लगभग ८० वर्ष की आयु में २२ नवम्बर १७१८ को आर्यवीर दुर्गादास ने संसार को त्याग दिया।

आर्यवीर शिरोमणि दुर्गादास की समाधि (छत्री) आज भी क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यह लाल बलुआ पत्थर से निर्मित राजस्थानी स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना है। समाधि स्थल पर पर्यटकों का आना निरन्तर बना रहता है। यह छत्री पुरातत्व विभाग के द्वारा संरक्षित राष्ट्रीय धरोहर है। ●

छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु

राष्ट्रसंत स्वामी समर्थ रामदास!!

–स्वामी उमाशंकर सांख्यायन
आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान आर्यवर्त, शैलगी
सोलापुर (महा.), चलभाष – ०८०५५४४५८४७

सूर्यवंशीय रघुकुल महापुरूष अयोध्यापति श्री राम जी की भार्या महारानी सीता जी के पुत्र कुश के वंशज बलामी राज्य के युवराज महाप्रतापी योद्धा मेवाड़ साम्राज्य का संस्थापक महाराणा गुह्यादित्य सिंहदेव जी के वंशज मराठा सेनापति अभयसिंह शाहाजी राजे भोसले जी की धर्मपत्नी यज्ञदेवी उर्फ जीजाबाई का सुपुत्र हिन्दवी स्वराज्य का संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के साम्राज्य के राजगूरू राष्ट्रसंत स्वामी समर्थ रामदास जी का वास्तविक नाम नारायणपंत था। इनकी माता शांतादेवी रानुबाई नाम से विख्यात थी। पिता गंगाधरपंत ठोसर, गोत्र-विश्वामित्र स्मार्त ऋग्वेदी ब्राह्मण थे।

स्वामी समर्थ रामदास जी का जन्म तत्कालीन खानदेश में वेरूळ जनपद के दौलताबाद सुबे में हुआ, गाँव का नाम जम्बु था आज जांब गाँव कहते हैं, जो वर्तमान में जालना जिले में है।

स्वामी जी का जन्म संवत् १६२७ में हुआ। उन्हें आयु के सातवें साल में वैराग्य प्राप्त हुआ। उनकी साधना देख, उनकी माता ने उनके विवाह की योजना बनाई। विवाह मण्डप में से सावधान शब्द पण्डित द्वारा उच्चारे गये, शब्द सुनते ही आयु के दसवें वर्ष में पलायन कर गये। रामदास के रूप में पंचवटी में प्रकट होकर वहाँ साधना करने लगे, प्रतिदिन पाँच द्वार पर भीक्षा मांग कर उदर निर्वाह करते रहे जय-जय रघुवीर समर्थ कहकर भीक्षा मांगते थे। केवल लंगोट पर रहते थे। कंधे पर झोला हाथों में डंडा रखते थे।

समर्थ रामदास जी ने सम्पूर्ण महाबल देश का भ्रमण कर के गाँव-गाँव लोगों को ज्ञानार्जन एवं बलोपासना की सीख दी तथा महाबल देश को प्रथम महाराष्ट्र कहा।

स्वराज्य के लिए भूमि को उपजाऊ बनाने का प्रयत्न पिता अभयसिंह शाहा जी राजा द्वारा समर्थ रामदास स्वामी जी ने करवाया, माता यज्ञदेवी (जीजा) द्वारा पुत्र शिवबा पर गर्भ में ही संस्कार करवाये।

सम्पूर्ण भारत की दो बार भ्रमण कर के छत्रपति शिवाजी को स्वामी समर्थ जी ने उपदेश दिया, **मराठा जितना है, उसे एक करो, महाराष्ट्र में वैदिक धर्म की स्थापना करो तथा औरंग्या को कबर में गाड़ो। वहीं महाराष्ट्र प्रजा को कहा-देखो! शिवाजी का प्रताप, उनका साथ दो वह शीघ्रताशीघ्र स्वराज्य महाराष्ट्र खड़ा करेगा।**

छत्रपति शिवाजी को स्वराज्य निर्माण कराने में प्रजाजनों का साथ मिला, उसे संत तुकाराम-रामदास आदि संतजनों का उपदेश भी काम में आया। स्वामी जी का सन्यासियों का एक सेनादल तथा जासूसी दल था। हर सप्ताह शिवाजी महाराज रामदास जी को मिलने जाते थे। उनकी भेट शिवथर हाल में होती थी।

समर्थ रामदास जी का ग्रंथराज, दासबोध एवं मन के श्लोक प्रजाजनों को जागृत, प्रेरित, संगठित करने में सार्थक रहे।

छत्रपति शिवाजी की मृत्यु संवत् १७६७ में होने पर स्वामी समर्थ रामदास जी ने संवत् १७३८ में आयु के एक सौ ग्यारहवे वर्ष में सज्जनगढ़ पर समाधी ली थी। ●

स्वामी दयानन्द सरस्वती और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

अब हम स्वामी दयानन्द सरस्वती के गणित विषय में किये गये कार्य का अध्ययन करेंगे। गणित के विषय में तो गत सदी में लगभग सभी वैज्ञानिकों ने भारत की देन को स्वीकार किया है। हम यहाँ केवल वैज्ञानिकों के विचार दे रहे हैं:-

Laplace said - How greatful we should be to the Hindus who discoverd the great decimal system that did not occur to the minds of such mighty mathematicians as Archimedes and apollonius.

Albert Einstein who is regarded the greatest scientist of the twentieth century said - we owe a lot to Indians who taught us how to count without which no scientific discovery could have been made.

Prof. mecdonell's said - In science too the debt of Europe to India has been considerable there is in the first place the great fact that the Indians invented the numerical figures used all over the world. The influence which the decimal system of reckoning dependent on those figure has had not only mathematics but on the civilization in general can hardly be overestimated. During the eighth and ninth centuries the Indians became the teachers in arithmatic and algebra of the Arabs and through them of the nations of the west.

एक अंग्रेज जो वैज्ञानिक व इतिहासज्ञ प्रो. जे.डी. कर्नल, जिन्हें सन् १९६५ तथा १९७२ ई. में नोबल पुरस्कार मिले हैं, ने **Science in History** नामक अपनी पुस्तक में लिखा है-There was also, and this is of greatest importance for the whole world, a new development of science particularly mathematics and astronomy associated with the names of two, Aryabhatta and Varahamihar in the fifth century and with Brahma gupta in the seventh. A decisive new development was made there about this time. The perfection of a number system with place value notation and a zero. the Arabs also incorporated the work of a series of Indian mathematicians on the means of dealing with unknown quantities which we call algebra.

आजकल वैज्ञानिक अपनी खोजों को गणित के सूत्रों में ही देना पसन्द करते हैं। किसी वैज्ञानिक खोज को जब तक गणितीय भाषा में व्यक्त नहीं किया जाता तब तक वैज्ञानिक उस खोज को कोई महत्व नहीं देते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा यजुर्वेद के भाष्य में गणित की चार मुख्य प्राथमिक विधाओं, रेखा गणित एवं बीजगणित में लिखा है। हम उन्हीं के आधार पर विचार कर रहे हैं-

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽएकविंशतिश्च मऽएकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मऽएकत्रिंशच्च मऽएकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यज्ञेन कल्पताम्।-यजुर्वेद १८.२४

प्रथम पक्ष

पदार्थ-(यज्ञेन) मेल करने अर्थात् योग करने से **(मे)** मेरी **(एका)** एक संख्या **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(तिस्रः)** तीन संख्या **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(तिस्रः)** तीन **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(पंच)** पाँच **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(पंच)** पाँच **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(सप्त)** सात **(च)** और फिर **(मे)** मेरी **(सप्त)** सात **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(नव)** नौ **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(नव)** नौ **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(एकादश)** ग्यारह **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(एकादश)** ग्यारह **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(त्रयोदश)** तेरह **(च)** और **(मे)** मेरी **(त्रयोदश)** तेरह **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(पँचदश)** पन्द्रह **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(पँचदश)** पन्द्रह **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(सप्तदश)** सत्रह **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(सप्तदश)** सत्रह **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(नवदश)** उन्नीस **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(नवदश)** उन्नीस **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(एकविशंति)** इक्कीस **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(एकविशंति)** इक्कीस **(च)** और दो **(मे)** मेरी **(त्रयोविंशति)** तेईस **(च)** फिर **(मे)** मेरी **(त्रयोविंशति)** तेईस

ऋषि जन्म स्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्म स्थान) का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष १०००/- रूपये देकर वार्षिक सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाएगी और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाएगा। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। १०००० सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-
सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)
शिवराजवती आर्या (उप-प्रधान) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

(च) और दो (मे) मेरी (**पंचविंशति**) पच्चीस (च) फिर (मे) मेरी (**पंचविंशति**) पच्चीस (च) और दो (मे) मेरी (**सप्तविंशति**) सत्ताईस (च) फिर (मे) मेरी (**सप्तविंशति**) सत्ताईस (च) और दो (मे) मेरी (**नवविंशति**) उन्तीस (च) फिर (मे) मेरी (**नवविंशति**) उन्तीस (च) और दो (मे) मेरी (**एकत्रिंशत**) इकतीस (च) फिर (मे) मेरी (**एकत्रिंशत**) इकतीस (च) और दो (मे) मेरी (**त्रयस्त्रिंशत्**) तेंतीस (च) और आगे भी इसी प्रकार संख्या (**कल्पताम्**) समर्थ हों। यह एक योग पक्ष है।

द्वितीय पक्ष

(**यज्ञेन**) योग के विपरीत दान रूप वियोग मार्ग से विपरीत संग्रहित (च) और संख्या दो के वियोग से अर्थात् अन्तर से (मे) मेरी (**कल्पन्ताम्**) समर्थ हों कैसे (मे) मेरी (**त्रयस्त्रिंशत्**) तेंतीस संख्या (च) दो के देने अर्थात् वियोग से (मे) मेरी (**एकत्रिंशत्**) इकतीस (च) फिर (मे) मेरी (**एकत्रिंशत्**) इकतीस (च) दो के वियोग से (मे) मेरी (**नवविंशति**) उनतीस (च) फिर (मे) मेरी (**नवविंशति**) उन्तीस (च) दो के वियोग से (मे) मेरी (**सप्तविंशति**) सत्ताईस समर्थ हों। ऐसे ही सब संख्याओं में जानना चाहिए। यह वियोग का दूसरा पक्ष है।

तृतीय पक्ष

(मे) मेरी (**एका**) एक संख्या (च) और (मे) मेरी (**तिस्रः**) तीन संख्या (च) परस्पर गुणी (मे) मेरी (**तिस्रः**) तीन संख्या (च) और (मे) मेरी (**पंच**) पाँच संख्या (च) परस्पर गुणित (मे) मेरी (**पंच**) पाँच संख्या (च) और (मे) मेरी (**सप्त**) सात संख्या (च) परस्पर गुणित (मे) मेरी (**सप्त**) सात संख्या (च) और (मे) मेरी (**नव**) नव संख्या (च) परस्पर गुणित (मे) मेरी (**नव**) नव संख्या (च) और (मे) मेरी (**एकादश**) ग्यारह संख्या (च) परस्पर गुणित इस प्रकार अन्य संख्या (**यज्ञेन**) उक्त बार-बार योग अर्थात् गुणन से (**कल्पन्ताम्**) समर्थ हो। यह गुणन विषय में तीसरा पक्ष है।

भावार्थ – इस मन्त्र में (यज्ञेन) इस पद में जोड़ना, घटाना लिए जाते हैं, क्योंकि जो यज धातु का संगतिकरण अर्थ है उससे संग कर देना अर्थात् किसी संख्या को किसी संख्या से योग कर देना या यज धातु का जो दान अर्थ है उससे ऐसी संभावना करनी चाहिए कि किसी संख्या का दान अर्थात् व्यय करना, निकाल डालना यही अन्तर है। इस प्रकार गुणन, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भाग जाति, प्रभाग जाति आदि जो गणित के भेद हैं वे योग और अन्तर से ही उत्पन्न होते हैं क्योंकि किसी संख्या को किसी संख्या से एक बार मिला दें तो योग कहाता है जैसे २+४=६ अर्थात् २ में ४ जोड़ें तो ६ होते हैं। ऐसे यदि बार-बार संख्या में संख्या जोड़ें तो उसको गुणन कहते हैं जैसे- २x४=8 अर्थात् २ को ४ बार अलग-अलग जोड़ें वा २ को ४ से गुणे ८ होते हैं। ऐसे ही ४ को ४ से चौगुना कर दिया तो ४ का वर्ग १६ हुए। ऐसे ही अन्तर से भाग, वर्गमूल, घनमूल आदि निष्पन्न होते हैं। अर्थात् किसी संख्या में किसी संख्या को जोड़ देवें वा किसी प्रकारान्तर से घटा देवें, इसी योग का वियोग से बुद्धिमानों को यथामति कल्पना से व्यक्त, अव्यक्त, अंकगणित और बीजगणित आदि समस्त गणित क्रिया उत्पन्न होती है। इस कारण मंत्र में दो के योग से उत्तरोत्तर संख्या वा दो के वियोग से पूर्व-पूर्व संख्या अच्छे प्रकार दिखलाई है। वैसे गुणन का भी कुछ प्रकार दिखलाया है। यह जानना चाहिए।

सब अंको के गणित विषय को निम्न मंत्र में कहा गया है-

चतस्रश्च मेऽष्टौच मेऽष्टौच मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च मे द्वात्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टचत्वारिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। यजु. १८.२५

प्रथम पक्ष

पदार्थ – (**यज्ञेन**) मेल करने अर्थात् योग करने में (मे) मेरी (**चतस्रः**) चार संख्या (च) और चार संख्या (मे) मेरी (**अष्टौ**) आठ संख्या (च) फिर (मे) मेरी (**अष्टौ**) आठ संख्या (च) और चार (मे) मेरी (**द्वादश**) बारह (च) फिर (मे) मेरी (**द्वादश**) बारह (च) और चार (मे) मेरी (**षोडश**) सोलह (च) फिर (मे) मेरी (**षोडश**) सोलह (च) और चार (मे) मेरी (**विंशति**) बीस (च) फिर (मे) मेरी (**विंशति**) बीस (च) और चार (मे) मेरी (**चतुर्विंशति**) चौबीस (च) फिर (मे) मेरी (**चतुर्विंशति**) चौबीस (च) और चार (मे) मेरी (**अष्टाविंशति**) अट्ठाईस (च) फिर (मे) मेरी (**अष्टाविंशति**) अट्ठाईस (च) और चार (मे) मेरी (**द्वात्रिंशत्**) बत्तीस (च) फिर (**द्वात्रिंशत्**) बत्तीस (च) और चार (मे) मेरी (**षट्त्रिंशत्**) छत्तीस (च) फिर (**षट्त्रिंशत्**) छत्तीस (च) और चार (मे) मेरी (**चत्वारिंशत्**) चालीस (च) और (मे) मेरी (**चतुश्चत्वारिंशत्**) चवालीस (च) फिर (मे) मेरी (**चतुश्चत्वारिंशत्**) चवालीस (च) और चार (मे) मेरी (**अष्टचत्वारिंशत्**) अड़तालीस (च) और (मे) मेरी (**अष्टाचत्वारिंशत्**) अड़तालीस (च) और चार आगे भी उक्त विधि से संख्या (**कल्पन्ताम्**) समर्थ हों। यह योग पक्ष है।

द्वितीय पक्ष

(**यज्ञेन**) योग से विपरीत दान रूप वियोग मार्ग से विपरीत संग्रहीत (च) और संख्या चार के वियोग से जैसे (मे) मेरी (**कल्पन्ताम्**) संख्या समर्थ हों वैसे (मे) मेरी (**अष्टचत्वारिंशत्**) अड़तालीस (च) चार के वियोग से (मे) मेरी (**चतुश्चत्वारिंशत्**) चवालिस (च) चार के वियोग से (मे) मेरी (**चत्वारिंशत्**) चालीस (च) फिर (मे) मेरी (**चत्वारिंशत्**) चालीस (च) चार के वियोग से (मे) मेरी (**षट्त्रिंशत्**) छत्तीस (च) फिर (मे) मेरी (**षट्त्रिंशत्**) छत्तीस (च) चार के वियोग से (मे) मेरी (**द्वात्रिंशत्**) बतीस इस प्रकार सब संख्याओं में जानना चाहिए। यह वियोग से दूसरा पक्ष है।

तृतीय पक्ष

(मे) मेरी (**चतस्रः**) चार संख्या (च) और (मे) मेरी (**अष्टौ**) आठ (च) परस्पर गुणी (मे) मेरी (**अष्टौ**) आठ (च) और (मे) मेरी (**द्वादश**) बारह (च) परस्पर गुणी (मे) मेरी (**द्वादश**) बारह (च) और (मे) मेरी (**षोडश**) सोलह (च) परस्पर गुणी (मे) मेरी (**षोडश**) सोलह (च) और (मे) मेरी (**विंशति**) बीस (च) परस्पर गुणी-इस प्रकार आगे भी (**यज्ञेन**) उक्त बार-बार गुणन से (**कल्पन्ताम्**) समर्थ हों। यह गुणन के विषय में तीसरा पक्ष है।

भावार्थ – इस मन्त्र में चार के योग से वा वियोग से चौथी संख्या और सम संख्याओं का भेद जानकर बुद्धि के अनुकूल कल्पना से सब गणित विद्या जाननी चाहिए। **शेष आगामी अंक में.....**

''स्वर्ग कामो यजेत'' स्वर्ग की कामना वाले यज्ञ करें - शतपथ ब्राह्मण

यज्ञ क्या और किसलिए?

- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़,
जिला-सांबरकाठा (गुजरात)
चलभाष - ०९०९९७००३८५

समस्त विश्व के समस्त मनुष्यों की समस्त समस्याओं का एक मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण

साम्प्रत काल में पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर ने मात्र हवा ही नहीं अपितु पानी, पृथ्वी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश आदि समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों को अपनी चंगुल में फँसा लिया है। दूषित भौतिक पदार्थों से उत्पन्न अन्न, वनस्पति, शाक, कन्द, मूल, फल, फूल, औषध आदि खाद्य पदार्थ दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्यान्नों के उपयोग से मनुष्य के शरीर में बनने वाली रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य-रज आदि धातुएँ भी अशुद्ध, निकृष्ट तथा निर्बल बन चुकी हैं। इन तमाम धातुओं, रसों के आधार से काम करने वाले मन, बुद्धि, आत्मा भी दोषयुक्त विकृत बन गए हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्यों के विचार, वाणी तथा व्यवहार दोषयुक्त बन गए हैं। इसका अन्तिम प्रभाव यह है कि आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, सद्भाव, संगठन, त्याग, धैर्य, क्षमा, सहनशक्ति, सेवा, दया, निष्कामता की भावना समाप्तप्राय: हो गई है और इससे उलटा परस्पर-स्वार्थ, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, संशय, चिन्ता, विगठन, अन्याय, छल-कपट, असहिष्णुता, क्रूरता, अभिमान, उच्छृंखलता आदि बढ़ रहे हैं।

आओ इन समस्त बुराईयों के मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाराक्षस को नष्ट करने वाले अमोघ शस्त्र यज्ञ (हवन) का प्रयोग करें।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारणों के विषय में क्या आप जानते हैं?

- सामान्य रूप से हवा में २१% ऑक्सीजन, ७८% नाईट्रोजन, ०.०३% कार्बन डाय ऑक्साईड तथा लगभग १% अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदूषण होता है।
- ६०% वायु प्रदूषण मोटर वाहनों से और ३५% बड़े तथा मध्यम उद्योगों से फैलाता है।
- एक मोटर वाहन ९७० कि.मी. की यात्रा में उतना ऑक्सीजन फूँक डालता है जितना कि एक व्यक्ति को एक वर्ष के लिए आवश्यक होता है।
- किसी भी स्वचालित वाहन में एक गेलन पेट्रोल/डीजल के दहन से तीन पाऊंड नाइट्रोजन ऑक्साईड वायु निकलती है जो कि ५ से २० लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है।
- प्राकृतिक सन्तुलन के लिए पृथ्वी पर भूमि के ३३% भाग पर वन होना अति आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान में मात्र १९% भूमि पर वन है।
- दिल्ली जैसे महानगरों में लोग जाने-अनजाने प्रति दिन २० सिगरेटों के धुएँ में जितना विष होता है उतना विष प्रदूषित वायु के कारण अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं।
- मनुष्य एक दिन में औसतन २१६०० बार श्वसन क्रिया करता है और इस क्रिया में १६ कि.ग्रा. ऑक्सीजन आवश्यक होता है।
- एक व्यक्ति एक वर्ष में १२ टन कार्बन डाय ऑक्साईड उच्छ्वास से वातावरण में बाहर फैंकता है।
- एक बड़ा पूर्ण विकसित वृक्ष एक मनुष्य के सम्पूर्ण आयुष्य के लिए आवश्यक होती है उतनी मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है। और वह हवा, पानी, ध्वनि के प्रदूषण तथा धूल को रोकता है।
- वायु प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से रहित, अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।
- प्रदूषण के कारण पौधों की कार्बन डायोक्साईड शोषण करने की तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द हो रही है।
- पिछले कई वर्षों से फल, सब्जी, खाद्यान्न आदि का परीक्षण करने पर पता चला है कि इन सबमें जहरीले कीटनाशक रसायनों के अंश विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक पाया जाता है।
- पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलने वाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन वायु की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है। यदि इसी गति से छिद्र होते रहेंगे तो पैराबैंगनी किरणों (Ultraviolet Rays) को रोकना संभव नहीं रहेगा और इसका परिणाम यह होगा कि लोग कैन्सर, आँखों में ग्रन्थि आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त होंगे तथा वृक्ष वनस्पति भी प्रभावित होंगे।
- बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियन्त्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद ऐसी स्थित बन जाएगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राणवायु का सिलिंडर बांधकर रखना होगा जिससे शुद्ध वायु ली जा सके। जैसे आज अशुद्ध जल के कारण खनिज जल (Mineral Water) की बोतल का तथा नाक को ढकने के लिए कपड़े की पट्टी (Mask) का प्रचलन हो गया है।
- प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरूद्ध यदि सामुहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जाएगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा।

उपाय.... समाधान.... आशा....

- रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआँ परमाणु विकिरण के

प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया 'यज्ञ' के नाम से जानी जाती है।

- विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।

-एम.मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएण्ट हिस्ट्री ऑफ मेडिसन)

- शक्कर के दहन से उत्पन्न धुएँ में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं। **-वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट (फ्रांस)**
- केंसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं। **-डॉ. कर्नल किंग**
- मुनक्का, किशमिश, मखाणे आदि से हवन करने से सन्निपात ज्वर, टाईफॉइड के कीटाणु मात्र आधे घण्टे में नष्ट हो जाते हैं। **-डॉ. डीलिट**
- ३६ X २२' X १०' = लगभग ८००० वर्ग फीट के एक हॉल में एक समय हवन करने से कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदुषण का ७७.५% भाग नष्ट हो गया, इतना ही नहीं इस प्रयोग से ९६% हानिकारक कीटाणु नष्ट हो गए। **-फर्ग्युसन कॉलेज पूणे के जीवाणु शास्त्रियों का प्रयोग**
- अमेरिका, चिली, पॉलैण्ड, जर्मनी आदि देशों में अग्निहोत्र (हवन) की लोकप्रियता बढ़ रही है।
- विश्व के अनेक देशों में रोगों को दूर करने के लिए, प्रदूषण को दूर करने के लिए तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए यज्ञ चिकित्सा (Homa Therapy) का प्रचलन बढ़ रहा है।

यज्ञ के विषय में वैदिक, शास्त्रीय प्रमाण

१. समिधाओं से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करके उसे घृत से प्रबुद्ध करो और उस प्रदीप्त अग्नि में उत्तम सामग्री की आहुति दो।

२. जब अग्नि में सुगंधित पदार्थों का हवन होता है तथा शरीर और औषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है, उन शुद्ध पदार्थों के भोग से मनुष्यों के विद्या, ज्ञान और बल की वृद्धि होती है। **-यजुर्वेद १-१**

३. जो यज्ञ से शुद्ध किये गये अन्न, जल, वायु आदि पदार्थ है वे सब की शुद्धि करके बल, पराक्रम तथा दीर्घायु के लिए समर्थ होते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को यज्ञ कर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए। **-यजुर्वेद १-२०**

४. जैसी यज्ञ करने से वायु और जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी अन्य प्रकार से नहीं हो सकती। **-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

५. यज्ञकुण्ड में डाली हुई सामग्री दुःख देने वाले रोगों को ऐसे बहाकर ले जाती है जैसे नदी झाग को बहाकर ले जाती है। **-अथर्ववेद १-८-१**

६. गाय के घी के साथ हवन की सामग्री यज्ञ कुण्ड में जलकर विशेष शक्तिशाली बनकर दूषित वायुमंडल के ९९ प्रकार के दुर्गुणों को सरलता से नष्ट कर देती है। **-ऋग्वेद १-८४-१३**

७. शुभ दिनों का सम्पादन यज्ञ के द्वारा किया जाता है। **-यजुर्वेद १९-६**

८. अन्तरिक्ष में जो विविध प्रकार के वायु तत्वों का स्तर है उसका बिगाड़ मत करो, नष्ट मत करो ये तत्व हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। **यजुर्वेद ५-४३** ●

पृ. ०७ का शेष **संपादकीय....**

ऐसे ही कुछ कारणों से संसार को वेदज्ञान से समृद्ध कर देवताओं का निर्माण करने वाली भाषा संस्कृत से संसार का व्यक्ति तो दूर विश्वगुरू का दायित्व निर्वाह करने वाला यहाँ का निवासी ही अनभिज्ञ है तो वेद का ज्ञान कैसे सर्वत्र फैलेगा? संस्कृत तक पहुँचने के पहले हमारे मनीषियों ने मध्यम् मार्ग निकाला और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया किन्तु राष्ट्रभाषा की जितनी दुर्दशा स्वतंत्रता पश्चात् इन वर्षों में हुई है संभवतया दासता के काल में भी न हुई हो।

पिछले वर्ष लोक सेवा आयोग द्वारा १०२२ प्रतिभागियों का चयन किया गया जिसमें मात्र २६ प्रतिभागी हिन्दी भाषी थे। वर्तमान में सिविल सर्विसेज परीक्षा (सीसैट) बाबद चल रहा विवाद अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व का ही तो विवाद है। आज राष्ट्र भाषा होते हुए भी न्यायालयों, उच्च पदों की भर्ती परिक्षाओं, शासकीय कार्यों, उच्चशिक्षा आदि में अंग्रेजी की सत्ता स्थापित है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल-कॉलेजों की संख्या में दिन-दूनी, रात-चौगुनी वृद्धि हो रही है। जहाँ हजारों नहीं लाखों रूपयों का निवेश कर नोट प्रकाशित करने वाली मशीन बनाई जा रही है तो बताओ क्या हमारे रणबाकुरों ने इसी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया था? जब इस तरह की अव्यवस्थाएँ बढ़ेंगी तो धनवान-निर्धन वर्ग की खाई तो और बढ़ेगी ही। हमारा विरोध अंग्रेजी भाषा के ज्ञान अर्जित करने की नहीं है, हमारी चिन्ता मात्र हमारी भाषा से हमारे विमुख होने की है क्योंकी **हमारी भाषा से विमुख व्यक्ति हमारी धर्म-संस्कृति के सिद्धांतों के उत्कृष्टतम् मूल्यों को कैसे समझ पायेगा और जब ऐसा व्यक्ति देश का नीति निर्धारक अधिकारी तथा नेता बनेगा तो बताओ वह किस दिशा में कार्य करेगा?** यही कारण है कि ग्लासगो में ३ अगस्त २०१४ को सम्पन्न कॉमनवेल्थ गेम्स में राष्ट्र का गौरव बढ़ाने गये देश के खिलाड़ियों के पुरूषार्थ पर दो अधिकारियों की शराब पीकर वाहन चलाने और दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तारी ने पानी फेरकर विश्वगुरू की गरिमा वाले भारत की वर्तमान स्थिति को उजागर कर समूचे राष्ट्र को कलंकित किया है।

आज कानूनों पर कानून बनाये तथा कड़े किये जा रहे हैं। नेता-बुद्धिजीवी, अधिकारी सब पशोपेश में है कि अपराध कम होने के बावजूद बढ़ रहे हैं। आज व्यक्ति अपने घर की चार दिवारी में भी सुरक्षित नहीं है। भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व अशांति-हाहाकार की भेंट चढ़ रहा है।

कारण खोजेंगे तो पायेंगे मनुष्य मनुष्यवत् व्यवहार नहीं कर रहा वह प्रकृति का मित्र नहीं शत्रु बन रहा है। इसका भी कारण यह है कि परमपिता परमात्मा ने मनुष्यों को इस संसार में रहने का ज्ञान विधि और निषेध रूप में प्रदान किया, जिसे वेद ज्ञान के रूप में जाना जाता है उससे विमुख हो जाना है और उससे प्रीति नहीं होने का कारण मनुष्यों को प्राप्त हो रही शिक्षा व्यवस्था में उसका समावेश नहीं होना है।

अतः देश की स्वतंत्रता के ६८वें स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त और राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस १४ सितम्बर की बेला में देश के नीति निर्धारकों और धर्म-संस्कृति राष्ट्रनिष्ठों से आह्वान् है कि ऋषि के पावन सन्देश **'वेदों की ओर लौटो'** को आत्मसात करो और सच्चे अर्थों में धार्मिक, भाषायी, शैक्षणिक स्वतंत्रता प्राप्त कर विश्वगुरू का दायित्व निर्वाह कर सुख-शांति के प्रदाता बनों। ●

महर्षि यास्क द्वारा सोम ऋचा की वैज्ञानिक व्याख्या

- कृपालसिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ (उ.प्र.)-९९२७८८७७८

धन्य हैं वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने सर्वप्रथम वेदों के वैज्ञानिक भाष्य प्रस्तुत किये। ये ही भविष्य में भारतवर्ष की सर्वोच्चता का आधार बनेगें।

ब्रह्मा देवानां पदवी: कवीनामृषिर्विप्रणां महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।।

ब्रह्मा देवानामिति। एष हि ब्रह्मा भवति देवानां देवन कर्मणामादित्यरश्मीनाम्। **पदवी: कवीनामिति**। एष हि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामादित्यरश्मीनाम्। **ऋषिविप्राणामिति**। एष हि ऋषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। **महिषो मृगाणामिति**। एष हि महान् भवति मृगाणानां मार्गणकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। **श्येनो गृध्राणामिति**। श्येन आदित्यो भवति श्यायतेगतिकर्मणः। गृध्र आदित्यो भवति गृध्यते स्थानकर्मणः, यत एतस्मिंस्तिष्ठति। **स्वधितिर्वनानामिति**। एष हि स्वयं कर्मणायादित्यो धत्ते वनानां वननकर्मणामादित्यरश्मीनाम्। **सोमः पवित्रमत्येति रेभन्निति**। एष हि पवित्र रश्मीनामत्येति स्तूयमानः। एष एवैतत्सर्वमक्षरम्। इत्यधिदैवतम्।

१. ब्रह्मा देवानाम् - सोम अर्थात् सौर ऊर्जा को ब्रह्मा कहते हैं। क्यों? आदित्य रश्मियों के देवन कर्म के कारण सूर्यरश्मियाँ पदार्थों का निर्माण करती है। सोचिए! गन्ने के पौधे में चीनी का निर्माण कैसे होता है? गन्ने का पौधा मिट्टी से विभिन्न तत्वों को खींचता है तथा पत्तियों में आदित्यरश्मियों की विद्यमानता में भोजन का निर्माण करता है, जो समय के साथ-साथ मधुरता को प्राप्त करता है। पौधों के अतिरिक्त भी सूर्य रश्मियाँ पृथ्वी पर मण्डन, विखण्डन द्वारा विभिन्न पदार्थों का निर्माण करती हैं। इसलिए सोम अर्थात् सूर्य रश्मियों को **ब्रह्मा देवानाम्** कहा है। निर्माण कार्य करने के कारण सोम अर्थात् सौर ऊर्जा ब्रह्मा है।

२. पदवी: कवीनाम् - जिस प्रकार कवि विभिन्न पदों का चयन एवं संयोग करके काव्य की रचना करता है। उसी प्रकार आदित्य रश्मियाँ पदार्थों का चयन एवं संयोग करती हैं। **''कवीयमानानामादित्यरश्मीनाम्''** अर्थात् रश्मियाँ कविवत् आचरण से प्राकृतिक पदार्थों का निर्माण करती रहती हैं। पेड़-पौधे भूमि से उपयुक्त पदार्थों का ही चयन करते हैं तथा अपने स्वभाव के अनुकूल रस बनाते हैं। यदि सूर्य रश्मियों में ये शक्ति न होती तो करेला मीठा तथा गन्ना कड़वा हो जाता। सूर्य रश्मियों के कारण ही पौधा इन गुणों का प्रयोग करता है।

३. ऋषि विप्राणाम् - व्यापक होने के गुण के कारण आदित्य रश्मियों को विप्र कहते हैं। व्यापन अर्थात् फैलने का गुण अन्य तत्वों में भी पाया जाता है जैसे इन्द्र तथा अग्नि। लेकिन रश्मियों में ये गुण सबसे अधिक पाया जाता है। इसलिए विप्रो में भी ऋषि कहा जाता है। ऋषि महान् वैज्ञानिक को कहते हैं। ऋषि व्यापन का सिरमौर होता है। सूर्य की सात रंग की रश्मियों को सप्त ऋषि कहते हैं।

४. महिषो मृगाणाम् - आदित्य रश्मियों के मार्गण कर्म के कारण **महिषो मृगाणाम्** कहा है। मार्गण कर्म का अर्थ है कि आदित्य रश्मियाँ नियमानुसार एक निश्चित सरल मार्ग का अनुसरण करती हैं। आदित्य रश्मियाँ इस गुण में महीष: अर्थात् महान् हैं। आदित्य रश्मियाँ एक सरल रेखा में चलती हैं। लैंस का प्रयोग कर इनको एक बिन्दु पर एकत्रित किया जा सकता है तथा एकत्रित प्रकाश पुंज को फैलाया जा सकता है। यदि आदित्य रश्मियों में मार्गण का गुण न हो तो सारी दूरबीन तथा सूक्ष्मदर्शी यन्त्र बेकार हो जायेगें। जहाँ धूप होनी चाहिए वहाँ अन्धेरा तथा जहाँ अन्धेरा होना चाहिए वहाँ धूप हो जायेगी। सारा Optics प्रकाश के मार्ग पर ही आधारित है।

५. श्येनो गृध्राणाम् - आदित्य रश्मियाँ स्थान कर्म गुण के कारण गृध्र कही जाती हैं तथा गति कर्म के कारण श्येन कही जाती हैं। यदि आदित्य

शेष पृष्ठ २७ पर....

उद्धारक सोम

अयं विप्राय दाशुषे वाजां इयर्ति गोमतः।
अयं सप्तभ्य आवरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिषद्विवक्षसे।।

ऋ १०/२५/११

शब्दार्थ

अयं = यह, **विप्राय दाशुषे** = विप्र के लिए विद्या देने वाले
वाजान् = अन्न बल आदि, **इयर्ति** = प्रेरित करता है।
गोमतः = गौओं से युक्त
अयं सप्तभ्यः आ वरं = यह पाँच ज्ञानेन्द्रियों मन और बुद्धि को वर देता है।
वः वि मदे = अपने विशेष मद में
अन्धं श्रोणं = अन्धे और लंगड़े को
प्रतारिषत् = विशेष रूप से तारता है, **विवक्षसे** = महान् है।

भावार्थ :- सोम प्रभु ब्राह्मण के लिए विद्या दान कर गौ, अन्न और धनादि प्रदान करता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बुद्धि इन सात ऋषियों को वर प्रदान करता है। अन्धे और पंगु को भी जीवन सहायक साधन प्रदान करता है।

काव्यानुवाद

सोम प्रभुविज्ञ ब्राह्मण को, देता विद्या दान।
अन्न और बल गौओं युत, प्रेरणयुक्त विधान।।
पाँच ज्ञान की इन्द्रियाँ, मन बुद्धि ऋषि सात।
ऋषियों को वर दे देता, बहती सुख की वात।।
अन्धे व पंगु पा लेते, दृष्टि और गति दान।
साधन देकर तारता, तू है सोम महान्।।

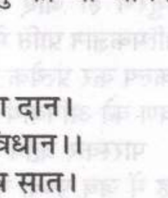

- बाबूलाल जोशी
बी-६२, एम.आई.जी. कॉलोनी
रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष-०७३१-२४३२२८५

(यहाँ सोम परमात्मा का नाम है जो वर अर्थात् श्रेष्ठता प्रदान करता है - सम्पादक)

रक्षाबंधन की धार्मिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से

वैदिक ज्ञान के संरक्षण का महापर्व श्रावणी उपाकर्म

- आचार्य अग्निमित्र
८६१, स्वामी विवेकानन्द नगर
कोटा, राजस्थान
चलभाष-०९९१२९५-११०३१

हम भारतीयों के जीवन में पर्वों का सदा से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। जीवन में सुख के प्रत्येक अवसर का अनुभव कर्त्तव्यों का भान, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक संरक्षण हर एक के लिए हमारे पूर्वजों ने अनेक पर्व सांस्कृतिक, सामाजिक धरोहर के रूप में दिये हैं। इन्हीं पर्वों में से एक प्रमुख पर्व है श्रावणमास में मनाये जाने वाला श्रावणी उपाकर्म (रक्षांबंधन) का पर्व।

वैदिक काल से लेकर आज तक अनवरत रूप से मनाये जा रहे इस पर्व में चाहे अनगिनत परिवर्तन हो गये हैं किन्तु उसकी मूल आत्मा आज भी उसी रूप में जीवित है और वह है वेद और वैदिक ज्ञान का संरक्षण।

वेद भारतीय संस्कृति, धर्म और आध्यात्म के मूल स्त्रोत है। वेदों के उदात्त विचारों का अनुसरण कर सहस्त्राब्दियों तक भारत विश्वगुरू के पद पर प्रतिष्ठापित रहा। ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान का अथाह भण्डार वेदों में विद्यमान है। वेदों में निहित ज्ञान के आधार पर मानवता के सर्वोच्च मानदण्ड निर्धारित किए गए। इस कारण सोच विचार कर ऋषियों ने प्राचीनकाल में वेदों के पठन-पाठन और स्वाध्याय को प्रत्येक व्यक्ति का अनिवार्य कर्त्तव्य निश्चित किया तथा कहा कि **स्वाध्यायान्मा प्रमदः।** अर्थात् वेदों के स्वाध्याय में आलस्य मत करो।

ऋषियों ने अपनी महती सूक्ष्म बुद्धि से वेदों के अध्ययन, अध्यापन और स्वाध्याय के लिए संकल्प पूर्वक जिस शुभदिन का निर्धारण किया वही पर्व के रूप में श्रावणी उपाकर्म कहलाया। क्योंकि वर्षाकाल के प्रथम दो माह आषाढ़ और श्रावण में जहाँ मनुष्य कृषि कर्म में व्यस्त रहता है वहाँ जब खेतों में अंकुरण हो जाए तो फुर्सत के क्षण को व्यर्थ बातों में न गँवाकर आत्मिकज्ञान प्राप्ति में लगायें। इसलिए श्रावण मास के अंत में पूर्णिमा पर संकल्प कर प्रत्येक गृहस्थ के लिए वेदों का स्वाध्याय पठन-पाठन और श्रवण को अनिवार्य किया गया।

पारस्कर ऋषि ने कहा है कि **अथातोध्यायोपाकर्म** अर्थात् श्रावण माह में जब पृथ्वी पर औषधियाँ, वनस्पतियाँ उग जायें तब **पूर्णिमा के शुभ दिन यज्ञाग्नि में संकल्प कर प्रत्येक गृहस्थी ब्रह्मचारी, संन्यासी वेदों का पठन-पाठन और स्वाध्याय आरम्भ करें तथा चार मास तक स्वाध्याय कर पोष के अंत में उसका उत्सर्जन करें।** कालांतर में वेदों के साथ वैदिक साहित्य का भी इसमें समावेश कर लिया गया।

दूसरी ओर श्रावण मास की इसी पूर्णिमा से विद्यालयों में नये सत्र का प्रारंभ होता था, जहाँ आचार्य अपने विद्यार्थी का उपनयन संस्कार करते हुए उसे यज्ञोपवित् दीक्षा देता था तथा देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण से उऋण होने के संकल्प के साथ अध्ययन का शुभारंभ कराते हुए **सह नाववतु सह नौ भुनक्तु** मंत्र का उच्चारण करते हुए एक दूसरे की **सर्वतो भावेन्** रक्षा का संकल्प करते हुए परस्पर एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांधते थे।

वैदिक कालीन इसी श्रावणी उपाकर्म पर्व का परिवर्तित रूप आज भी दिखाई देता है कि इस वर्षा की ऋतु में जगह-जगह साधु-महात्माओं और सन्यासियों का चातुर्मास कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिसमें धार्मिक और आध्यात्मिक उपदेश एवं प्रवचन होते हैं। समय की बदलती छटा में मध्यकाल के दौरान जब शिक्षा व्यवस्था नष्ट हो गई तो आत्मीय प्रेम का प्रतीक रक्षा सूत्र भाई की कलाई पर बंध कर नई परंपरा का सर्जक बन गया।

इसे विधि का विधान कहें या भारतीय संस्कृति की वैश्विक छाप की ध्वंस स्मृति कि आज भी प्रेम और आत्मीयता के प्रकटीकरण के लिए बांधा जाने वाला फ्रेंडशिप बैंड और उसका स्मृति दिवस फ्रेंडशिप-डे भी श्रावण मास में ही आता है।

यद्यपि युग बदल गया है। चातुर्मास्य तक मनाया जाने वाला श्रावणी पर्व आज चंद दिनों में सिमट गया है। वेदों के पठन-पाठन का स्थान कथाओं ने ले लिया है। रक्षा सूत्र भी बाजारवादी आधुनिकिकरण में फैंसी हो गया है। किंतु इस पर्व की आत्मा आज भी जीवित है, और वह आत्मा है वेदों के संरक्षण की, ज्ञान के विस्तार की, संस्कृति के अस्तित्व को बनाये रखने की। यही कारण है कि **तमाम बदलाव के बाद भी इसी दिन वेद और संस्कृत विद्यालयों में वेद मंत्रों के पाठ पूर्वक ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, सनक, सनंदन, सनातन, कपिल, आसुरि, वोढ, पंचशिख आदि समस्त वेद-वेत्ता ऋषियों का संवेत रूप से स्मरण कर उपाकर्म की परंपरा का निर्वहन किया जाता है और संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है।**

यह ईश्वरीय वरदान ही है कि सांस्कृतिक पराभव के इस पतनकाल में आर्य समाज आशा की लौ जलाये बैठा है, जहाँ प्रतिवर्ष इस श्रावणी पूर्णिमा से लेकर भारत में आर्य समाज के सभी मंदिरों में वेद प्रचार अभियान का आयोजन किया जाता है, जिसमें वेदों पर आधारित उपदेश एवं प्रवचन होते हैं, तथा वेद परायण यज्ञों का आयोजन किया जाता है।

वेदादि सत्शास्त्रों का पठन-पाठन और स्वाध्याय इसी प्रकार से निरंतर चलता रहे यही **कर्तव्य बोध कराता श्रावणी उपाकर्म पर्व, ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण का प्रतीक है।** ●

अहंकार शून्य अधिकार ही विशुद्ध कर्त्तव्य का प्रेरक हो सकता है। - चिन्तन तनया

स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार को क्यों चुना?

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून
चलभाष-९४१२९८५१२१

स्वामी दयानन्द के नाम से सारा धार्मिक जगत् परिचित है। **स्वामी दयानन्द पहले धार्मिक विद्वान्, नेता, विचारक-चिन्तक, धर्म प्रवर्तक, देशभक्त, सारें विश्व के मनुष्यों सहित प्राणिमात्र को प्रेम करने वाले व उनका कल्याण चाहने वाले, सभी लोगों व प्राणियों के दुःखों को दूर कर उन्हें स्थायी रूप से सुखी करने के लिए संघर्षरत अद्वितीय महापुरूष थे।** उन्होंने वेद प्रचार का मार्ग मुख्यतः तीन कारणों से चुना था। प्रथम कि उनके समय देश व विश्व में अज्ञान का अन्धकार फ ला हुआ था जिसे दूर करके ही सारी कुरीतियाँ, अन्धविश्वास, निजी व सामाजिक समस्याओं को हल एवं दुःखों को दूर किया जा सकता था। उस अज्ञान व अन्धकार को दूर करने के लिए पर्याप्त ज्ञान व सामर्थ्य उनमें था। दूसरा कारण यह था कि वह वेदों के पारदर्शी विद्वान् वा ऋषि-मुनि-मनीषी, एक सिद्ध योगी, सच्चे ईश्वर उपासक, ईश्वर, जीव व सृष्टि के ज्ञान से प्रकाशमान, संसार के इतिहास तथा दुर्लभ व अलभ्य-विलुप्त तथ्यों से परिचित थे। तीसरा प्रमुख कारण प्रज्ञाचक्षु गुरू विरजानन्द सरस्वती का उनसे इन कार्यों को करने का आग्रह व आज्ञा थी। इसका कारण गुरू विरजानन्द को आर्ष व अनार्ष ज्ञान के अन्तर का पता था। देश पराधीन था और देशवासी अगणित दुःखों व अपमान का जीवन व्यतीत कर रहे थे। **हमारे पौराणिक जन्मना ब्राह्मण बन्धुओं ने वेद एवं वैदिक साहित्य मनुस्मृति, दर्शन व उपनिषद् को छोड़कर व भूलकर मूर्ति पूजा, अवतारवाद व फलित ज्योतिष को अपनी अजीविका बना लिया था। अविद्या से ग्रसित उन्होंने बालविवाह का समर्थन तथा विधवा विवाह को शास्त्र विरूद्ध घोषित कर दिया था। यत्र-तत्र सती प्रथा भी विद्यमान थी, जिसका पोषण किया जाता था। समाज में ५८ प्रतिशत से अधिक स्त्री व शूद्रों को अध्ययन का अधिकार नहीं था,** वेदों का अध्ययन करने की बात तो दूर थी, वेद के शब्दों को सुन लेने या फिर उच्चारण कर लेने पर कठोर अमानवीय सजा व दण्ड, कान में गर्म रांगा भरने या ज़िह्वा काट देने का विधान किया गया था। सामाजिक वातावरण में **'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी'** जैसे शब्द सुनाई दिया करते थे। **यज्ञ में पशु हिंसा का युग आरम्भ हो गया था। स्वाभाविक लगता है कि यदि पशुओं की बलि दी जाती थी तो पशुओं का मांस भी खाया जाता होगा क्योंकि जिन पशुओं के मांस को भक्तों ने ईश्वर का प्रिय भोजन माना था उसे भक्त क्यों न ग्रहण करते?** बाल विवाह प्रचलित था, जिससे ब्रह्मचर्य के नाश से हमारी युवापीढ़ी विद्या, बल, शक्ति, आरोग्य, पराक्रम व स्वाभिमान से दूर होकर दिशाहीन हो गई थी। इन मुख्य तीन कारणों से महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार के कार्य को अपनाया और इसके लिए आर्य समाज अर्थात् ''Society of Noble People'' बनाया, जिससे संगठित रूप से उनके जीवन व उसके बाद वेदों का प्रचार-प्रसार हो सके और देर या सबेर सारी दुनियाँ के लोग अपने-अपने असत्य को छोड़कर एक सत्य मत पर स्थिर हो सकें। सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि **मानव जाति का हित तभी होगा जब संसार में एक मत, एक मुख्य भाषा पर सर्वसम्मति, एक सुख-दुःख व हानि-लाभ अर्थात् सुख-दुःख व हानि-लाभ में एक-दूसरे की सहायता व सहयोग एवं सबका एक मत होकर एक जैसा अनुभव करना।** यह सत्य मत कुछ भी हो, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उन्होंने अपने अध्ययन व विवेक से वेद को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान व सब सत्य विद्याओं को पुस्तक पाया था, जो सृष्टि के आरम्भ में चार आदि ऋषियों को परमेश्वर से मिला था तथा जो अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। स्वामी दयानन्द के जीवन का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि किसी भी प्रकार से **यदि वेद सत्य मत के ग्रन्थ सिद्ध न होते तो वह उन्हें भी छोड़ सकते थे और सत्य को अपना लेते, क्योंकि उनका आग्रह सत्य के लिए था, स्वमत का प्रचार नहीं था।**

अपने अध्ययन के आधार पर हम यह समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य व लक्ष्य बनाने के पीछे उनके जीवन में घटी तीन महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रमुख योगदान था। **पहली घटना शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर चूहों की स्वतन्त्रतापूर्वक उछल-कूद की थी जिसने शिव की मूर्ति को अचेतन, शक्तिहीन व बलहीन सिद्ध किया था।** सत्य के अपूर्व आग्रही दयानन्द ने सदा-सदा के लिए मूर्तिपूजा का तिरस्कार कर दिया। **दूसरी घटना उनकी बहिन की आकस्मिक मृत्यु का होना था। उसके कुछ दिनों बाद उनके चाचाजी की भी मृत्यु ने उन्हें इस संसार व हर प्राणी के नाशवान, अनित्य (संसार व मनुष्य शरीर) होने का दिव्य सन्देश दिया।** सम्भवतः उन्होंने अनुभव किया कि कुछ दिन बाद उनकी भी मृत्यु होगी। मृत्यु से जुड़े अनेक प्रश्न उनके सामने उपस्थित हुए जिनका समाधान न मिल सका। आज हमें मृत्यु से जुड़े जितने समाधानों का ज्ञान है उसका कारण महर्षि प्रदत्त वेद, वैदिक साहित्य व उनके विवेक से निकले शब्द व ज्ञान हैं। जब उन्हें मृत्यु से जुड़े प्रश्नों के सही उत्तर नहीं मिले तो उन्हें लगा कि सच्चे शिव तथा मृत्यु के रहस्य को जानना सामान्य जीवन व्यतीत करने से कहीं अधिक आवश्यक है। तब वह अपने भावी जीवन की योजना बनाने में तत्पर हो गये और परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने गृहत्याग कर परमार्थ का मार्ग पकड़ा। तीसरी घटना, गुरु विरजानन्द के पास पहुँचना और उनसे वेद-व्याकरण व सभी शंकाओं का समाधान करना था। यह तीन घटनायें उनके जीवन में प्रमुख घटनायें थीं, जिन्होंने उन्हें वेद प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने में प्रेरणा प्रदान की। हम यहाँ शिवरात्री की घटना पर विचार करना भी आवश्यक समझते हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन में पहला मोड़ शिवरात्री व्रत की घटना से आया। यद्यपि सहस्त्रों वर्षों से यह कृत्य होता आ रहा था, परन्तु कभी किसी ने इस प्रकार से शिव लिंग पूजा पर सन्देह नहीं किया था। क्या इसे ईश्वरीय प्रेरणा कहें या महर्षि दयानन्द के पूर्व जन्म का प्रारब्ध। हमें इसमें ईश्वरीय प्रेरणा अधिक दिखाई देती है। प्रारब्ध भी है परन्तु कम इसलिए कि हमारे मन्दिरों के पुजारी महाभारत काल के बाद से, अब से २००० या २५०० वर्ष पूर्व से, इस कृत्य को करते आ रहे थे, परन्तु कभी किसी ने इस प्रकार से शंका की हो और उसके विरोध के लिए अपना सारा जीवन उसके अनुसंधान व सत्यार्थ को जानने में लगाया हो, ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। स्वामी शंकराचार्य और उनके समकालीन अनेक प्रवर विद्वानों ने

भी मूर्तिपूजा की निस्सारता के बार में कभी कुछ नहीं कहा और न इसके भावी दुष्परिणांमों का ही उन्हें कुछ अन्दाज था। **बालक मूलशंकर (दयानन्द) ने तो पहली बार में मूर्तिपूजा का अयथार्थता, असत्यता व अमौलिकता को जान लिया और उसको छोड़ दिया।** हम स्वामी दयानन्द के पिता श्री करषन जी तिवारी की भूमिका को भी महत्वपूर्ण मानते हैं कि यदि वह कट्टर शिवभक्त न होते और दयानन्द जी से मूर्तिपूजा करने का आदेश न करते तो शायद् बालक दयानन्द उस शिखर स्थान पर न पहुँचते, जहाँ वह पहुँचें। कारण-कार्य सिद्धान्त में पूर्व निर्धारित कुछ नहीं होता सब परिस्थितियों व कर्मों पर आधारित है। हम समझते हैं कि हम जहाँ महर्षि के ऋणी हैं वहीं उनके पिता करषन जी तिवारी के भी ऋणी हैं जिन्होंने स्वामी जी को जन्म ही नहीं दिया अपितु उनके महर्षि बनने की आधारभूत घटना के वह निमित्त भी बने थे। यह विचार बुराई में भलाई ढूंढने जैसा है। महर्षि दयानन्द ने इस बारे में सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है कि **'विष से भी अमृत के ग्रहण करने के समान पोपलीला से बहकाने में से भी आर्यों का जैन आदि मतों से बचा रहना जानों विष में अमृत के समान गुण समझना चाहिए।'**

हम विचार करते हैं कि किसी कारण से यदि महर्षि दयानन्द वेद व वैदिक विचारधारा का प्रचार न करते तो फिर वह क्या करते? हम अनुभव करते हैं कि फिर वह एक बहुत बड़े योगी होते और योग-जिज्ञासुओं को योग सिखाते होते। महर्षि दयानन्द से भिन्न किसी योगी को वेद प्रचार जैसा कार्य करते हुए नहीं देखा गया। हाँ हो सकता है कि उनका कोई आश्रम या मठ होता जहाँ वह निवास करते और कुछ सेठ आदि उनके भक्त हो सकते थे। एक प्रश्न और भी यदा-कदा उठा करता है कि महर्षि दयानन्द ने वेदों का विधिवत् अध्ययन कब किया और वह कब वेदविद् बने? हम जानते हैं कि गुरू विरजानन्द की कुटिया में आने से पहले वह आर्ष व्याकरण में निष्णात या अभिज्ञ नहीं थे। वहाँ उन्होंने व्याकरण पढ़ा। उसके बाद गुरु कुटिया को छोड़ने से पूर्व ही उन्होंने गुरु विरजानन्द से ही वेदों का अध्ययन किया होगा, ऐसा प्रतीत होता है। उन्होंने तब जो शंकायें की होगीं उनका निराकारण भी गुरु जी ने किया होगा। गुरुदक्षिणा का दिन यह सोचकर ही निर्धारित किया होगा कि स्वामी दयानन्द का व्याकरण व वेदों का अध्ययन सम्पन्न व पूर्ण हो गया है। गुरुदक्षिणा के बाद गुरुकुटिया से निकलकर स्वामी जी आगरा पहुँचें और वहाँ उपदेश आदि करते रहे तथा अपने कार्य की भावी योजना बनाने में व्यस्त रहे। आगरा या बाद के वर्षों में हम उन्हें वेदों का अध्ययन करते हुए नहीं पाते। सन् १६ नवम्बर १८६९ ई. को काशी के पण्डितों से उन्होंने विश्व का प्रसिद्ध चर्चित शास्त्रार्थ किया। हम पाते हैं कि उस समय उनकी वेदों पर आस्था व विश्वास चरम पर पहुँच गया था। उससे पूर्व वह निश्चय कर चुके थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और **चारों वेदों के लगभग २०५०० मन्त्रों में कहीं भी मूर्तिपूजा व प्रतिमापूजन का विधान नहीं है।** अत: हम समझते हैं कि स्वामी दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द स्वामी दयानन्द के वेद गुरु भी थे जिन्होंने वेदों के विषय में अनेक रहस्य उन्हें बताये थे। हमें यह भी लगता है कि हर योगाभ्यासी को समय-समय पर कुछ विशेष ज्ञान व अनुभूतियाँ होती रहती हैं। वह उन्हें केवल पात्र या अपने अन्तरंग मित्रों वा किसी विशेष अन्तरंग शिष्य को बताता है। वह सब स्वामी विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द को बताई थीं।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन का जो उद्देश्य, मार्ग व लक्ष्य चुना, हमें लगता है कि यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के **''विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।''** मन्त्र के पूरी तरह अनुकूल है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम सम्मुलास में इसका अर्थ करते हुए कहा है कि जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात् कर्मोंपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। इसी सन्दर्भ में महर्षि ने लिखा है कि कर्म और उपासना अविद्या इसलिये है कि यह बाह्य और अन्तर क्रिया विशेष नाम है, ज्ञान विशेष नहीं। इसी से मन्त्र में कहा है कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु-दु:ख के पार कोई नहीं होता अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र-मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है। हमें प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द का वेद प्रचार **'विद्या'** अर्थात् पवित्र कर्म एवं पवित्र उपासना होने के कारण चुना और ऐसा करके उन्होंने जीवन के अभीष्ट ''मोक्ष'' को प्राप्त करने का प्रयास किया जिसमें वह सफल हुए ऐसा अनुमान होता है। उन्हें अपनी बहिन व चाचा की मृत्यु से जो भय हुआ था और मृत्यु से बचने, तरने व पार होने का जो उपाय ढूंढ रहे थे वह उन्हें **'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते'** के अर्थ में मिला था।

महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन सत्य के अनुसंधान में लगाया। वह एक सिद्ध योगी थे। उन्हें वेदों का जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह विगत ५००० वर्षों में हमारे देश के किसी विद्वान् को नहीं हुआ था। यदि वह वेद प्रचार के कार्य को न अपनाते तो हमारा देश रसातल को जा सकता था। उन्होंने जो मार्ग चुना, वह अक्षरस: व सम्पूर्णता में पूर्णरूपेण सही था। यह दैवी या ईश्वरीय विधान था या नहीं? यह तो ईश्वर ही जानते हैं। उनके इस निर्णय से **भारतीय समाज व संसार लाभान्वित हुआ। संसार में आज योग व वेदों का जितना तर्क-पूर्ण ज्ञान है तथा जिसके कारण आज भारत पुन: विश्वगुरू के पद पर प्रतिष्ठित है, उसका पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को है। हम तो यहाँ तक कहेगें कि एक न एक दिन सारे संसार को वेदों की शरण में आना होगा। यह कार्य सम्पन्न हो सकता है यदि आर्य समाज का संगठन इसके लिए कमर कस ले और वेद प्रचार को अपनी पूरी शक्ति, बल व ऊर्जा से करे तो सम्भव है कि विश्व में कहीं कोई रोला जैसे ऋषि के भक्त उत्पन्न हो जायें और फिर सर्वत्र वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं के पालन के युग का सूत्रपात हो।** हम यहाँ यह भी कहना चाहेगें कि मनुष्य कई बार कुछ अच्छा कार्य करता है तो उसमें उसे जो सफलता मिलती है वह कल्पनातीत होती है जिसका उसे पूर्व में अनुमान ही नहीं होता। यदि संगठित रूप से पूरी तैयारी के साथ हम वेद प्रचार का कार्य करेगें तो हो सकता है कि ईश्वर की कृपा से उसमें कल्पनातीत सफलता मिले और हम आगे बढ़ें व लक्ष्य के निकट पहुँचें।

आईये, लेख को विराम देने से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश से स्वामी जी के कुछ दिव्य प्रेरणाप्रद वाक्यों पर दृष्टि डालते हैं-**'जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्यान्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना-कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। .... यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फँसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो सभी ऐक्यमत हो जायें।'**

-एकादश समुल्लास

शेष पृष्ठ २७ पर....

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते

-डॉ. गंगाशरण आर्य
सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, नई दिल्ली-६१
चलभाष-९८७१६४४१९५

जिन लोगों ने आत्मिक ज्ञान और पुण्य को बेचने की दुकानें खोली हुई हैं वास्तव में उनके पास आत्मिक ज्ञान व पुण्य अर्थात् वैदिक ज्ञान और परोपकारी जीवन का अनुभव है या नहीं। केवल ''सादा जीवन उच्च विचार'' वाले ज्ञानवान् व पुण्यात्मा लोगों की बाह्य वेश भूषा ही शेष बची है जो उन्होंने अपना रखी है उसी को देखकर भोले-भाले लोग चढ़ावा दे-देकर लुटते जा रहे हैं। इसी दुःख का अनुभव करने के कारण यह लेख प्रस्तुत है:-

बहुत सारे लोग यह सोचकर भ्रमित रहते हैं कि जो सत्कार्य वे करते हैं उनका उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता, पुण्य नहीं मिलता। दरअसल, निजी स्वार्थ के लिए किया गया कोई भी दान फलदायी नहीं होता। उदाहरण के लिए कुछ लोग यह सोचकर दान देते हैं कि पैसे फलतू पड़े हैं, काला धन है, इनकम टैक्स के झंझटों में कौन फँसे इससे तो अच्छा भगवान को चढ़ा दें। पुण्य ही मिलेगा, भगवान खुश हो जाएँगे। अब इसमें स्पष्ट है कि वे एक बोझ से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसमें लालच और चापलूसी का भी भाव है। ऐसे में दाता के मूल आंतरिक भाव के अनुसार नकारात्मक फल ही मिलेगा, पुण्य नहीं। पुण्य मिलता है करूणा में सहयोग, असहायों का सहयोग करने से और हृदय में सर्वकल्याण जैसे सच्चे सात्विक भावों से। पर ऐसे दान बहुत कम देखने में आते हैं। **दान में इस बात का जरा भी महत्व नहीं है कि दान कितना महंगा है बल्कि दान में यह महत्वपूर्ण है कि दान कितनी सद्भावना, करूणा, प्रेम और परोपकार की भावना से सुपात्र को दिया गया है या नहीं। ऐसे सद्भाव से दिये गये १० रूपये भी उतना ही पुण्य देंगे जितना १० करोड़ का दान क्योंकि दोनों अवस्थाओं में आंतरिक भाव सात्विक थे और उतने ही गहरे थे। फल १० रूपये या १० करोड़ रूपये के अनुसार नहीं मिलेगा बल्कि फल भीतर के मूल आंतरिक भावों के अनुसार मिलेगा।** हमारा अवचेतन मन ऐसे ही काम करता है। वह हमेशा मूलभूत सच्चाई का साथ देता है। ये तो हमारा व्यवसायिक दिमाग हिसाब करता है कि १० करोड़ दिए हैं तो ऊपर भगवान, आगे की सीट (वी.आई.पी) तो दे ही देगा, थोड़ा खास ख्याल तो करेगा ही। अवचेतन मन में चापलूसी का भाव भी प्रबल है, बहती गंगा में हाथ धोने वाला भाव है। ऐसे भावों से क्या पुण्य मिलेगा? कभी नहीं।

तीर्थ यात्रा पर जाने वाले मन के मन में पुण्य संचय करने का भाव बड़ा तीव्र होता है और जितने भी तीर्थ स्थल हैं प्रायः पानी के स्त्रोत के पास ही होते हैं और प्राकृतिक मनोहारी स्थल भी होते हैं और वहाँ पाए जाने वाले मन्दिरों में किसी न किसी तपस्वी महापुरूष या काल्पनिक देवी-देवताओं का इतिहास भी सुनने को मिलता है और इसी से लोग प्रसन्न हो जाते हैं कि हमें आशीर्वाद तो मिलेगा ही, लेकिन वे तीर्थ से संबंधित सच्चे इतिहास को नहीं जानते हैं जो इस प्रकार है।

आजकल तीर्थ से अभिप्राय (अक्सर) ऐसे भौगोलिक स्थलों से लिया जाता है, वहाँ विशिष्ट मन्दिर स्थापित है जो पुराणों के अनुसार अवतारों के जन्म या लीला स्थल रहे हैं या उनके नाम से प्रसिद्ध हैं और ये विशिष्ट नदियों यथा गंगा, क्षिप्रा, गोदावरी आदि नदियों के आस-पास अवस्थित हैं। इसी के साथ **यह धारणा भी प्रचलित है कि इन तीर्थों की यात्रा करने व इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप दूर हो जाएंगे व पुण्य की प्राप्ति होगी साथ ही साथ मोक्ष का सुख भी मिलेगा। यह मान्यता अवैदिक है तथा कर्म-फल के सिद्धान्त के विरूद्ध होने से भी यह मान्य नहीं। क्योंकि पाप कभी, किसी भी स्थिति में क्षमा योग्य नहीं होता, उसका फल कभी न कभी मिलता अवश्य है।** अतः तीर्थ यात्रा का केवल जीवन की नीरसता में कुछ नयापन आने से चित्त की प्रसन्नता होती है तथा जानकारियों में वृद्धि होती है, नदियों में नहाने से शरीर की शुद्धि होती है इससे अधिक और कुछ नहीं। **ऋषियों की दृष्टि में तीर्थ वही है, जो दुःख सागर से पार कर दे।** माता-पिता, आचार्य, विद्वान्, धार्मिक उपदेशक, वानप्रस्थी, संन्यासी जो हमें यथार्थ ज्ञान सहित सत्यमार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं, तीर्थ है। तपस्वी-ब्रह्मनिष्ठ, तीनों प्रकार की ऐष्णाओं (पुत्रैष्णा, वितैष्णा, लोकैष्णा) का त्याग कर देने वाले, परोपकारी महात्मा हैं वे साक्षात् तीर्थ ही हैं। इनके सत्संग और तदानुकूल आचरण से दुःख सागर से तरना सम्भव है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि - **''वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्कर्म करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरूषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण-कर्म दुःखों से तारने वाले होने से 'तीर्थ' है।**

प्राचीन काल में ब्राह्मण, वानप्रस्थी वैदिक संन्यासी लोगों के निवास स्थान शुद्ध और प्राकृतिक मनोहारी वातावरण जहाँ शुद्ध जल का स्त्रोत बहुत जरूरी था ऐसी जगह होते थे। वे खुद भी मूर्ति की पूजा नहीं करते थे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाण्ड पंडित होते थे। इसलिए जन साधारण गृहस्थी लोग मार्गदर्शन के लिए उनके प्रवचनों के प्यासे रहते थे, ताकि सचमुच दुःखों से तरा जा सके, इसी का नाम तीर्थ यात्रा होता था। अब न

दानव स्वभाव

धर्म को हम जानते पर, रहते हमेशा शून्य हैं।
हे प्रीति सदैव अधर्म में, जिसका न कोई मूल्य है।।
ऐसे नर पिशाच रूप, दुर्योधन बनना भूल है।
ये दानव मानव समाज में, नित्य चुभते शूल हैं।।
तज स्वभाव युधिष्ठिर का, दुर्योधन से प्रीति अहो।
फिर मानव की पतितावस्था, हर तरह क्यों न हो।।

हे ईश! ऐसी दैत्यता का हो विनाश तत्काल।
सद्बुद्धि दान दीजिये, है विनीत सत्यपाल।।

- भारतेन्द्र आर्य
खरसौद कलां, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४५५३८९६

वहाँ सच्चे तपस्वी रहे, न वेद का ज्ञान रहा। अब चढ़ावे के अलावा **वहाँ कुछ शेष बचा नहीं इसलिए आजकल तीर्थ नामक स्थलों में बैठे वेदज्ञान से कोरे पाखण्डियों के पास जाकर धन, समय, और बुद्धि भ्रष्ट करने वाले कर्मों का कोई अच्छा फल मिलने वाला नहीं।** उपरोक्त कर्म करने से ईश्वर हमारे पाप कर्म सब भूला देगा। ऐसी धारणा रखकर मन में यही विचार लाता रहता है कि बस नाम ले लो ईश्वर का, किसी भी प्रकार से पूजा कर लो उसकी, देवी-देवता की खूब प्रशंसा करके उनको अपने पक्ष में बांध लो। नहीं तो कभी ऐसा न हो कि नाम न लेने से, उसकी तरफ न देखने से ईश्वर मेरा काम न बिगाड़ दे, धन्धा चौपट न कर दे, ढेर सारी समस्याएँ या बाधाएँ पैदा न कर दे।

सच्ची तीर्थ यात्रा एक झटका है, उत्तेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है परन्तु **९९ प्रतिशत लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए शमशान घाट का वैराग लाकर फिर उसी बेहोशी वाले जीवन में लौट आते हैं। जैसे कोई गरमी के अन्दर ठण्डे पानी के छींटे मार आया परन्तु कुछ देर बाद फिर पसीने में लथ-पथ हो रहा है। तीर्थ यात्रा का अर्थ है, ऐसी गंगा में जाना जहाँ सदियों से संस्कार के रूप में पाले हुए अपने अहंकार, वासनाएँ, अनावश्यक महत्वाकांक्षाएँ, स्वार्थ आदि सब विकार छोड़कर नए संकल्प के साथ विचारों को साफ कर उससे मुक्त हो कर, जागकर, रूपान्तरित होकर, गृहस्थ जीवन को सुधार इस संसार में कीचड़ में कमल के फूल की तरह खिलना और अपनी पवित्रता और सुन्दरता का लाभ संसार को देना बस यही तीर्थ का सच्चा फल है।** तीर्थ यात्रा करके जागे ही नहीं, रूपान्तरित ही नहीं हुए, तो करते रहें ऐसी हजारों तीर्थ यात्राएँ और देते रहें दिल को झूठी तसल्ली, जीते रहें भ्रम में। संसार में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। अब तो होश में आ ही जाओ और कर लो सच्ची तीर्थ यात्रा, कहीं दूर जाकर नहीं अपने भीतर (मन मन्दिर) में जाकर। बाहर की सभी तीर्थ यात्राएँ अज्ञानवश भीतर की तीर्थ यात्रा से वंचित रहने का ठोस कारण है। अपने से और दूर जाने का सिलसिला है इसलिए सदियों से मानव झूठी तीर्थ यात्राएँ करने के बाद भी वहीं का वहीं हैं। उसे सिर्फ यही मानसिक सन्तोष है कि उसने भले ही कितने ही पाप कर्म किए हों, लेकिन भगवान के दरबार में हाजिरी लगा कर या थोड़ा-बहुत दान देकर, मन्दिर बनाकर या मन्दिर-गुरूद्वारे में सेवा करके, माता के बड़े-बड़े जागरण कर और भण्डारे करके उसने ईश्वर को सूचित कर दिया है। अब ईश्वर इतना तो करेगा ही कि नरक से बचा लेगा। आदमी भीतर की तीर्थ यात्रा से अनभिज्ञ रहता हुआ बाहर की तीर्थ यात्राओं को इतना महत्व देता है। ऐसा नहीं है कि बाहर की तीर्थ यात्राएँ गैर जरूरी हैं या महत्वपूर्ण नहीं हैं। बाहर की तीर्थ यात्राएँ आध्यात्मिक जगत में प्रवेश कराने में सहयोग कर सकती हैं **अन्तिम मंजिल या उद्देश्य तो भीतर की गंगा में डूबना है, उस पार जाना है स्वयं को तीर्थ स्थल बनाना है। तीर्थ यात्रा करना नहीं है स्वयं तीर्थ स्थल में रूपान्तरित हो जाना है।**

वरदान प्राप्ति की खुशी और अभिशाप मिलने का डर दोनों के चक्कर में फँसे हुए लोग यह सोचते हैं कि हमने यदि ईश्वर या किसी देवी देवता के प्रति कोई कर्मकाण्ड नहीं किया तो हम उनके अभिशाप के भागीदार बन जाएँगे और हमने उसको खुश करने के लिए कुछ कर्मकाण्ड किया तो हमको कुछ उनसे वरदान तो मिलेगा ही। हो सकता है हमारे अमुक-अमुक दुःख दर्द जो हो रहे हैं वे सब मिट जायें। **पण्डे और पुजारियों ने पेट भरने के लिए आम आदमी को वरदान और अभिशाप की रस्सी से बांधा हुआ है।**

हे भारतीयों! आर्यों! आर्य-पुत्रों! पाँच हजार वर्ष से सोने वाले आर्य पुत्रों! उठो! इतनी गहरी और चिरनिन्द्रा में तुम्हारा नाम तक बदल कर 'हिन्दू' रख दिया है। दुष्टों ने तुम्हारे पवित्र ज्ञान के स्त्रोत 'वेद' को तुम से छीन लिया है और दे दिया है तुम्हें पाषाण व धातु आदि का परमेश्वर, वह भी एक नहीं, अनेक, वो भी भिन्न-भिन्न रूप ताकि हम एक ना हो सकें और दे दिया है तुम्हें वरदान की अब से भगवान तुम्हें नहीं, तुम भगवान को पालोगे, नहलाओगे, वस्त्र पहनाओगे, घण्टी बजाकर सुप्त भगवान को जगाओगे, प्रातःकाल उठाओगे और बुलाओगे, सभी पाप कर्मों को गर्दन झुकाते ही माफ करवाओगे।

जिसका भय था वही जेब में आ गया है, शिवालय में बन्द हो गया है, जा कहाँ सकता है बाहर, बिगाड़ क्या सकता है? मुझे पूर्ण स्वतंत्रता है, सभी कर्म-दुष्कर्म करने की और माफ क्यों नहीं करेगा? वो भगवान जो मेरे द्वारा दिया पहनावा पहने, मेरा दिया हुआ खावे, मेरे अन्न पर पला मेरे विपरीत क्या करेगा? जो मुझे अच्छा वह मेरे भगवान को भी अच्छा, मुझे शराब अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे अनेक स्त्रियाँ अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे बकरा अच्छा तो मेरे भगवान या देवी को भी बकरा अच्छा, जब मैं सभी कार्य करने में स्वतंत्र, स्वच्छन्द तो मेरे भगवान का तो कहना ही क्या वो तो सर्व स्वतन्त्र, सर्व शक्तिमान चाहे तो आज लखपति बना दे, चाहे तो बिना माता-पिता के अपना बेटा बना दे। घड़े से सीता जैसी स्त्री को बना दे, कर्ण जैसे वीर को कान से उत्पन्न कर दे, मछली के गर्भ से ऋषियों को जन्म दे दे और स्वयं भी जन्म ले ले मेरी रक्षा के लिए, क्योंकि गर्दन जो झुकाता हूँ।

इस प्रकार की भ्रान्तियों में फँसाकर अंध श्रद्धालुओं के साथ-साथ लिखे-पढ़ों को भी ऐसा ही पाठ सिखाते रहना पूजाविधि के ठेकेदारों का स्वभाव बन गया है। समस्त अज्ञान से दूर होना हो और सच्चा आस्तिक बनना हो तो राम-कृष्ण की भाँति उसी ईश्वरोपासना को अपनाओं जो उन्होंने स्वयं अपनाई थी।

ईश्वर की साधना में आंतरिक भाव काम करते हैं। बाहर से, ऊपर-ऊपर से किये गए काम या व्यवहार नहीं। **अगर आप दान अहंकार-वश देते हैं कि चार लोगों में समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महात्यागी, महाधार्मिक समझेंगे, वाह-वाह होगी, ताली बजेगी सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा, तो आपका मूल भाव अहंकार एवं लालच है।** यह तामसिक दान है। तब आपको दुनियाँ की कोई शक्ति, कोई नियम वह पुण्य नहीं दे सकता, जिसे सात्विक श्रेणी में रखा जा सके। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक सुख या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम आपकी आशा के अनुकूल नहीं होगा। क्योंकि बीज गलत है अब यदि आप दान इस भाव से दे रहे हैं कि जा ले जा तू तो निकृष्ट है, मैं उत्कृष्ट हूँ तो इस दान में भी अहंकार की पुट है और नकारात्मक फल ही मिलेगा। इसलिए भारत में इस भाव से 'दक्षिणा' शब्द का उपयोग किया कि आप कृतज्ञ हो रहे हैं कि सामने वाला आपका दान सहज स्वीकार कर रहा है अगर आप दान देकर कोई अपेक्षा रखते हैं तो याद रखें आप सच्चे दान के फल से वंचित ही रहेंगे। बल्कि यह एक **स्वार्थमय दान भिखारीपन है, एक माँग है, एक लालच है, एक आकांशा है।** तब फल भी आपको, इन भीतरी भाव के अनुसार ही मिलेगा। इसका अन्तिम परिणाम उस दुःख के रूप में मिलता है जो आपकी अपेक्षा की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। ●

संसद की दीवारों के संदेश

-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार संसद में प्रवेश करते समय संसद की सीढ़ियों पर सिर रखकर प्रणाम किया है। इससे संसद की गरिमा बहुत बढ़ गयी है। आशा है कि सांसद महानुभाव इस भावना और गरिमा का सम्मान करेंगे।

संसद भवन की दीवारों और लिफ्टों के गुम्बजों पर लिखे हुये संदेश संसद के सदस्यों, सांसदों से कुछ उम्मीद करते हैं। संसद के इन संदेशों का चयन करने वाले पूर्व राजनायकों के प्रति मन में श्रद्धा के भाव जग उठते हैं। आज के बहुसंख्यक सांसदों के पतनशील आचरण, स्वार्थी व्यवहारों पर विचार करने से इन आदर्श संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है। संसद भवन के प्रथम द्वार से होकर जब हम केन्द्रीय सभागार के प्रांगण की ओर चलते हैं तो प्रवेश द्वार पर भारतीय संस्कृति का एक उदात्त आदर्श निम्न श्लोक में लिखा हुआ मिलता है-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां च वसुधैव कुटुम्बकम्।। (पंचतंत्रम्)

इसका अर्थ हुआ कि यह अपना है और यह पराया है ऐसा विचार छोटे चित्त वालों का होता है। जो उदार चरित्र वाले होते हैं वे तो सारे विश्व को अपना परिवार समझते हैं। आज के भूमण्डलीकरण और विश्व के बाजारीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विश्व के संसाधनों की लूट के युग में ऐसे आदर्शों का महत्व बढ़ जाता है।

लोकसभा के सुविशाल सभागार में लोकसभा के अध्यक्ष के पीठ के पीछे दीवार पर बौद्ध युग की प्रसिद्ध सुक्ति-**''धर्म चक्र-प्रवर्तनाय''** लिखा हुआ है **इसका अर्थ हुआ कि सांसदों को धर्म चक्र के निर्माण के लिये प्रयत्नशील बने रहना चाहिये।** इस सूक्ति को देखते हुये हम संसद के सदस्यों को पंथ निरपेक्ष होने की सलाह तो सोच सकते हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि हमारी संसद का आदर्श धर्म निरपेक्ष नहीं है, बल्कि सम्प्रदाय निरपेक्ष है। संसार में अनेकों पंथ है-शैव, शाक्त, वैष्णव आदि हिन्दुओं के सम्प्रदाय है, शिया, सुन्नी आदि मुसलमानों की सम्प्रदाय है, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट आदि ईसाईयों के सम्प्रदाय है, जैन, बौद्ध, पारसी, सिक्ख सभी सम्प्रदायों में ही परिगणित है। इनके प्रति संसद का निरपेक्ष समान भाव होना ही इष्ट है।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण पालन करता है **''धारणाद् धर्ममित्याहु''** कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य, पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी का धारण-पोषण हो वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहा है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुयी है-**अहिंसा परमो धर्मः।** गांधी जी की सभाओं में गाया जाता था-**वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे।** आज के युग में हमारी संसद में जोर जबर्दस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है।

संसद की दीवारों पर जहाँ भी भारत का राजचिन्ह अंकित है वहाँ सर्वत्र लिखा हुआ है-**''सत्यमेव जयते'' इसका भाव हुआ कि सांसदों का कर्तव्य है कि वे सत्य की जीत की चेष्टा करें।** यह पूरा वाक्य है-**''सत्यमेव जयते नानृतम्''** ऋत् का अर्थ होता है उचित, अनृत् का अर्थ होता है अनुचित। भाव यह हुआ कि जो असत्य है, अनुचित है उसकी जीत की चेष्टा नहीं होनी चाहिये। उदाहरण के लिये स्कैण्डल होते हैं, घूस का बाजार सर्वत्र गर्म रहता है, चोरी, भ्रष्टाचार होते हैं इसलिये उनकी सत्ता तो है पर वे अनुचित हैं। सांसदों का कर्तव्य है कि वे अनुचित का समर्थन न करें। आज के युग में हमारी संसद में उचित अनुचित का विचार किये बिना पार्टी और नेताओं के समर्थन में बहुत कुछ होता रहता है। कुछ दिनों पहले राष्ट्रमण्डल के खेलों का स्कैण्डल, २ जी का मामला, कोलगेट का स्कैण्डल, सभी सत्य की निर्मम हत्या है। **सत्यमेव जयते का संदेश इस तरह के आचरण को रोकता है।**

राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है-**सत्यं वद् धर्मं चर** - यह तैत्तरीय उपनिषद् का वचन है। **इसका सुस्पष्ट संदेश है कि संसद के सदस्य सत्य बोलें और धर्म का आचरण करें।** हम यह देख रहे हैं कि धर्म के आचरण की अनुशंसा अनेक बार की गयी है। राज्यसभा के एक और प्रवेशद्वार पर लिखा हुआ है -

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋ. १/१६४/४६

ऋग्वेद में तो यह उक्ति परमेश्वर के सम्बन्ध में है किन्तु यहाँ **संसद में इस उल्लेख का आशय यह समझ में आता है कि देशहित, देश की सुरक्षा, देश का बहुमुखी विकास सभी सदस्यों का सांझा सत्य है और सभी सदस्य मिलजुल कर आपसी समन्वय से इस सत्य को पाने का प्रयास करें।** एक और प्रवेश द्वार पर भगवत् गीता का निम्न वाक्य लिखा हुआ है-

स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। गीता-१८,४५

संसद का प्रत्येक सदस्य अपने-अपने कर्म का, कर्तव्यों का पालन करते हुए संसद के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। आज हमारे

सफलता का सबसे मुख्य साधन है कि, हम यह जानें कि लोगों के साथ व्यवहार कैसा करना है। सफलता निश्चित है। "विजयी भव।" -दर्शन योग महाविद्यालय

बहुदलीय प्रजातन्त्र में राजनीतिक दल स्वदेश के स्वार्थ को भुलाकर दलीय स्वार्थों में उलझ जाते हैं। कई बार तो सदस्यों के आपसी नोंक-झोंक में लड़ाई हो जाती है। संसद के ये वाक्य दलीय स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्वार्थ की अनुशंसा कर रहे हैं। संसद की प्रथम लिफ्ट के गुम्बद पर महाभारत का निम्न श्लोक अंकित है-

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मो न सो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यं न तत् यत् छलमभ्युपैति।।
-महाभारत

अर्थात् वह सभा या संसद, संसद नहीं होती जिसमें वृद्ध, वरिष्ठ ज्ञानवृद्ध, अनुभववृद्ध अर्थात् ज्ञानी और अनुभवी लोग न हों। वे वरिष्ठ वृद्धजन भी नहीं हैं जिनके वक्तव्य राष्ट्रधर्म और राष्ट्रहित में न हों, राष्ट्रधर्म भी ऐसा हो जिसमें सत्य की रक्षा होती हो और सत्य भी ऐसा हो जिसमें छल-कपट भरा न हो। इस संदेश का आशय यह है कि हमारा राष्ट्रधर्म, हमारी राजनीति जितना पारदर्शी हो, हमारे राष्ट्रधर्म में जितना छल-कपट कम होगा, उतना ही हमारा राष्ट्र और हमारी संसद की गरिमा बढ़ेगी।

लिफ्ट क्रमांक-२ के गुम्बद पर मनुस्मृति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है- **सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यं वा समंजसम्।**
अब्रुवन विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्मिषी।। मनु. ८/१३

यह आदेश सभासदों को उनके आचरण की गरिमा के प्रति सतर्क करता है। इस श्लोक का भावार्थ यह है कि सभासद सभा में प्रवेश न करें, यह तो उनकी इच्छा पर है (हम यह समझते हैं कि जब कोई संसद का सदस्य बन जाता है तो वह संसद में प्रवेश कर चुका, उसे अनुपस्थित होने का अधिकार नहीं है) सभासद जब संसद के सदस्य बन चुके तो उन्हें राष्ट्रधर्म के अनुकूल ही बोलना चाहिये। जो सदस्य संसद में बोलेगा ही नहीं या झूठ बोलेगा वह पाप करेगा। हम पिछली लोकसभा के राष्ट्रमण्डलीय खेलों, २ जी के घोटालें और कोलगेट के घोटाले के प्रसंग में देख चुके हैं कि पिछली संसद में कैसे-कैसे छल हुये हैं।

लिफ्ट क्रमांक-३ पर लिखा हुआ है-

''दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक्।
न ही दृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।।'' महाभारत (विदुरनीति)

इसका भाव यह है कि प्राणीमात्र पशु, पक्षी, मनुष्य आदि सबके प्रति दया, प्राणीमात्र से मित्रता, मधुर वचन और दान देने की प्रवृत्ति (केवल धनदान नहीं या भूमिदान ही नहीं, बल्कि श्रमदान, विद्यादान आदि) संसार में दुर्लभ हैं। इस सूक्ति का यह आशय है कि सभासद, जनप्रतिनिधि इन मानव गुणों से अपने को परिपूर्ण बनाये रखें।

लिफ्ट क्रमांक-४ पर शासक के राजधर्म पालन का मार्गदर्शन करने वाला शुक्रनीति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है-

सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः, स्वमते न कदाचन।
सभ्याधिकारिप्रकृति सभासत्सुमते स्थितः।। शुक्रनीतिः (२/३)

इसका आशय यह है कि हमारी कार्यपालिका, प्रधानमन्त्री और उनके मन्त्रिमण्डल के सदस्य विद्वान् हों, किन्तु अपनी बात पर हठपूर्वक अड़े न रहें। उन्हें सभासदों के विचार और परामर्श से निर्णय लेना उचित है।

संसद भवन के इन संदेशों के परिप्रेक्ष्य में हमारा हृदय उन अपने पूर्व पुरूषों की सूझ-बूझ पर श्रद्धा से भर उठता है। आज के संसद सदस्यों के अनेक बार अनुचित आचरणों से और मंत्रिमण्डलीय अनुचित निर्णयों को देखते हुये इन संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है।●

भारत वीर शहीदों की गाथा

सुनों अब भजन सुनाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
स्वामी दयानन्द जी ने, जगत को जगाया सुनों।
वेदों का प्रकाश सर्व विश्व को दिखाया सुनों।।
सत्य का प्रचार किया, धर्म को निभाया सुनों।।।
ऋषि को शीष झुकाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
महारानी लक्ष्मीबाई ने, अंग्रेजों से की थी जंग।
रानी का रण कौशल देख, दुनियां हो गई थी दंग।।
देश की उस दीवानी ने, प्रतिज्ञा ना की थी भंग।।।
भूल ना उसको पाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
वीर चन्द्रशेखर ने, अंग्रेजों के बीगाड़े होश।
जीवन भर आजाद रहा, जिसका था निराला जोश।।
आता है अब याद प्यारा, नेता वह बंगाली बोस।।।
वीर पर बलि-बलि जाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
मदनलाल धींगड़ा ने, लंदन में कमाल किया।
अंग्रेजों का अफसर मारा, जग हैरत में डाल दिया।।
फाँसी के फंदे चूमा, देश को निहाल किया।।।
गजब की बात बताऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की गाथा गाऊँ मैं।।
कान्हा रावत ने भी खौफ, मौत का ना खाया सुनों।
औरंगजेब दुष्ट की, वह चाल में ना आया सुनों।।
चोटी ना कटवाई उसने, गर्दन को कटवाया सुनों।।।
पढ़ो इतिहास पढ़ाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।
वीरों के बलिदानों से यह, आजादी पाई है आज।
हे नेताओं ! जाग जाओ, लाओ मंगलकारी राज।।
''नन्दलाल निर्भय'' को, शहीदों पर है भारी नाज।।।
राम की याद दिलाऊँ मैं।
देश-धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊँ मैं।।

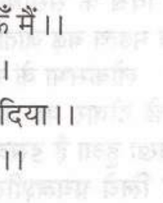

-पं. नन्दलाल निर्भय, ''पत्रकार''
ग्राम-बहीन (पलवल), हरियाणा,
चलभाष-०९८१३८४५७७४

देश की रक्षा कौन करेगा?

-रामफल सिंह आर्य
महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)
चलभाष-०९४१८४७७७१४

जब हम छोटे बच्चे होते थे तो विद्यालय में एक जयघोष बुलवाया करते थे-''**देश की रक्षा कौन करेगा ? हम करेगें, हम करेंगे।**'' हम बड़े जोश एवं उत्साह में भरकर इसे बोला करते थे। हमारे अध्यापक लोग सामूहिक प्रार्थना के उपरान्त इसे बुलवाते थे। समय-समय पर इस बारे में बड़े प्रेरणादायक वचनों के द्वारा हमें सम्बोधित भी किया करते थे। जब भी विद्यालय में कोई उत्सव या कोई समारोह होता तो देशभक्ति गीत ही गाये जाते थे। हमारे समवयस्कों को स्मरण होगा, उन दिनों जो गीत चलते थे,

'नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ,
बोलो मेरे संग जय-हिन्द-२'.....।
'ना किसी से जमी मांगे न मांगे खजाना,
अपनी रक्षा आप करें सीखें तलवार चलाना'.....।
'आओं बच्चों तुम्हें दिखायें, झांकी हिन्दुस्तान की,
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की'.....।

देश प्रेम का जज्बा

आदि-२ अनेक गीत ऐसे थे जो बच्चे तो बच्चे, बड़ों के मन पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ जाते थे। उन दिनों आजकल की भांति विद्यालयों में फिल्मों के प्रेम गीत, नाच-गाने के गीत गाना-यह तो कोई सोच भी नहीं सकता था। उस वातावरण का प्रभाव यह था कि उस समय भ्रष्टाचार बहुत कम था, बड़े-बड़े घोटालों का तो नाम भी न था। लोग यह विचार करते थे कि यदि किसी को पता चल गया या किसी ने देख लिया तो कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रह जायेंगे। गाँव की एक बेटी को पूरा गाँव अपनी ही बहन-बेटी समझता था और उनकी ओर कोई दूषित दृष्टी से देखता था और किसी को पता चल जाता था तो उसको धिक्कारने वाले एक नहीं अपितु सैकड़ों हुआ करते थे। शराब खाने वालों, मांस खाने वालों, रिश्वत लेने वालों आदि से लोग घृणा किया करते थे। ऐसे कर्म लोग बड़े छुप-छुप कर, चुपके-चुपके किया करते थे। बच्चों में शुरू से श्रेष्ठ विचार, सदाचार श्रेष्ठ संस्कार देने का कार्य प्राय: माता-पिता एवं अध्यापकों की वरियता रहा करती थी। परन्तु धीरे-धीरे मानव बदला, समाज ने करवट ली पश्चिमी सभ्यता का संक्रमण हुआ, धन कमाने की आशा में कुछ भी कैसा भी कर्म करने की वृत्ति उत्पन्न हुई, अनुशासन का स्थान स्वेच्छाचारिता, उच्छृखंलता, कामुकता, नग्नता, नशाखोरी, व्यभिचार आदि ने ले लिया और सारे समाज का वातावरण दूषित हो गया, विषाक्त हो गया। मैंने जो ऊपर अपने विद्यालय की बातें लिखी है वह कोई बहुत पुरानी नहीं है लगभग ४०-४२ वर्ष पूर्व की है अर्थात् ६० के दशक एवं ७० के अर्धदशक की ही है। **मात्र चार-पाँच दशकों में ही इतना परिवर्तन हुआ देखकर आने वाले समय का अनुमान करके ही भय लगने लगता है। आखिर किस ओर जा रहे हैं हम ? कैसा समाज बना रहे हैं ? आने वाली सन्तानों के लिये क्या छोड़ कर जायेगें जिस पर वे गर्व कर सकेगें। क्या आदर्श होंगे उनके ? और प्रश्न आकर खड़ा हो जाता है कि देश की रक्षा कौन करेगा ?** यह जयघोष जब मन में आता है तो आज के परिवेश में यह अधूरा रह जाता है। इसका उत्तर, इसका दूसरा भाग मौन है। वहाँ एक सन्नाटा, एक अभाव दिखाई देता है। पहले यह एक जय घोष हुआ करता था, आज प्रश्न है। क्यों हम लोग इतने स्वार्थी हो गये हैं कि अपने से भिन्न कुछ देखना ही नहीं चाहते ? तब के वातावरण और आज के वातावरण की तुलना जब हम करने बैठते हैं, तो उस समय के वे अभाव, वे कष्ट, वे सीमित साधन, वह सादगी, आज की चकाचौंध पर, सुविधाओं पर, सुख-साधनों पर भारी पड़ती दिखाई देती है। यह ठीक है कि **हमने भौतिक उन्नति बहुत की। कच्चे मकानों के स्थान पर पक्के एवं बहुमंजिले भवन, सड़कें, सरपट भागती गाड़ियाँ, फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते बच्चे, मोबाईल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल आदि न जाने क्या-क्या आ गये हैं परन्तु बहुत कुछ ऐसा खो भी गया है जो बहुत आवश्यक था, छूटना नहीं चाहिये था।** वह क्या है आईये विचार करें। उसके लिये क्या कभी हम बैठ कर सोचते हैं? उसे स्थापित करने हेतु कोई कार्य करते हैं? कुछ समय का दान देते हैं? वे कौन से साधन हैं जो समाज को विकृत एवं विषाक्त कर रहे हैं। **समाज में हिंसा, चोरी, लूट, हत्या, बलात्कार, अनुशासन हीनता, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, अन्धविश्वास क्यों बढ़ रहा है ?** वैसे तो इसके बहुत सारे कारण हैं परन्तु हमने इन रोगों को कुछ बिन्दुओं में समेटने का प्रयास किया है। अवलोकन कीजिये -

१. पश्चिम की भोगवादी संस्कृति का अन्धानुकरण-

पश्चिम की यह संस्कृति वास्तव में संस्कृति न हो कर बहुत बड़ी विकृति है। क्योंकि संस्कृति तो सुधार, उत्थान, शान्ति का काम किया करती है, परन्तु यह विचारधारा इन गुणों का काम तमाम कर रही है। इनके स्थान पर भयंकर बिगाड़, पतन और अशान्ति को जन्म दे रही है। इसमें सबसे भयंकर दोष है स्वार्थ की प्रवृत्ति, अपने सुख के लिये यदि लाखों व्यक्तियों का भी गला काटने की आवश्यकता पड़े तो नि:संकोच काट डालना, योग्यतम की जय और आत्मा को न जानकर केवल शरीरिक स्तर पर जीना। इसकी तृप्ति जैसे भी हो सके करने में कोई भी कोर कसर शेष न रखना। हमारे देश ही नहीं अपितु संसार के अधिकतर देशों में जहाँ-जहाँ पश्चिम की इस भोगवादी विकृत संस्कृति ने पाँव पसारे वहाँ-वहाँ कलह, क्लेश, स्वेच्छाचारिता, कामुकता आदि दुर्गुण स्वयमेव आ गये। इस समय हम बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र की भूमिका में लिखे गये उन शब्दों को उल्लेखित करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं जो उन्होंने बड़ी वेदना के साथ लिखे थे।

पृष्ठ-२४ पर वे लिखते हैं कि ''**यूरोप अनार्ष ज्ञान का गुरू और प्रचारक है.........।** यूरोप! तूने प्रधानत: दो शिक्षाओं का सहारा लिया है। तूने विशेषत: दो सिद्धान्तों पर अपनी समाज प्रणाली और सभ्यता के जीवन की स्थिति और उन्नति स्थापित की है। इसमें पहला है कर्मोन्नति (Evolution) और दूसरा है योग्यतम की जय (Survival of the Fittest)। इन दोनों सिद्धान्तों के द्वारा तूने जो संसार का अनिष्ट किया है हम उसे कहना नहीं चाहते। योग्यतम की जय का नाम लेकर तू सहज ही दुर्बल के मुख से भोजन ग्रास निकाल लेता है, सैकड़ों मनुष्यों को अन्न से वंचित कर देता है, एक-एक करके सारी जाति को निगृहीत, पीड़ित और नि:सहाय कर देता है। जब तू

बिजली के प्रकाश से प्रकाशित कमरे में संगमरमर से मण्डित मेज के चारों ओर अर्धनग्ना सुन्दरियों को लेकर बैठता है, उस समय यदि तेरे भोजन, सुख और सम्भाषण के लिये दस मनुष्यों के भी सिर काटने की आवश्यकता हो तो अनायास ही तू उन्हें काट डालेगा, क्योंकि तेरी तो शिक्षा यही है कि योग्यतम की जय होती है। यूरोप! आसुरी व अनार्ष शिक्षा तेरे रोम-रोम में भरी हुई है। अपनी अतर्पणीय धन लालसा को पूरी करने के लिये तू एक दो नहीं, दस मनुष्य नहीं, सौ मनुष्य नहीं बल्कि बड़ी से बड़ी जाति को भी विध्वस्त कर डालता है। अपनी दुरनिवार्य भोग तृष्णा की तृप्ति के लिये तू केवल मनुष्यों को ही नहीं वरन् पशु-पक्षी और स्थावर-जंगम तक अस्थिर और अधीर कर डालता है। अपनी भोगविलास पिपासा की तृप्ति के लिये तू लाखों मनुष्यों के सुख और स्वतन्त्रता को सहज ही में हरण कर लेता है। तेरे कारण पृथ्वी सदा ही अस्थिर और कम्पायमान रहती है।

यूरोप! तेरे पदार्पण मात्र से ही शान्तिदेवी मुँह छिपाकर पलायन हो जाती है। भूमण्डल के जिस स्थल में तेरे कदम जाते हैं, जिस राज्य पर अधिकार हो जाता है वह स्थल और राज्य सुखशून्य और शान्तिशून्य हो जाता है। जिस स्थान पर तू अपनी जय पताका फहराता है उस स्थान में सौ प्रकार की विशृंखलता आकर उपस्थित हो जाती है। जिस देश में तेरे शिक्षा मन्दिर का द्वार खुलता है, उस देश को वंचना-प्रताड़णा, कपट और मुकद्दमेबाजी के जाल में फाँस लेता है। जिस-जिस स्थान में तेरे धूमरथ (रेल) का नाद प्रतिध्वनित होता है वहीं दुर्भिक्ष और अनावृष्टि पिशाचनी के डेरे लग जाते हैं। जिस भूमि में तेरे नहरों की जलधारा बहती है उस भूमि में नाना प्रकार की आधि-व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिस जनपद को तेरे कारखानों की चिमनियों से निकला धुआँ आच्छादित करता है वह जनपद भोगेच्छा का आकार बन जाता है, इससे अधिक हम क्या कहें?"

देखा आपने! पश्चिम ने संसार को क्या दिया है? वह विषाक्त विचारधारा जो कि सारे विश्व को विषैला बनाने के लिये अपनी विषैली वायु उगल रही है।

प्रिय पाठकवृन्द! आज समाज में जो समस्याएँ हैं उनमें से अधिकतर की जनक यह पश्चिमी विचारधारा ही है जो मनुष्य का सर्वस्व हरण करके उसे भोगोन्मुख कर देती है और कुछ भी सोच विचार करने योग्य छोड़ती ही नहीं है। ऐसा नहीं है कि हम भोग को बुरा मानते हैं परन्तु भारतीय संस्कृति में भोग का उद्देश्य या परिणाम था त्याग। गृहस्थाश्रम में भोगों को भोगा। किसलिए? उसके उपरान्त वानप्रस्थ लेकर त्याग करने के लिये। यह बात आज लोगों को हास्यास्पद लगती है। इसलिये कि हमारी मनोवृत्ति बदल गई है। हमारी सोच का मूल आधार/ढांचा लड़खड़ा गया है। हम कभी भोग से उपराम होना ही नहीं चाहते। नहीं तो यह कोई कठिन कार्य न था। इस भोगवृत्ति ने जो केवल इसी को जीवन का अन्तिम उद्देश्य समझती है मनुष्य में पाश्विक वृत्ति उत्पन्न कर दी है। ऐसे भोगों की कोई सीमा, कोई मर्यादा नहीं है। जब मनुष्य इनमें डूब जाता है तो वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता है। इसमें कुछ अधिक आनन्द नहीं आया कुछ नया चाहिये। अपनी पत्नि अब आकर्षक नहीं रही तो दूसरों की चाहिये। इसके पश्चात् कुँआरी चाहिये। फिर छोटी-छोटी बच्चियों तक पहुँच गया। सहमति से न सही बलात्कार ही सही। क्या यह अतिघृणित उच्छृखंल वृत्ति के वशीभूत होकर किये गये कार्य नहीं हैं। विचार करें! इस विचारधारा ने ऐसे भयानक रोगों को जन्म दिया है कि जिनसे आने वाला समाज भयंकर रूप से पीड़ित होकर कष्ट भोगेगा।

एक और भयंकर दोष जो भोगवादी संस्कृति का है वह है, नग्नता एवं कामुकता। कहाँ इस देश की वे महान् नारियाँ जिन्होंने पापियों के हाथों में पड़ने की अपेक्षा जौहर व्रत करना स्वीकार किया और कहाँ आज की यह फैशन की मारी हुई कामुकता की प्रतिमूर्ति। **शरीर के ऊपर से प्रतिदिन घटते हुए कपड़ों को आज प्रगतिशीलता का प्रमाण माना जाता है और अपने आपको Hot N Saxy कहलाने पर जिन्हें प्रसन्नता होती है, उन्हें बलात्कार पर आपत्ति क्यों?** जब भी इस विषय पर चर्चा होती है तो एक बात बड़े जोर-शोर से बोली जाती है कि समाज की मानसिकता बदलो। मानसिकता बदलेगी कैसे यह कोई नहीं बताता, हम तो ऐसे ही नग्न बन कर घूमेंगी पुरूष वर्ग अपनी मानसिकता बदले। क्या ऐसे ही अपराध रूक जायेंगे। बदलने की आवश्यकता क्या केवल पुरूषों को ही है? हम बलात्कारियों के घोर विरोधी हैं, उनके लिए कठोर से कठोर दण्ड के पक्षधर हैं। परन्तु क्या नारियों को कामुकता की मूर्ति बनकर घूमने से भी कोई रोकेगा कि नहीं। जगह-जगह अश्लील पोस्टर, विज्ञापन और कला के नाम पर देह-प्रदर्शन इसका भी कोई उपचार होना चाहिये या नहीं? **अश्लील फिल्मों में काम करने वालियों को आज 'हीरोईन' के नाम से जाना जाता है। हीरो का अर्थ है योद्धा, नेता, अग्रता से कार्य करने वाला।** हीरोईन का अर्थ इन्हीं भावों से युक्त स्त्रीलिंग हुआ। फिर क्या ये लक्षण उन तथाकथित हीरोईन में घटते हैं? चलो यह भी माना कि उन्हें तो यह सब करने के लिए मोटी धनराशि मिलती है, ये जो गलियों बाजारों एवं घरों में उनकी प्रतिकृति बन कर घूमती हैं उन्हें क्या मिलता है? विद्यालय में जाने वाली बच्चियाँ भी यदि ब्यूटी पार्लर जाकर सजने-सँवरने का कार्य करती है तो किसे दिखाने के लिये? देखो! जब हम कोई भी कार्य ऐसा करते हैं जिसमें स्वेच्छाचार भरा हुआ हो तो उसके परिणाम भी भुगतने के लिये तैयार रहना चाहिये। अपना आचरण सुधारने की अपेक्षा हम परिणाम से बचना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हमारे उपरोक्त कथन से कई प्रगतिवादियों के विचारों को धक्का पहुँचेगा परन्तु सत्य तो सत्य है। वह किसी को बुरा लगे या अच्छा। **खेद है कि आज बुरे कार्य करने वाले बुरे नहीं हैं, बुरे वे हैं जो बुरे को बुरा कहते हैं।**

भोगवादी स्वेच्छाचार का एक भाग नशा है। शराब, अफीम, स्मैक, ब्राऊन शूगर, सुलफा तथा अन्य ड्रग्स जो कि लेने वाले की सोचने समझने की शक्ति समाप्त करके उसे भयानक से भयानक कर्म करने के लिये विवश कर देते हैं, यह प्रवृत्ति कहाँ से जागी? स्वेच्छाचार से। **खाओ, पीओ और ऐश करो की भावना यह कहाँ से आई? भोग की इच्छा से। अनेकों असाध्य एवं भयंकर रोगों का जन्म कहाँ से हुआ? भोग की विचारधारा से। क्या आप यह आशा कर सकते हैं कि फैशन एवं नशों में डूबे हुए, कामुकता एवं नग्नता को उन्नति मानने वाले, अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को नोंच कर खाने वाले, सदैव दूसरों के धन, स्त्री एवं सम्पत्ति पर कुदृष्टि रखने वाले, आतंकियों का साथ देने वाले इस देश की कभी रक्षा कर पायेगें? भूल जाईये।**

२. भौतिकता की अन्धी दौड़ -

आज हमारे समाज का बहुत कुछ व्यापारीकरण तो हो चुका है जो धीरे-धीरे सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहा है। इसी दौड़ में धन कमाना ही मुख्य उद्देश्य हो गया फिर उसके लिए भले ही हमें कोई भी विधि अपनानी पड़े। धन आ

गया तो बस सब कुछ मिल गया, सारे सुख उपलब्ध हो गये। यह ठीक है कि धन की अपनी महत्ता है, धन से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं परन्तु केवल धन ही हो और वह भी अनुचित ढंग से कमाया जाये तो भी वह सुख देने वाला नहीं हो सकता। **हमारे देश में धन कमाया जाता था सबसे पहले देश और धर्म की उन्नति के लिए, दान के लिए और तीसरे स्थान पर आता था भोग के लिए। धन कमाने के साधन भी श्रेष्ठ एवं धार्मिक होने आवश्यक थे।** एक छोटा सा उदाहरण आपके समक्ष रख रहा हूँ। गर्मियों में यहाँ स्थान-स्थान पर ठण्डे पानी की **'प्याऊ'** लगाई जाती थी जहाँ पर लोग स्वेच्छा से, सेवा भाव से पानी पिलाने बैठते थे। कई स्थानों पर यह कार्य पूर्ण सेवा भावना से यूक्त होता था और कई स्थानों पर पानी पिलाने वालों को कुछ आर्थिक सहायता भी लोग दे दिया करते थे। यह तो थी हमारी दान एवं सेवा की वृत्ति अब इसका नया रूप बन गया। पानी बोतल में भरकर बेचा जाने लगा। दोनों का अन्तर आपको समझ में आ रहा है ना! पानी तो दोनों पिला रहे हैं लेकिन भावना में दोनों के अन्तर है। **कुछ वर्ष पहले 'वर्ल्ड बैंक' ने यह कहा था कि हम भारत को जो धन दे रहे हैं उसका उपयोग सार्वजनिक 'हेण्डपम्प' लगाने के लिए नहीं किया जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि हमारे द्वारा प्रदत्त राशि का कई गुणा बढ़कर हमें वापिस आना चाहिये। उसका मानवता से कोई लेना देना नहीं है।**

धन कमाने की लालसा के प्रयत्न में हम आज अपने बच्चों तक की चिन्ता किये बिना दिन रात भाग रहे हैं। न माता-पिता के लिए समय है, न बच्चों के लिए। प्रात:काल से ही पति एवं पत्नि दोनों की दोड़ शुरू होती है सांयकाल को देर से घर पहुँचते हैं। बच्चे या तो नौकरों के पास रहते हैं या अकेले। दोनों ही परिस्थितियाँ घातक हैं। नौकरों के द्वारा कई बार भयानक शोषण यहाँ तक कि उनके द्वारा व्यांभिचार आदि भी देखा जाता है और नहीं तो कम से कम वे दुश्चरित्र और व्यसनी तो हो ही जाते हैं। जो वास्तविक धन था उससे तो हाथ धो बैठे और कागज के टुकड़ों को जान से अधिक प्यारा मान रहे हैं। घर पर टी.वी. है, बच्चे अकेले हैं फिर जो उनको पसन्द आता है देखें। बिगड़ने के लिये पूरा क्षेत्र खुला पड़ा है। बच्चों की सभी उचित अनुचित मांगें पूरी करके माता-पिता यह समझते हैं कि वे उन्हें बहुत प्यार कर रहे हैं, यह नहीं सोचते की उनका विनाश कर रहे हैं। **मोबाईल, बाईक और 'मित्रता'** ने आज कितने युवकों एवं युवतियों का विनाश कर डाला है यह अनुमान तो आंकड़ों से ही पता चलेगा।

मानव जीवन के जो चार उद्देश्य हमारे महान् ऋषियों ने निश्चित किये थे। वे हैं-**धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।** इस समय तो दो बिल्कुल विस्मृत हो चुके हैं अर्थात् धर्म एवं मोक्ष को छोड़ कर केवल अर्थ एवं काम को ही मुख्य मान रहे हैं। **धन कमाईये परन्तु धर्मपूर्वक, तभी वह श्रेष्ठ फलदायक होता है। धन के लिए जो हाहाकार पश्चिम में मचा है, वही यहाँ पर मच गया इसलिए सब जगह रिश्वत, भ्रष्टाचार एवं घोटाले ही घोटाले हैं। इतने से जब लोगों को सन्तोष न हुआ तो यहाँ का धन लूट कर विदेशों के बैंकों में जा भरा।** क्या इस प्रकार का धन सुख देने वाला हो सकता है? कदापि नहीं। क्या इस प्रकार से देश की रक्षा हो पायेगी? कदापि नहीं। **प्राचीन काल में चारों वर्णों में से केवल दो वर्ण क्षत्रिय एवं वैश्य और इनमें भी मुख्य रूप से वैश्य धन कमाने का कार्य किया करते थे और चारों आश्रमों में से केवल गृहस्थ ही कमाता था। फिर भी यह देश विश्व का गुरू और सोने की चिड़िया कहलाता था परन्तु आज सभी वर्ण, सभी आश्रमी और परिवार के सदस्य कमाते हैं फिर भी पूरा नहीं पड़ता। धन की यह कैसी दौड़ है?**

३. दोषयुक्त शिक्षा पद्धति -

समाज के बिगड़ने का यह तीसरा बहुत बड़ा कारण है। शिक्षा ही किसी राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी हुआ करती है, जिसके सहारे राष्ट्र आगे बढ़ता है। **शिक्षा केवल कुछ पुस्तकें पढ़ लेने, डिग्रियाँ प्राप्त कर लेने या कुछ कमाने योग्य होकर किसी नौकरी को प्राप्त कर लेने का नाम नहीं है। शिक्षा राष्ट्र निर्माण का वह साधन है जिसके द्वारा हम एक सूत्र में अनुशासन पूर्वक बंधते हैं।** यह केवल मात्र कुछ सूचनाएँ इकट्ठी कर लेने का नाम नहीं है अपितु एक ऐसा पवित्र एवं श्रेष्ठ साधन है जो यह सिखाता है कि संसार में सभी हमारे भाई-बन्धु हैं, हमें सभी के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिये। महर्षि दयानन्द के शब्दों में **''जिससे विद्या, सभ्यता, जितेन्द्रियता एवं सुशीलता आदि गुणों की वृद्धि होकर अविद्या आदि दोष छूटें, उसे शिक्षा कहते हैं''।** यह एक ऐसी कसौटी है जिस पर जाँच परख करने के उपरान्त अपनाया गया साधन समाज का महान् कल्याण करने वाला होगा। जिसमें दीक्षित हुए स्नातक वास्तव में राष्ट्र के भक्त एवं उसके लिए बलिदान होने वाले बनेगें। आप स्वयं जाँच करके देख लें कि क्या आज की शिक्षा उपरोक्त मन्त्र पर खरी उतरती है या नहीं? आज न तो यह परिभाषा शिक्षाविदों को पता है, न शिक्षकों को, न देश के भाग्य विधाताओं को। जब इन्हीं को पता नहीं तो फिर बेचारे पढ़ने वालों को तो पता ही क्या होगी?

आधुनिक शिक्षा पद्धति में यह भयानक दोष है कि वह न तो नैतिक उत्थान के बारे में कुछ कहती है, न देशभक्ति के बारे में और न ही व्यक्ति को सभ्य बनाती है। क्या आप देश के किसी भी महाविद्यालय का नाम बता सकते हैं जहाँ पर ब्रह्मचर्य, चरित्रनिर्माण, देशभक्ति या ईश्वरभक्ति की शिक्षा दी जाती हो। यदि कोई कहे कि वह ब्रह्मचारी है तो उसका उपहास उड़ाया जाता है। फिर किस आधार पर हम आने वाले समय में सुनहरे स्वप्न देखने का साहस कर सकते हैं? विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी तो **येन केन प्रकारेण** कमा सकती है परन्तु राष्ट्र का निर्माण या रक्षा........ यह तो बहुत दूर की बात है। शिक्षा आज व्यवसाय बन चुका है, ऐसा व्यवसाय जिसमें केवल लाभ ही लाभ है हानि कुछ भी नहीं है। यह पद्धति अत्यन्त दोषयुक्त है। इसका प्रमाण एवं परिणाम दोनों आपके सामने हैं। किसी भी महाविद्यालय में चले जाईये कुछ नहीं पता कि वहाँ कब जिन्दाबाद मुर्दाबाद के नारे लग जायें, कब तोड़-फोड़ हो जाये, कब आग लग जाये, कब अध्यापकों का अपमान हो जाये, कितने अनैतिक कार्य वहाँ पर मिल जायें। नशा, चोरी, लड़ाई-झगड़ा, लड़कियों से दुर्व्यवहार एक परीक्षण करके देख लेना **किसी महाविद्यालय में जाकर वहाँ पढ़ने वाले लड़कों से पूछ कर देख लेना कि ये लड़कियाँ जो तुम्हारे साथ पढ़ती हैं, तुम्हारी क्या लगती हैं? उत्तर आपको चौंकाने वाले होंगे। क्या इसलिये विद्यालय जाते हैं बच्चे? क्या आपकी प्राचीन गौरवमयी परम्पराओं की रक्षा हो रही है? क्या आपकी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा हो रही है?** यदि नहीं तो फिर

किस आधार पर यह स्वप्न देखते हो कि वहाँ से राष्ट्र की रक्षा करने वाले निकलेगें। **लार्ड मैकाले के मानस पुत्रों से और भला क्या आशा की जा सकती है? कहाँ गुरू की एक आज्ञा पर नि:स्वार्थ भाव से सर्वस्व समर्पण करने की वह उदात्त भावना और कहाँ पग-पग पर शिक्षकों की पगड़ी उछालने की यह निकृष्ट भावना। जिन युवाओं के आदर्श नकली जीवन जीने वाले अभिनेता एवं अभिनेत्रियाँ हों, जिन्हें अपने संसार महापुरूषों के कार्य तो छोड़ो, नाम तक पता नहीं, जिनको स्वेच्छाचार अपनाने के अतिरिक्त और कुछ भी न दिखता हो वे भला देश के बारे में क्या सोचेगें?**

४. योग्य एवं श्रेष्ठ उपदेशकों का अभाव

समाज का यह ऐसा वर्ग हुआ करता था जो कि एक चिकित्सक का कार्य किया करता था। बिना किसी पक्षपात, बिना किसी भेदभाव, बिना किसी लोभ-लालच सबके हित को ध्यान में रखकर सत्य एवं हितकारक वचनों द्वारा समाज के रोगों (दुर्गुणों, दुर्व्यसनों एवं आसुरी भावों) को दूर करने का कार्य करते थे। **शिष्यों एवं अनुयाइयों की संख्या बढ़ाने पर नहीं अपितु उन्हें आचार व्यवहार वाला बनाने पर वे अधिक बल दिया करते थे।** अशुद्ध आचार विचार वाला छली, कपटी एवं दुर्गुणी व्यक्ति भले ही धनी होकर उन्हें दानादि देने वाला क्यों न हो उसे भी दुत्कार दिया जाता था, फटकार दिया जाता था। इसके स्थान पर जब उपदेशक लोगों ने सत्य कहकर चिकनी-चुपड़ी बातों के द्वारा लोगों को बहलाना शुरू कर दिया तो समाज में दोष बढ़ें। एक विषैली विचारधारा समाज में फैली कि भाई हम तो किसी की निन्दा, बुराई या खण्डन नहीं करते। हम सभी का मान सम्मान करते हैं। हम किसी को अपना विरोधी नहीं बनाना चाहते। इसका परिणाम यह हुआ की दुष्ट लोगों की बन आई।

आचरण तो अपना सुधारना नहीं, बस गुरु धारण कर लिया है। हम अमुक के चेले हैं, अमुक से गुरूमन्त्र लिया है। **आज टी.वी. पर महात्माओं की बड़ी लम्बी पंक्ति है। उनके चेला-चेली भी लाखों की संख्या में हैं। धर्म बढ़ रहा दिखता है परन्तु धार्मिकता कहीं देखने को नहीं मिलती। कैसा अन्धेरा है। स्पष्ट है कि कहीं न कहीं दोष है। हमें अच्छा व बढ़िया उपदेशक या गुरू कौन लगता है? जो वह बात बोलें जो कि हमें पसन्द है। अब अपनी कमियाँ कौन सुनना चाहता है? सब यही चाहते हैं कि मीठी-मीठी लुभावनी बातें हमें कहने वाले होने चाहिये। परिणाम आपके सामने हैं। समाज में दोषों की, बुराइयों की भरमार हो गई।** यह व्यवस्था तो ठीक नहीं है। इससे लोगों का भला होने के स्थान पर उनके धन का हरण, समय का नाश होने के साथ-साथ, अन्धकार, पाखण्ड, गुरुडम, शोषण एवं पापवृत्तियाँ ही बढ़ रही हैं। आज बुराई के विरोध में बोलने वालों को कहा जाता है कि ये तो खण्डन करते हैं, लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहे हैं। है ना आश्चर्य! जैसा हमने ऊपर लिखा, बुरे वे नहीं हैं जो बुरे काम करते हैं, **बुरे वे हैं जो बुरे को बुरा कह रहे हैं। यह भावना कहाँ से उत्पन्न हुई। पेटार्थी लोगों के चिकने-चुपड़े प्रचार से। जब उपदेशक लोग ही सत्य का प्रचार नहीं करेगें तो और कौन करेगा?** अमुक गुरु देखो कितना बढ़िया बोलता है, किसी का खण्डन नहीं करता, किसी की बुराई नहीं करता तो फिर ये लोग क्यों कर रहे हैं? हर व्यक्ति अपनी विचारधारा अपनाने के लिए, अपना जीवन कैसे भी जीने के लिए स्वतन्त्र है। इससे किसी को क्या लेना देना। सत्य है भाई! हर व्यक्ति स्वतन्त्र है तो क्या चोर, डाकू, लुटेरे, हत्यारे, बलात्कारी आदि भी स्वतन्त्र हैं? उन्हें भी अपना जीवन अपने ढंग से जीने दो। कितना भ्रामक विचार है यह। स्वतन्त्र तो वे हैं, परन्तु स्वतन्त्रता की कुछ सीमा है उसका अनुचित अर्थ मत निकालिये। स्मरण रखिये कि आपका कोई भी वह कार्य, (चाहे वह कितना ही व्यक्तिगत क्यों न हो) जिसका विपरीत प्रभाव समाज पर पड़ता है, आपके आस-पड़ौस पर पड़ता है कभी भी न तो स्वतन्त्रता की परिधि में आता है और न ही व्यक्तिगत हो सकता है। जो कोई भी आपको बुराई के बारे में सचेत करता है, सावधान करता है, छोड़ने के लिये कहता है, उसे अपना मित्र जानिये। वही सच्चा गुरु, सच्चा उपदेशक कहलाने के योग्य है।

उपरोक्त लेख में हमने बहुत ही सामान्य सी बाते लिखी हैं जो आज प्राय: घर-घर की कहानी बन चुकी है और प्रयास किया है कि बहुत सी बातों को ही एक बिन्दु के नीचे सम्मिलित कर लिया जाये। इसके अतिरिक्त और भी बहुत बाते हैं। जो समाज के विघटन का कारण हो सकती हैं।

ये तो रोग हुए। अब इसका उपचार क्या है? अति संक्षेप में इस पर लिखते हैं। माता-पिता को पहले स्वयं सावधान रह कर अपने दोषों को दूर करना पड़ेगा। किसी भी विचार को, केवल आँखें बन्द करके मत अपनाईये। उस पर पूर्ण रूप से उहा-पोह कीजिये। यह मत देखिये कि पड़ौसी तो ऐसे करता है, उसके बच्चे तो ऐसे-ऐसे करते हैं। उन्हें मत देखिये! स्वयं को देखिये। **अपने घर में बच्चों को श्रेष्ठ व्यवहार सिखाईये। उन्हें सभ्य बनाईये। घर में वैदिक साहित्य यथा-वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ रखिये। विद्वानों के लिखे हुए विवेचनात्मक ग्रन्थों को रखें। यह नियम बना लें कि प्रतिदिन कम से कम ५-७ पृष्ठ बच्चों के साथ बैठकर पढ़ेगें। उन्हें शुद्ध भारतीय दर्शन, संस्कृति की शिक्षा देंगें।** समय-समय पर लगने वाले विभिन्न चरित्रनिर्माण शिविरों में लेकर जायेगें। रविवार को बिस्तर पर पड़े-पड़े पेट को ठूंसने एवं टी.वी. पर ऊल-जलूल कार्यक्रम देखने के स्थान पर पास में स्थित आर्य समाज के सत्संग में लेकर जाया करेगें। अपने प्राचीन महान् योद्धाओं, ऋषियों, तपस्वियों एवं त्यागी संन्यासियों के जीवन के बारे में उन्हें बतायेगें।

धन का उपयोग केवल अपने लिए न करके देश एवं धर्म का कार्य करने वाली संस्थाओं, असहाय भूखे-नंगों, अनाथों को यथा शक्ति दान देने के लिये भी यत्न करेगें। समय-समय पर अपने घर पर भी श्रेष्ठ विद्वानों को आमन्त्रित करके उनसे अपनी शंकाओं का समाधान करेगें। बच्चों पर कड़ी दृष्टि रख कर उनके गुरु बन कर कार्य करेंगे। धन का महत्व है परन्तु वह सन्तान से बड़ा नहीं है। हमारी सन्तानें ही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इस सूत्र को कभी मत भूलिये। एक योग्य सन्तान राष्ट्र को अर्पित करना सौ पूण्यों से अधिक फलदायक है। समय-समय पर विचार गोष्ठियाँ, सेमिनार शिक्षा का स्तर सुधारने पर आयोजित कीजिये। इसमें वैदिक विद्वानों के साथ-साथ शिक्षाविदों एवं नेताओं को भी आमन्त्रित कीजिये। **जो लोग ईश्वर के नाम पर धर्म के नाम पर, स्वयं को आपके और ईश्वर के बीच में एजेन्ट बना कर ला रहे हैं उनसे दूर रहिये। ईश्वर का आपके साथ सीधा एवं घनिष्ट सम्बन्ध है। गुरु वह है जो आपके आचरण को सुधारे न कि अपना उल्लू सीधा करे। जो ईश्वर के स्थान पर अपने को पुजवाता है वह तो ईश्वर का शत्रु है निश्चय जानिये।**

आगे आने वाला समय वास्तव में बड़ा भयानक है यदि हम सावधान नहीं हुए तो बहुत कष्ट उठाने पड़ेंगे, दु:ख भोगने पड़ेंगे। अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि आओ! मिलकर विचार करें, पहले हम आप सुधरें फिर सबका सुधार करें। ●

अंग्रेजी भाषा की दासता कब तक?

-शिवकुमार गोयल

हमें विदेशी अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुए पूरे ६६ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन हम अभी तक खुद को विदेशी भाषा अंग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं कर पाए हैं। अंग्रेजी भाषा की मानसिक दासता हमें बुरी तरह जकड़े हुए है। हम अंग्रेजी को अंतर्राष्ट्रीय व सबसे समृद्ध होने का भ्रम पाले हुए अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य प्रान्तीय भारतीय भाषाओं की घोर उपेक्षा करने में भी नहीं हिचकिचाते।

१४ सितम्बर १९४९ को राष्ट्रभाषा हिन्दी को भारत की कामकाज की भाषा घोषित किया गया था। हमारे स्वाधीनता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी, महामना पं. मदन मोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन जैसी अनेकों विभूतियों ने देश के स्वाधीन होते ही अंग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद दिए जाने की उद्घोषणा की थी।

हिन्दी भाषी राज्य यदि राष्ट्रभाषा के महत्व को समझकर अपने यहां तुरन्त हिन्दी को उपयुक्त स्थान देते व अंग्रेजी के मोह व दासता से मुक्ति पा जाते तो अन्य राज्यों को भी इसके लिए प्रेरित किया जा सकता था। टण्डन जी, निराला जी, पं. श्री नारायण चतुर्वेदी, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी आदि ने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी की घाल मेल का प्रबल विरोध करके हिन्दी को विकृत किए जाने के षड्यन्त्र को असफल किया था।

ऐसे बढ़ा अंग्रेजी का दबदबा

हिन्दी भाषी राज्यों के लागों को लगा कि अंग्रेजी भाषा इस देश से जाएगी नहीं। अत: उच्च नौकरियों के लालच में अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने की प्राथमिकता देनी जारी रखी। अंग्रेजी भाषा का दबदबा बढ़ता ही गया व युवा पीढ़ी राष्ट्रभाषा हिन्दी की जगह विदेशी भाषा अंग्रेजी को प्रोत्साहन देने लगी। इसी के साथ विवाह, मुंडन संस्कार, नामकरण संस्कार, गृह प्रवेश जैसे सांस्कृतिक व धार्मिक संस्कारों के कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी की जगह अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित कराने में हम गौरव का अनुभव करने लगे। जो माता-पिता व परिवारजन अंग्रेजी का एक शब्द नहीं पढ़ सकते, वे भी समझने लगे कि अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवाने में उनके परिवार की शान बढ़ेगी, लोगों पर रौब जमेगा।

हिन्दी भाषा क्षेत्रों में व्यापारी, दुकानदार तक अपनी फर्मो की दुकानों के नामपट्ट अंग्रेजी में लिखवाने में शान समझने लगे। फिर भला हिन्दी भाषी राज्यों के लोगों से हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित सम्मान दिए जाने की आशा कैसे कर सकते हैं?

धर्माचार्य भी शिकार

भारत धर्म प्राण देश है। हमारे धर्म, संस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम संस्कृत व हिन्दी भाषा है, लेकिन हमारे सन्त, महात्मा व धर्माचार्य भी अंग्रेजी भाषा की मानसिक दासता के शिकार होते गए।

१९७० में मैं दिल्ली में हिन्दी संवाद समिति '**हिन्दुस्थान समाचार**' में सेवारत था। रामलीला के दिन थे। दिल्ली की एक बड़ी रामलीला समिति के आयोजकों ने हमारे कार्यालय को प्रेस सम्मेलन का अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र भेजा। मैंने एक धार्मिक समारोह का पत्र विदेशी भाषा में भेजे जाने के विरुद्ध समाचार प्रसारित कर दिया। देश भर के पत्रों में वह प्रमुखता से छपा। बाद में आयोजकों को क्षमा तक मांगनी पड़ी। मेरा कहने का आशय केवल यह है कि **हमारे हिन्दी भाषी क्षेत्रों की धार्मिक व सामाजिक संस्थाएं भी विदेशी भाषा व विदेशी विकृतियों की दासता से ग्रसित हो चुकी हैं, फिर स्वदेशी व स्वभाषा की पुनर्स्थापना की किससे आशा की जा सकती है?**

लेखक शिवकुमार गोयल-एक परिचय

सुविख्यात पत्रकार तथा लेखक श्री शिवकुमार गोयल का ७६ वर्ष की आयु में २९ अप्रैल २०१४ को पिलखुवा (जनपद-गाजियाबाद) में निधन हो गया। आपका जन्म ३१ अक्टूबर १९३८ को पिलखुवा कस्बे में हुआ था। पैतृक संस्कारों से मिली पौराणिक आस्था में विश्वास रखते हुए भी आप आर्यसमाज के प्रति आदर का भाव रखते थे और मानते थे कि हिन्दुत्व की रक्षा आर्यसमाज के कारण है। आपने लगभग छ: दशकों तक पत्रकारीता के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये, वहाँ पचास के लगभग ग्रन्थों का प्रणयन तथा अनेकों अभिनन्दन, स्मृति-ग्रन्थों का सम्पादन किया। आपने **भारतीयता के प्रबुद्ध प्रहरी पं. प्रकाशवीर शास्त्री, मैं सावरकर बोल रहा हूँ, हिमालय के प्रहरी, क्रान्तिकारी आन्दोलन, आजादी के दीप, शहीदों की गाथायें, धर्मनिरपेक्षा के घातक परिणाम, चुनौतियों से घिरा भारत** आदि राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत पुस्तकों की रचना की।

'तात्या टोपे नगर' को टी.टी. नगर और 'महाराणा प्रताप नगर' को एम.पी. नगर बनाया

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्वरूप को भी नष्ट किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में १८५७ के महान् स्वाधीनता सेनानी तात्या टोपे का बहुत आदर है। वहां के कुछ राष्ट्रप्रेमियों ने वर्षों के प्रयास के बाद भोपाल व जबलपुर में **'तात्या टोपे नगर'** नाम की कॉलोनियां बसाइं। अंग्रेजी के मानसिक गुलामों ने **'तात्या टोपे नगर'** का नाम **टी.टी. नगर** कर डाला। आप भोपाल जाएं तो स्कूटर या रिक्शा वाला आपको तात्या टोपे नगर पहुंचाने को तैयार नहीं होगा, लेकिन टी.टी. नगर कहते ही वह समझ जाएगा कि आप कहां जाना चाहते हैं। दिल्ली के **रामकृष्ण पुरम को आर.के. पुरम** के नाम से जाना जाता है। महात्मा गांधी मार्ग का नाम एम.जी. रोड़ कर दिया गया। **(भोपाल में ही 'महाराणा प्रताप' कहीं खो गयें हैं उनका स्थान एम.पी नगर ने ले लिया है-सम्पादक)**

अंग्रेजी के निमन्त्रणों का बहिष्कार करें

हिन्दी भाषी राज्यों के निवासियों को दृढ़-संकल्प लेना चाहिए कि वे अपने कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग बिल्कुल नहीं करेंगे। विवाह संस्कार व अन्य धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंग्रेजी में मिलने वाले निमन्त्रण पत्रों का बहिष्कार करेंगे। मैंने १९७० में हिन्दी सेवी सांसद श्री प्रकाशवीर शास्त्री के समक्ष संकल्प लिया था कि मैं अंग्रेजी में मिलने वाले किसी भी निमन्त्रण पत्र के कार्यक्रम में शामिल नहीं होऊंगा। मैं आज तक उसका पालन कर रहा हूं। जब कोई निकट का रिश्तेदार भी अंग्रेजी में निमन्त्रण भेजता है तो उसे आने से साफ मना कर देता हूं। मेरठ

के साहित्यिक विभूति स्व. विश्वंभर सहाय प्रेमी जी के सुपुत्र श्री रत्नकुमार प्रेमी, मेरठ में प्रेमी मुद्रणालय के संचालक थे। उन्होंने संकल्प लिया था कि वे अपने मुद्रणालय में सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों के अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र नहीं छापेंगे। ग्राहक अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवाने आता, वे मातृभाषा के प्रति उसका सम्मान जागृत करते। दुराग्रह करने पर विनम्रता पूर्वक कह देते **'मैं अंग्रेजी में नहीं छाप पाऊंगा।'** आज रत्नकुमार प्रेमी जैसे हिन्दी पुरोधा की आवश्यकता है, जो अंग्रेजी की मानसिक दासता को तार-तार कर राष्ट्रभाषा के प्रति स्वाभिमान की भावना जागृत कर सके।

हमें अपने देशवासियों के इस भ्रम को तोड़ना होगा कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है व उसके बिना भारतीय ज्ञान-विज्ञान में अधकचरे रह जाएंगे। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अपने दायित्व को पूर्ण करने का संकल्प लेना होगा। ●

हर वर्ष १४ सितम्बर को
हम हिन्दी दिवस मनाते हैं
एक फर्ज पूरा करते हैं
मात्र एक रस्म निभाते हैं!

हर संस्थान में राजभाषा प्रकोष्ठ
अथवा विभाग होना अनिवार्य है
आंकड़े जुटाना ऊपर भेजना
पत्रिका प्रकाशित करना
प्रतियोगिताएँ आयोजित करना
पुरस्कार बाँटना
हिन्दी समितियों का आतिथ्य सत्कार
जिसका मुख्य कार्य है।
वाहवाही होती है पीठें थपथपायी जाती हैं
हिन्दी के नाम पर
करोड़ो की बंदरबाँट हो जाती है।
मगर प्रतिबद्धता और गम्भीरता
कहीं देखने में नहीं आती है!
बेचारी हिन्दी जस की तस
रह जाती है।
छः दशकों से अधिक के लम्बे समय से
हम इस भाँति
अपने आप को बहलाते आ रहे हैं।
कि हिन्दी के प्रयोग प्रसार-प्रचार में
हम निरन्तर आगे बढ़ते जा रहे हैं!

-ओमप्रकाश बजाज
बी-२, गगन विहार, जबलपुर
चलभाष: ९८२६४९६९७५

पृ. १६ का शेष **महर्षि दयानन्द ने....**

'जब तक एक मत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' -दशम समुल्लास

'....परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों म व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरूषों का काम है।' -अष्टम समुल्लास

'परमात्मा सबके मन में सत्य मत का ऐसा अंकुर डाले कि जिससे मिथ्या मत शीघ्र ही प्रलय को प्राप्त हो। इसमें सब विद्वान् लोग विचार कर विरोधभाव छोड़ के (अविरूद्ध मत के स्वीकार से सब जने मिलकर सबके) आनन्द को बढ़ावें।' -दशम समुल्लास

क्या महर्षि दयानन्द अपने मिशन में सफल हुए? हमारा विचार है कि महर्षि दयानन्द ने वेदों पर आधारित सिद्धान्तों, मान्यताओं व विचारों का प्रचार किया। वह प्रत्येक व्यक्ति, विद्वान् व संस्थाओं के अग्रणीय पुरूषों से मौखिक वार्ता, शंका समाधान, शास्त्रार्थ करने में तत्पर रहें और उनमें सफल रहें। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, वेद भाष्य आदि का प्रणयन किया जो विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। उनके शिष्य भी अहर्निश वेदों व उनकी विचारधारा के समर्थन में उपयोगी एवं महत्वपूर्ण साहित्य के निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं। **हम समझते हैं कि ऋषि अपने मिशन में पूर्ण सफल रहे। सभी लोगों ने अपने प्रयोजनों, हित-अहित, अज्ञान, स्वार्थ आदि के कारण उनके विचारों को स्वीकार नहीं किया। कुछ भी हो असत्य अधिक समय तक ठहर नहीं सकता और सत्य तिरोहित नहीं किया जा सकता। अन्ततोगत्वा सभी को सत्य को स्वीकार करना ही होगा। सत्य को ग्रहण करना और असत्य को छोड़ना ही मानव धर्म है। हम अतीव भाग्यशाली हैं कि हमें वैदिक धर्म को अपनाने, उसे समझने, उस पर चलने व उसका प्रचार करने का कुछ अवसर मिला जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द को है। उनकी स्मृति को सादर प्रणाम एवं उन्हें श्रद्धांजलि।** ●

पृ. १३ का शेष **महर्षि यास्क द्वारा....**

आती? यदि स्थान कर्म गुण न होता तो पृथ्वी पर स्थान कैसे प्रकाशित होता? सूर्य रश्मियाँ जहाँ सीधे टकराती हैं वहाँ धूप बनती है तथा जिन स्थानों पर रश्मियाँ सीधे नहीं पहुँचती वहाँ भी कुछ स्थान प्रकाशित हो जाता है। यह सब स्थान कर्म गुण के कारण है। सूर्य रश्मियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान को नियमानुसार चली जाती हैं। यदि ऐसा न होता तो चाँद दिखायी न देता। यदि ऐसा न होता तो एक स्थान पर धूप तथा पास में ही अन्धेरा होता।

६. स्वधिति वनानाम् - आदित्य रश्मियों के वनन कर्म के कारण ही पौधों में रसाकर्षण की शक्ति होती है। पेड़-पौधे जड़ों से भूमि का रस खींचकर चोटी तक पहुँचाते हैं। इस तथ्य की आधुनिक विज्ञान में विभिन्न व्याख्याएँ हैं तथा मत भिन्नता है। इस रसाकर्षण शक्ति को पौधे सूर्य रश्मियों से ही प्राप्त करते हैं। पत्तियाँ रश्मियों की विद्यमानता में ही पर्णहरिम बनाती है। यदि सूर्य रश्मियाँ गायब हो जायें तो सारे वन गायब हो जायेंगे। सूर्य रश्मियों का पेड़-पौधों पर पड़ने वाला प्रभाव ही वनन कर्म है।

सोम अर्थात् सौर ऊर्जा सूर्य रश्मियों के रूप में ही सर्वत्र फैलती हैं तथा क्रिया करती हैं। ●

इतिहास की पुनरावृत्ति

निश्चयाचा महामेरु
बहुजनां साँ आधारु
अखण्डस्थितिचा
निर्धारु श्रीमंत योगी

संसद मंदिर को राष्ट्रभक्त प्रधानमंत्री का प्रणाम

छत्रपति शिवाजी ने शून्य से आरम्भ किया था। उनकी पुश्तैनी जागीर बंजर भूमि थी। वहाँ के लोग वनवासी मावलों की आजीविका लूटपाट थी, खेती करना उन्हें नहीं आता था। केन्द्र में मुगल सत्ता थी तो बीजापुर सुल्तान उनके सिर पर। उनके पिता शाहजी ने स्वयं को शिवाजी तथा उनकी माता जीजाबाई से पृथक कर रखा था। सब कुछ प्रतिकूल था, अनुकूल था तो उनका पुरुषार्थ तथा अक्षय ध्येयनिष्ठा। सत्वहीन आत्मविस्मृत हो चुके भारत का गौरव पुनः प्राप्त करना उनका ध्येय था। उन्होंने वनवासी असभ्य मावलों को सभ्य बनाया, स्वराज्य के सैनिकों के रूप में दीक्षित किया तथा उन्हें आत्म निर्भरता हेतु भूमि सुधार व कृषि कार्य में भी निपुण किया।

अब शिवाजी स्वयंभू राजा बन चुके थे। मुगलों के अत्याचार से पीड़ित जनता उन्हें लगान देने लगी। उन्होंने सैन्य संगठन किया, दुर्ग सहेजे। भगवान श्री कृष्ण की कूटनीति अपनाई, स्वराज्य का विस्तार किया। इन सभी घटनाओं के प्रकाश में राष्ट्र के प्रबुद्ध लोगों ने विचार किया - शिवाजी का विधिवत् राज्याभिषेक होना चाहिए, जिससे जनता में स्वीकार्यता बढ़े तथा स्वराज्य के रथ की गति तीव्रतर हो सके। काशी के विद्वान् गंगाभट्ट आगे आये। जनता '**हमारा स्वराज्य**' तथा '**हमारा राजा**' कह सके इसलिए विचारपूर्वक, पूर्ण तैयारी के साथ **शिवा का विधिवत् राज्याभिषेक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी विक्रम सम्वत् १७३१, दिनांक ६ जून १६७४ को हुआ।** अंग्रेजों के राजदूत हेनरी आक्शिन्डन ने झुक कर महाराज को प्रणाम किया तथा उसने रत्नजड़ित अंगूठी महाराज को भेंट की। माता जीजा को प्रणाम कर शिवाजी ने कहा-**''आपका आशीर्वाद सफलीभूत हुआ।''**

अब शिवबा, छत्रपति शिवाजी महाराज थे, जिनकी राजमुद्रा पर अंकित था-**प्रतिपच्चंद्ररेखेव वर्धिष्णु विश्ववन्दिता,** ''प्रतिपदा के चन्द्रमा की रेखा के समान बढ़ने की इच्छा वाली यह विश्ववन्द्य मुद्रा लोक कल्याणार्थ शोभित है।'' मुद्रा में अंकित भावना के अनुसार महाराज स्थिर गति से पूर्ण जनकल्याणकारी परिवर्तन चाहते थे। इतिहासकार कहते हैं कि उन्होंने भाषा शुद्धि से प्रारंभ किया। राजकीय भाषा पर से विजातीय अरबी-फारसी शब्दों के आक्रमण को समाप्त कर संस्कृत शब्दों को प्रतिष्ठित करने हेतु विद्वान् पंडितो की मंडली से '**राजव्यवहार कोष**' सिद्ध करवाया। कहते हैं कि **इतिहास अपने को दोहराता है-२६ मई २०१४ को नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में जो कुछ हुआ वह इतिहास का दोहराना ही था।** यह न्यूनाधिक शिवाजी की कहानी का ही दोहराना है, इसलिए अनेक अतिमहत्वपूर्ण राष्ट्रीय महत्व के कार्यों के बीच राष्ट्रवाद की जड़ को

हर गाँव बढ़े, हर पौर सजे

समता सुजगे, कविता सुरचे, पशुता न बढ़े, जग जीवन में।
सब साथ बढ़ें ममता न घटे, महिमा न घटे इस भारत की।।
हर काम चले, हर द्वार खुले, शठता न बढ़े जन-मानस में।
हर साज बजे, हर गान सजे, हर मानव का मन शांत रहे।।
सब मीत मिलें, हर प्रीत खिलें, मधु ताल बजे सुर बीन बजे।
स्वर साधक हो, सुख-नाशक हो, सम भाव रहे सब के मन में।।
हर गाँव बढ़े, हर पौर सजे, समवाद पले इस भारत में।
मधुधार चले, चहुँ ओर बहे, रस पान करें समता पन में।।
लघुता न बढ़े, महता सुफले, जनता न चले प्रतिकूल पथे।
भय दूर हटे उस पार भगें, नव पाठ पढ़ें नव भारत में।।
दु:ख दर्द हटे सुख राज करें, धरती धन का सब मान करें।
जय देव कहें, जय मात कहें, जय शिव कहें, जय सत्य कहें।।
हर मानव का एक लक्ष्य बने, एक धर्म बने, एक कर्म बने।
प्रभु-मान करें श्रुति-गान करें, धर्म-राज बनें इस भारत में।।
नव राष्ट्र बढ़े स्वराज चले, नव गान चले नव माध्यम में।
नव छन्द चले दु:ख द्वन्द मिटे, नव राज चले इस भारत में।।

-शास्त्री दीनानाथ गौतम, पूर्व विधायक-टाण्डू
जिला-मण्डी, हिमाचल प्रदेश,दूरभाष- ०१९०५-२६६७२२

सींचने, शिक्षा के पाश्चात्यकरण के कारण क्षरित राष्ट्रभक्ति के भाव के पुनरुत्थान के उपक्रम के रूप में, जिससे देश में विकास को दिशा व स्थायित्व मिल सके। आज श्री नरेन्द्र मोदी के लिए भाषा शुद्धि से आरम्भ करने हेतु कुछ विचारणीय बिन्दु प्रस्तुत हैं-

१. भारत की राजभाषा संविधान स्वीकृत हिन्दी है अत: सभी हिन्दी भाषी प्रान्तीय सरकारों तथा केन्द्रीय मंत्रालयों में परस्पर पत्र व्यवहार अनिवार्यत: केवल हिन्दी में हो।

२. अहिन्दी प्रान्तीय सरकारों के साथ पत्र व्यवहार उनकी स्वीकृत प्रान्तीय भाषाओं में हो।

३. भारत में कार्यरत सभी विदेशी/स्वदेशी व्यापारिक प्रतिष्ठानों के साथ पत्र व्यवहार केन्द्र सरकार हिन्दी में ही करे तथा उनसे हिन्दी के पत्र ही स्वीकार करे।

४. सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में प्रान्तीय भाषाओं के अतिरिक्त हिन्दी तथा संस्कृत विषयों के उच्च शिक्षा की व्यवस्था हो क्योंकि अभी क्रमश: केवल ३५% तथा २५% केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में ही यह विषय अध्ययन करने वालों के लिए उपलब्ध हैं।

५. केन्द्रीय मंत्रीमण्डल के सदस्य अपने प्रान्तों में प्रान्तीय भाषाओं या सुविधानुसार हिन्दी में कार्यक्रमों में भाषण दें, अंग्रेजी में कभी नहीं। दिल्ली में होने वाले सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों में माननीय मंत्रीगण तथा अधिकारी हिन्दी में ही बोलें।

६. पूर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की अध्यक्षता वाली केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार परिषद् द्वारा हिन्दी को सरल (अंग्रेजीकरण) करने के निर्णय को सुधार कर हिन्दी को पुन: अपना सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया जाए।

७. दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रमों में पृष्ठभाग में News तथा D.D. आदि लिखा रहना, तुरन्त प्रभाव से बंद किया जाए तथा दूरदर्शन समाचार वाचकों की पोशाक में भारतीय परिवेश को अनिवार्य किया जाए।

८. सभी सार्वजनिक भवनों तथा नई योजनाओं का नामकरण पूर्ववत् केवल हिन्दी में हों।

पिछली सरकार द्वारा षड्यंत्रपूर्वक भारतीयता के मानदण्डों/प्रतीकों को ध्वस्त करने की चरम सीमा पार कर दी गई थी। भारत के भारत होने का कारण ह। स ास करने पर सरकार उतारू थी। अत: भारत की राष्ट्रभक्त जनता । प्रच ्ड बहुमत देकर राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा का भार भाजपा को सौंपा है, यह विश्वास श्री नरेन्द्र मोदी के अथक परिश्रम, सुदृढ़ तथा सम्यक् नेतृत्व के कारण उत्पन्न हुआ है। यह अवसर सरकार के लिए पूर्व सरकार द्वारा षड्यंत्रपूर्वक हर विभाग में किये गए छोटे दिखने वाले, किन्तु दीर्घकालिक दुष्प्रभाव डालने वाले प्रशासनिक आदेशों में सम्यक् परिवर्तन करने का है। इस हेतु संविधान संशोधन की आवश्यकता नहीं है, केवल पहल करने की आवश्यकता है।

आज जो लोग विदेशों में हिन्दी पढ़ रहे हैं वे हिन्दी का कोई भविष्य न होने से निराश हैं। पड़ौसी नेपाल में चीन व्यापार उद्योग बढ़ा रहा है, चीनी उद्यमी नौकरियों में चीनी भाषा जानने वाले को प्राथमिकता देते हैं अत: नेपाली युवक जो अभी तक हिन्दी को अत्यधिक महत्व देते थे, भारी संख्या में चीनी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं। सरकार द्वारा लिये गये ऊपर वर्णित निर्णयों से देश-विदेश में लाखों हिन्दी तथा संस्कृत विद्वानों की मांग सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रों में सृजित होगी। हिन्दी और संस्कृत रोजगार से जुड़ने के कारण अधिक पढ़ी जाएगी, अंग्रेजी का वर्चस्व स्वत: ही समाप्त हो जाएगा। अंग्रेजी पढ़ने की अनिवार्यता का मिथक समाप्त हो जाएगा। अंग्रेजी केवल हिन्दी को ही नहीं अपितु सभी प्रान्तीय भाषाओं को दबा रही है, परोक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत में हमारी संस्कृति वाहक राष्ट्रीय भाषा को दबाकर सांस्कृतिक प्रदूषण कर रही है। केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार परिषद् जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं का नामकरण केन्द्रीय भारतीय भाषा सलाहकार परिषद् करके इसके कार्यक्षेत्र का विस्तार किया जाए तथा भाषा संस्कृति के विद्वान् को इसका उपाध्यक्ष बनाकर केन्द्रीय मंत्री स्तर के अधिकारों से सम्पन्न किया जाए। भाषा संस्कृति की वाहक होती है, जब भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी के दबाव से मुक्त होंगी तो भारतीय संस्कृति में प्राणों का संचार होगा तथा भारतीय संस्कृति के विश्व संचार का मार्ग प्रशस्त होगा।

-डॉ. श्रीलाल ''नेत्र विशेषज्ञ''
सम्पादक-गीता स्वाध्याय, सोजत नगर, पाली (राज.)

छत्तीसगढ़ में खुदाई में मिली मुहर से वेद की प्राचीनता पुष्ट हुई।

सामवेद लिखी प्राचीन मुहर

दुर्ग के पास तरीघाट में २५०० साल पुरानी मुहरें मिली हैं। इस मुहर में सामवेद लिखा हुआ है। इससे इतिहास के कई सवालों के सुलझने की संभावना बताई जा रही है। मैसूर एपिग्राफिक डिपार्टमेंट के डायरेक्टर रविशंकर ने इसकी पुष्टि की है।

दुर्ग से ४० किलोमीटर दूर पाटन तहसील के तरीघाट में पिछले चार सालों से खुदाई चल रही है। अब तक यहाँ कई पुरातात्विक अवशेष मिले हैं। इसी कड़ी में हाल ही में मुहरें मिली, जिन पर सामवेद अंकित है। इन मुहरों की चौड़ाई ढाई से.मी. और लंबाई चार से.मी. है। ये कुषाण कालीन मुहर है। इसे रीडिंग के लिए मैसूर भेजा गया था। वहाँ के विशेषज्ञों ने इसके बारे में रिपोर्ट दी कि इसमें चार अक्षर और छह बिंदु हैं। चार अक्षरों में सामवेद लिखा हुआ है। लिपी ब्राम्ही और भाषा प्राकृत है। इससे वेदों के रचनाकाल से जुड़े विवादों पर विराम लग सकता है। गौरतलब है कि सामवेद पहला वेद माना जाता है। परन्तु अभी तक किसी भी वेद के पुरातात्विक प्रमाणित अवशेष नहीं मिले थे।

शक्ति के अभाव में विश्वास किसी काम का नहीं, विश्वास और शक्ति दोनों महान् कार्य करने के लिए अनिवार्य हैं। - सरदार वल्लभभाई पटेल

संस्कृत भाषा

–रमेशचन्द्र भाट
टेक्नीकल सुपरवाइजर-ए (ड्राईंग), तकनीकी सेवाएं
रा.प.वि.घ. ईकाई-३ एवं ४, रावतभाटा (राज.)
चलभाष-९४१३३५६७२८

संस्कृत का शाब्दिक अर्थ है संस्कारित यानी संस्कारवान्। संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा ही नहीं बल्कि संस्कारित व शास्त्रीय भाषा है अतः इसका नाम संस्कृत है। संस्कृत हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार की हिन्द-ईरानी शाखा की हिन्द-आर्य उपशाखा में शामिल है। ये आदिम-हिन्द-यूरोपीय भाषा से बहुत अधिक मेल खाती है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, उड़िया, बांग्ला, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली भी संस्कृत से ही व्युत्पन्न की जाती है। भारतीय संविधान की धारा ३४३, धारा ३४८(२) तथा ३५१ का सारांश यह है कि देवनागरी लिपि में लिखी और मूलतः संस्कृत से अपनी पारिभाषिक शब्दावली को लेने वाली हिन्दी राजभाषा है।

संस्कृत, विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक वेद की भाषा है इसलिये इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है। वेदों की रचना इसी भाषा में होने के कारण इसे वैदिक भाषा भी कहते हैं। इसकी प्राचीनता को ऋग्वेद के साथ जोड़ा जाता है। संस्कृत भाषा का प्रथम काव्य-ग्रन्थ ऋग्वेद को माना जाता है। ऋग्वेद की ऋचाओं में संस्कृत भाषा का लालित्य, व्याकरण, छंद, सौंदर्य, अलंकार अद्भुत एवं आश्चर्यजनक है। दिव्य ज्ञान का यह विश्वकोश संस्कृत की समृद्धि का परिणाम है। अन्य मूल भारतीय ग्रन्थ भी संस्कृत में ही लिखित हैं। संस्कृत को वैदिक एवं क्लासिक संस्कृत के रूप में प्रमुखतः विभाजित किया जाता है। वैदिक संस्कृत में वेदों से लेकर उपनिषद तक की यात्रा सन्निहित है, जबकि क्लासिक संस्कृत में पौराणिक ग्रन्थ, जैसे रामायण, महाभारत आदि हैं। संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है। यह इस भाषा की विशेषता है। संस्कृत में हिन्दू धर्म से संबंधित लगभग सभी धर्मग्रन्थ लिखे गये हैं। बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान) तथा जैन धर्म के भी कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ संस्कृत में लिखे गये हैं। हिन्दू धर्म के अधिकतर पूजा और यज्ञ संस्कृत में ही होते हैं। यह भाषा अपनी दिव्य एवं दैवीय विशेषताओं के कारण आज भी उतनी ही प्रासंगिक एवं जीवंत है।

संस्कृत वर्णमाला (माहेश्वर सूत्र) भी वैज्ञानिक हैं, इसके उच्चारण मात्र से गले का स्वर स्पष्ट होता है, कल्पनाशक्ति तथा स्मरण शक्ति (मैमोरी) मजबूत होती है, लिहाजा आत्मबल (विल पावर) बढ़ जाता है। कई देशों की भाषाओं में ध्वनित विकार है, यानी (अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग व्यंजनों की ध्वनि का अभाव) कई अक्षरों की उच्चारण क्षमता नहीं है। यही कारण है कि तमाम देशों के कॉल सेंटरों में कार्यरत युवा संस्कृत के आधार पर अपने ध्वनित विकार को दूर कर शुद्ध उच्चारण क्षमता अर्जित कर रहे हैं आज भी तमाम वैदेशिक युवा संस्कृत पढ़ने के लिए वाराणसी में आते हैं।

व्याकरण - संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त परिमार्जित एवं वैज्ञानिक है। सुस्पष्ट व्याकरण और वर्णमाला की वैज्ञानिकता के कारण इसकी सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद्ध है। बहुत प्राचीन काल से ही अनेक व्याकरणाचार्यों ने संस्कृत व्याकरण पर बहुत कुछ लिखा है। किन्तु पाणिनि का संस्कृत व्याकरण पर

संस्कृत भाषा की महानता एक राष्ट्रीय ध्येय

भारत सरकार	- सत्यमेव जयते।
लोक सभा	- धर्मचक्र प्रवर्तनाय।
उच्चतम न्यायालय	- यतो धर्मस्ततो जय।
ऑल इन्डिया रेडियो	- बहुजन हिताय।
दूरदर्शन	- सत्यं शिवं सुन्दरम्।
थलसेना आर्मी	- सेवा अस्माकं धर्म।
वायु सेना	- नभः स्पृशं दीप्तम्।
जल सेना	- शं नो वरुण।
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	- हवयामी भर्गः सवितुर्वरेण्यम्।
भारतीय प्रणाली सेवा अकादमी	- योग कर्मसु कौशलम्।
एन.सी.इ.आर.टी.	- विद्ययाऽमृतमश्नुते।
नेशनल कौशल फोर टीचर एज्युकेशन	- गुरु, गुरुतमोद्यामः।
केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	- असतो मा सद्गमय।
दिल्ली विश्व विद्यालय	- निष्ठा वृत्तिः सत्यम्।
भारतीय डाक तार विभाग	- अहर्निशं सेवामहे।
भारतीय जीवन बीमा निगम	- योगक्षेमं वहाम्यहम्।
श्रम मंत्रालय	- श्रम एव जयते।
गुरु, गोविंदसिंह इन्द्रप्रस्थ विश्व विद्यालय	- ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञानम्।
भारतीय तट सुरक्षा बल	- वयं रक्षाम।
हिन्दी अकादमी दिल्ली	- अहं राष्ट्रीय संगमनी वसुनाम्।
आर्य समाज	- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
आर्य वीरदल	- अस्माकं वीरा उत्तरे भवतु।
दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़	- योगादेव तु कैवल्यम्।
संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल	- तमसो मा ज्योतिर्गमय।

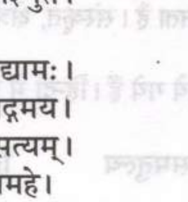

– स्वामी शान्तानन्द सरस्वती,
एम.ए., दर्शनाचार्य, वैदिक गुरुकुल
भवानीपुर, जिला-कच्छ, गुजरात
चलभाष- ०९९९८५९४८१०

किया गया कार्य सबसे प्रसिद्ध है। उनका अष्टाध्यायी किसी भी भाषा के व्याकरण का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के कई तरह से शब्द-रूप बनाये जाते हैं, जो व्याकरणिक अर्थ प्रदान करते हैं। अधिकांश शब्द-रूप मूलशब्द के अन्त में प्रत्यय लगाकर बनाये जाते हैं। इस तरह ये कहा जा सकता है कि संस्कृत एक बहिर्मुखी-अन्त-श्लिष्टयोगात्मक भाषा है। संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई भी सम्भावना नहीं होती। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं और क्रम बदलने पर भी सही अर्थ सुरक्षित रहता है। जैसे-**अहं गृहं गच्छामि या गच्छामि गृहम् अहम्** दोनो ही ठीक हैं। वर्तमान समय में संस्कृत के व्याकरण को वागीश शास्त्री ने वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया है।

-विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक या कुछ ही रूप होते हैं, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के २५ रूप होते हैं। सभी भाषाओं में एकवचन और बहुवचन होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है।

-संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि। संस्कृत में जब दो शब्द निकट आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है।

ध्वनि-तन्त्र और लिपि - संस्कृत भारत की कई लिपियों में लिखी जाती रही है, लेकिन आधुनिक युग में देवनागरी लिपि के साथ इसका विशेष संबंध है। देवनागरी लिपि वास्तव में संस्कृत के लिये ही बनी है, इसलिये इसमें हरेक चिह्न के लिये एक और केवल एक ही ध्वनि है। देवनागरी में १३ स्वर और ३४ व्यंजन हैं। शून्य, एक या अधिक व्यंजनों और एक स्वर के मेल से एक अक्षर बनता है। संस्कृत, क्षेत्रीय लिपियों में लिखी जाती रही है।.

स्वर - ये स्वर संस्कृत के लिये दिये गये हैं। हिन्दी में इनके उच्चारण थोड़े भिन्न होते हैं।

वर्णाक्षर	चिह्न	"प" के साथ मात्रा	अंग्रेजी समतुल्य	हिन्दी में वर्णन
अ	ा	प् + ा = प	लघु या दीर्घ Schwa: जैसे a, above या ago में	मध्य प्रसृत स्वर
आ	ा	प् + ा=पा	दीर्घ open back unrounded vowel: जैसे a, father में	दीर्घ विवृत पश्च प्रसृत स्वर
इ	ि	प् + ि =पि	लघु close front unrounded vowel: जैसे i, bit में	ह्रस्व संवृत अग्र प्रसृत स्वर
ई	ी	प् + ी=पी	दीर्घ close front unrounded vowel: जैसे i, machine में	दीर्घ संवृत अग्र प्रसृत स्वर
उ	ु	प् + ु=पु	लघु close back rounded vowel: जैसे u, put में	ह्रस्व संवृत पश्च वर्तुल स्वर
ऊ	ू	प् + ू =पू	दीर्घ close back rounded vowel: जैसे oo, school में	दीर्घ संवृत पश्च वर्तुल स्वर
ए	े	प् + े =पे	दीर्घ close- mid front unrounded vowel: जैसे a in game (संयुक्त स्वर नहीं) में	दीर्घ अर्धसंवृत अग्र प्रसृत स्वर
ऐ	ै	प् + ै =पै	दीर्घ dipthong: जैसे ei, height में	दीर्घ द्विमात्रिक स्वर
ओ	ो	प् + ो=पो	दीर्घ close-mid back rounded vowel: जैसे o, tone (संयुक्त स्वर में नहीं) में	दीर्घ अर्धसंवृत पश्च वर्तुल स्वर
औ	ौ	प् + ौ=पौ	दीर्घ dipthong: जैसे ou, house में	दीर्घ द्विमात्रिक स्वर

संस्कृत में ऐ दो स्वरों का युग्म होता है और "अ-इ" या "आ-इ" की तरह बोला जाता है। इसी तरह औ "अ-उ" या "आ-उ" की तरह बोला जाता है।

इसके अलावा हिन्दी और संस्कृत में ये वर्णाक्षर भी स्वर माने जाते हैं:

ऋ - आधुनिक हिन्दी में "रि" की तरह, संस्कृत में अमेरिकी अंग्रेजी शब्दांश (r) की तरह

ॠ- केवल संस्कृत में (दीर्घ ऋ)

ऌ - केवल संस्कृत में

ॡ - केवल संस्कृत में (दीर्घ ऌ)

अं - आधे ङ्, ञ्, न्, ण् व म् के लिये या स्वर का नासिकीकरण करने के लिये

अँ - स्वर का नासिकीकरण करने के लिये (संस्कृत में नहीं उपयुक्त होता)

अः - अघोष "ह" (निःश्वास) के लिये

व्यंजन - जब कोई स्वर प्रयोग नहीं हो, तो वहाँ पर 'अ' माना जाता है। स्वर के न होने को हलन्त् अथवा विराम से दर्शाया जाता है। जैसे कि क् ख् ग् घ्।

		अल्पप्राण अघोष	महाप्राण अघोष	अल्पप्राण घोष	महाप्राण घोष	नासिक्य
स्पर्श	कण्ठ्य	क, k	ख, kh	ग, g	घ, gh	ङ, n
	तालव्य	च, ch	छ, chh	ज, j	झ, jh	ञ, n
	मूर्धन्य	ट, t	ठ, th	ड, d	ढ, dh	ण, n
	दन्त्य	त, t	थ, th	द, d	ध, dh	न, n
	ओष्ठ्य	प, p	फ, ph	ब, b	भ, bh	म, m

		तालव्य	मूर्धन्य	दन्त्य /वर्त्स्य	कण्ठोष्ठ्य /काकल्य
स्पर्श रहित	अन्तस्थ	य, y	र, r	ल, l	व, v
	ऊष्म/संघर्षी	श, sh	ष, h	स, s	ह, h

इनमें से ळ (मूर्धन्य पार्विक अन्तस्थ) एक अतिरिक्त व्यंजन है जिसका प्रयोग हिन्दी में नहीं होता है। मराठी, राजस्थानी और वैदिक संस्कृत में इसका प्रयोग किया जाता है।

संस्कृत में ष का उच्चारण ऐसे होता था, जीभ की नोंक को मूर्धा (मुँह की छत) की ओर उठाकर श जैसी आवाज करना। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यंदिनि शाखा में कुछ वाक्यों में ष का उच्चारण ख की तरह करना मान्य था। आधुनिक हिन्दी में ष का उच्चारण पूरी तरह श की तरह होता है।

हिन्दी में ण का उच्चारण ज्यादातर ङ की तरह होता है, यानि कि

शेष पृष्ठ ३२ पर....

तुर्की भाषा से नागरी लिपि तक हिन्दी की यात्रा

-मोहनलाल मगो
पी-६५, पाण्डव नगर, दिल्ली

स्वतन्त्रता आन्दोलन में मातृभूमि के समान ही मातृभाषा प्रेम को महत्ता प्रदान की गई थी, स्वदेश, स्वभाषा, स्वलिपि, स्वदेशी वस्तुएँ, स्वसंस्कृति, स्वावलम्बन, देशोत्थान के पर्याय बन गए थे। देश अब पुनः अपनी भाषा में, अपनी लिपि में अपने देश का कार्यव्यवहार करना चाहता था।

मुगल शासनकाल में टोडरमल ने फारसी भाषा और लिपि का समर्थन किया और फारसी राजकाल की भाषा बन गई।

मुगलों की भाषा तुर्की भाषा थी परन्तु कुछ प्रभावशाली सामन्तों का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से फारसी भाषा और लिपि को राजकाज में स्थान मिला।

अंग्रेजों ने मुगलों से राज्य प्राप्त कर राजकाज फारसी में ही चलने दिया था। इस भाषा और लिपि को न जनता समझती थी और न शासक वर्ग ही समझता था। अतः अंग्रेज इसके स्थान पर अंग्रेजी भाषा और लिपि को प्रयोग में लाना चाहते थे तो कर्मचारी स्वार्थवश फारसी भाषा और लिपि को बनाए रखना चाहते थे। अंतरंग कम्पनी ने राजकाज में अंग्रेजी प्रयोग की अनुमति इंग्लैण्ड स्थित अपने निदेशक मण्डल से मांगी। निदेशक मण्डल ने प्रस्ताव को अस्वीकृत करते हुए निम्नलिखित तर्क दिया-

''इसमें सन्देह नहीं कि न्याय-प्रशासन का कार्य ऐसी भाषा में होना चाहिए, जिससे न्यायाधीश परिचित हों किन्तु यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि न्याय-प्रशासन की भाषा ऐसी हो जिसे जनता और मुकदमों के पत्रकार समझ सकें। जनता द्वारा-न्यायाधीश की भाषा सीखे जाने की अपेक्षा न्यायाधीश द्वारा जनता की भाषा सीखना आसान है।''

इससे अंग्रेजी भाषा और लिपि के प्रयोग का उत्साह कम हुआ। इधर भारत में जनता की भाषा और लिपि के प्रयोग के लिए प्रचार-प्रसार बढ़ा। बिहार शिक्षा विभाग के एक उच्चाधिकारी श्री भूदेव प्रसाद मुखोपाध्याय ने गवर्नर से मिलकर नागरी प्रयोग की अनुमति दिलवा दी।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट ने **'हिन्दी प्रदीप'** के माध्यम से देवनागरी लिपि को कचहरियों में स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त वातावरण का निर्माण किया। हिन्दी प्रदीप की उद्देश्यपरक कविता में भट्ट जी की निम्न पंक्ति नागरी के पक्ष में ही है।

'दीन प्रजा दुःखदरन नागरी बस प्रचारन'

हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का प्रयोग दोनों राष्ट्र-प्रेम के राष्ट्रीयता व राष्ट्रभक्ति के पर्याय बन गये। हर प्रबुद्ध व्यक्ति स्वभाषा और स्वलिपि के प्रचार-प्रसार में रूचि रखता था।

आगरा के कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी के पत्र **''स्वदेश बाधण''** में निम्नलिखित पंक्तियाँ मुद्रित हैं।

''देश सेवा, राष्ट्र उन्नति भावपूर्ण विचार।
भ्रातृ प्रेम प्रसार अरू नथ नागरी सुप्रचार।।''

बिहार की अदालतों में देवनागरी लिपी को अनुमत किए जाने के बाद उत्तर प्रदेश में नागरी प्रचारिणी सभा ने डॉ. श्यामसुन्दर दास, बाबू राधाकृष्ण दास तथा लक्ष्मीशंकर मिश्र की सहायता से एक पेम्पलेट **''दी नागरी करैकर्स''** तैयार कराया व प्रकाशित किया और प्रदेश के लेफ्टीनेण्ट गर्वनर सर एण्टोनी मैकडानल को दिया। सभा की ओर से पं. मदनमोहन मालवीय के नेतृत्व में भारत भर के १७ व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि मण्डल ९ मार्च १८४८ को मैकडानल महोदय से मिला। फलतः १८ अप्रैल १९०० को कचहरियों में उर्दु या देवनागरी को वैकल्पिक प्रयोग के लिए अनुमति मिल गई। जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

श्री महेश्वरबख्श सिंह ने निम्न कविता की रचना की:-

शुद्ध सुवर्ण से शब्द लिखे हैं पाठ किए सुख सागरी के हैं।
और को और पढ़ौ नहीं जात त्यौं, अंक बने मन आगरी के हैं।।
वेद पुराण हू में वरूयो छिति पै, महा ओज उजागरी के हैं।
कैसे करूँ गुणगान महेश्वर, नीके निहारिए नागरी के हैं।।

नागरी सीखने पर नागर बन कर चतुरता ग्रहण करो, ब्राह्मण के आशीर्वाद से नागरी प्रयोग से देश के घर-घर मंगल होगा, अमंगल का नाश होगा। पण्डित प्रतापनारायण मिश्र का यह आशीर्वाद फलित हो रहा है।

श्री कन्हैयालाल जैन ने जय नागरी जय भारती का स्वर ऊँचा किया।

''जय पुण्य भू भारत मही, जय नागरी जय भारती।
जय जय कहें निज जन्म भू की मिल उतारें आरती।।

श्री गौरी शंकर शर्मा लिखते हैं:-

जय जयति जय मातृभाषा, नागरी गुन आगरी।
सुखकारिणी, मनहारिणी, सुठि विमल कीर्ति उजागरी।।

श्री रामवचन द्विवेदी देशप्रेम प्रसार और राष्ट्रीय चेतना के लिए हिन्दी और देवनागरी प्रसार को अनिवार्य मानते हैं।

हिन्दी का सन्देश घर-घर जा सुनायेंगे।
देवनागरी में लिखने का पाठ पढ़ायेंगे।।

नीचे की पंक्तियों में भारत भारती के लेखक राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त का देशप्रेम, भाषाप्रेम और लिपिप्रेम एक साथ दर्शनीय है:-

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि है नागरी।।
है एक लिपि विस्तार होना योग्य हिन्दोस्तान में।
अब आ गई यह सभी विद्वज्जनों के ध्यान में।।
है किन्तु इसके योग्य उत्तम कौन लिपि गुण आगरी।
इस प्रश्न का उत्तर यथोचित है उजागर नागरी।।
जैसा लिखो वैसा पढ़ो कुछ भूल हो सकती नहीं।
है अर्थ का न अनर्थ इसमें एक बार हुआ नहीं।।
इस भान्ति होकर शुद्ध यह अतिसरल और सुबोध है।
क्या उचित फिर इसका कभी अवरोध और विरोध है।।

डॉ. श्याम नारायण पाण्डेय की यह रचना अत्यन्त रूचिकर बनी:-

वाणी अनन्त कर रही गान। जय देवनागरी चिर महान्।।
चिन्मय संस्कृति को शब्द पुंज। विज्ञान-ज्ञान की अर्थ-धार।।
विद्या की अभिनव अभिव्यंजन। हिन्दी का नित करती प्रसार।।
वन्दिता विश्व की कीर्तिमान। जय देवनागरी चिर महान।।

डॉ. देवीसिंह चौहान की देवनागरी शीर्षक रचना उत्कृष्टता का दम भरती है-

देवनागरी को अपनाओं, देश यदि तुम्हें प्यारा है।
भारतीयता का गौरव भरने का यही सहारा है।।

देवनागरी अब विचार-विनिमय की लिपि जन-जन की है।
खेत और खलिहानों की है, मरूस्थल की है मधुवन की है।।
मानवता का परिचय पाने देवनागरी अपनाओ।
सभी बोलियों-भाषाओं को इसका बाना बहनाओ।।
यह वैज्ञानिक लिपि जीवन की मधुर सोमरस धारा है।
राष्ट्रीयता की सुगन्ध भरने का सबल सहारा है।।

विनाश काले विपरीत बुद्धि। विडम्बना ही है कि अंग्रेज अंग्रेजी भाषा को भारतीयों पर थोपना नहीं चाहते थे। सरकारी काम काज जनता जनार्दन द्वारा समझी जाने वाली भाषा में ही जारी रखा और एक हम भारतीय हैं जो अंग्रेजी छोड़ना ही नहीं चाहते। अंग्रेजों ने अंग्रेज जज को हिन्दी सीखने की बात कही, वहीं हम अपने कच्चे घड़े की भान्ति बच्चों को हिन्दी विरोधी बना रहे हैं और अंग्रेजी के निष्ठावान प्रेमी भक्त बना रहे हैं। विचारधारा की दिशा बदलना समय की मांग है। ●

पृ. -२९ का शेष संस्कृत भाषा

जीभ मुँह की छत को एक जोरदार ठोकर मारती है। हिन्दी में क्षणिक और क्शड़िक में कोई अंतर नहीं है, परन्तु संस्कृत में ण का उच्चारण न की तरह बिना ठोकर मारे होता था, अंतर केवल इतना कि जीभ ण के समय मुँह की छत को कोमलता से छूती है।

श्रावणी पूर्णिमा को संस्कृत-दिवस मनाया जाता है। संस्कृतनिष्ठ लोग देववाणी के अमृतत्व को विकसित करने की भावना से उपाकर्म संस्कार के माध्यम से वैदिक साहित्य का पठन-पाठन व वैदिक चर्चाएँ करके समाज को सुसंस्कृत बनाते हैं। किसी भी भाषा की विकास यात्रा में उसकी यह विशेषता जुड़ी होती है कि वह विकसित होने की कितनी क्षमता रखती है। जिस भाषा में यह क्षमता विद्यमान होती है, वह दीर्घकाल तक अपना अस्तित्व बनाये रखती है, परन्तु जिसमें इस क्षमता का अभाव होता है उनकी विकास यात्रा थम जाती है। यह सत्य है कि संस्कृत भाषा आज प्रचलन में नहीं है परन्तु इसमें अगणित विशेषताएँ मौजूद हैं। **संस्कृत ऐसी सर्वाधिक शुद्ध प्राकृतिक भाषा है, जिसमें सूत्र के रूप में कम्प्यूटर के जरिए कोई भी संदेश कम से कम शब्दों में भेजा जा सकता है।** इन्हीं विशेषताओं को लेकर इस पर कम्प्यूटर के क्षेत्र में भी प्रयोग चल रहा है। कम्प्यूटर विशेषज्ञ इस तथ्य से सहमत है कि यदि संस्कृत को कम्प्यूटर की डिजिटल भाषा में प्रयोग करने की तकनीक खोजी जा सके तो भाषा जगत् के साथ-साथ कम्प्यूटर क्षेत्र में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखे जा सकते हैं। जिस दिन यह परिकल्पना साकार एवं मूर्तरूप लेगी, एक नए युग का उदय होगा। संस्कृत उदीयमान भविष्य की एक महत्वपूर्ण धरोहर है। सूचना प्रोद्यौगिकी के क्रांति दौर में अंतरिक्ष वैज्ञानिक संस्कृत को नासा की भाषा बनाने की कवायद में जुटे हैं। सभी विकसित व विकासशील देश **''वैदिक विज्ञान''** के रहस्यों के माध्यम से विज्ञान-क्रांति का दौर ला रहे हैं और इसके लिए जरूरी है संस्कृत जानना। यही कारण है कि आज अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में संस्कृतज्ञता पर जोर दिया जा रहा है।

संस्कृत की इस समृद्धि ने पाश्चात्य विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित किया। इस भाषा से प्रभावित होकर सर विलियम जोन्स ने २ फरवरी १७८६ को एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता में कहा -**'संस्कृत एक अद्भुत भाषा है। यह ग्रीक से अधिक पूर्ण है, लैटिन से अधिक समृद्ध और अन्य किसी भाषा से अधिक परिष्कृत है।'** इसी कारण संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है।

संस्कृत की भाषा विशिष्टता को समझकर लन्दन के कैनिंगस्टन ओलंपिया क्षेत्र की डेसर्स स्ट्रीट में अवस्थित सेंट जेम्स इंडिपेंडेंट स्कूल ने अपने जूनियर डिविजन में इसकी शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है। श्री आदित्य घोष ने सन्डे हिंदुस्तान टाइम्स (१० फरवरी २००८) में इससे संबंधित एक लेख प्रकाशित किया था। उनके अनुसार लन्दन की उपर्युक्त पाठशाला के अधिकारियों की यह मान्यता है कि संस्कृत का ज्ञान होने से अन्य भाषाओं को सीखने व समझने की शक्ति में अभिवृद्धि होती है। इसको सीखने से गणित व विज्ञान को समझने में आसानी होती है। इस पाठशाला के शिक्षकों ने अनेक शोध-परीक्षण करने के पश्चात् अपने निष्कर्ष में पाया कि **संस्कृत का ज्ञान बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। संस्कृत जानने वाला छात्र अन्य भाषाओं के साथ अन्य विषय भी शीघ्रता से सीख जाता है। यह निष्कर्ष उस विद्यालय के विगत कई वर्ष के अनुभव से प्राप्त हुआ है।** Oxford University से संस्कृत में Ph.D करने वाले डॉक्टर वारविक जोसफ उपर्युक्त विद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं। उनके अथक लगन ने संस्कृत भाषा को इस विद्यालय के विद्यार्थियों के जीवन का अंग बना दिया है। डॉक्टर जोसफ के अनुसार संस्कृत विश्व की सर्वाधिक पूर्ण, परिमार्जित एवं तर्कसंगत भाषा है। यह एकमात्र ऐसी भाषा है जिसका नाम उसे बोलने वालों के नाम पर आधारित नहीं है। वरन् संस्कृत शब्द का अर्थ ही है **'पूर्ण भाषा'**। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक पॉल मौस का कहना है कि संस्कृत अधिकांश यूरोपीय और भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रधानाचार्य मौस ने अपने दीर्घकाल के अनुभव के आधार पर बताया कि संस्कृत सीखने से अन्य लाभ भी हैं। **देवनागरी लिपि लिखने से तथा संस्कृत बोलने से बच्चों की जिह्वा तथा उंगलियों का कड़ापन समाप्त हो जाता है और उनमें लचीलापन भी आ जाता है।** यूरोपीय भाषाएँ बोलने से और लिखने से जिह्वा एवं उंगलियों के कुछ भाग सक्रिय नहीं होते हैं। जबकि संस्कृत के प्रयोग से इन अंगों के अधिक भाग सक्रिय होते हैं। **संस्कृत अपनी विशिष्ट ध्वन्यात्मकता के कारण मस्तिष्कीय (Cerebral) क्षमता में वृद्धि करती है। उससे सीखने की क्षमता, स्मरणशक्ति व निर्णयक्षमता में आश्चर्यजनक अभिवृद्धि होती है।** संभवत: यही कारण है कि पहले बच्चों का वेदारम्भ संस्कार कराया जाता था, जिससे मंत्र लेखन के साथ बच्चे को वेदों के मंत्र जप करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता था।

वर्तमान व्यावसायिक युग में उस भाषा को ही वरीयता दी जाती है जिसका व्यावसायिक मूल्य सर्वोपरि होता है। **धार्मिक अनुष्ठानों में संस्कृत का प्रयोग होता है, परन्तु यज्ञ की वैज्ञानिकता का ज्ञान जन साधारण को न होने से इसे कर्मकाण्ड मानकर छोड़ दिया जाता है और इसका दुष्प्रभाव हमारी संस्कृति पर पड़ता है।** श्रावणी उपाकर्म जो कि श्रावण शुदि पूर्णिमा से शुरू होकर पौष मास तक लगातार चार महीने तक चलता है, में यह हम सभी आर्यों का परम कर्तव्य है कि संस्कृत के महत्व को समझकर इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाये तो इसके अगणित लाभ हो सकते हैं। आज आवश्यकता है संस्कृत के विभिन्न आयामों पर फिर से नवीन ढंग से अनुसंधान करने की, इसके प्रति जन मानस में जागृति लाने की, क्योंकि संस्कृत हमारी संस्कृति का प्रतीक है। **संस्कृति की रक्षा एवं विकास के लिए संस्कृत को महत्व प्रदान करना आवश्यक है। इस विरासत को हमें पुन: शिरोधार्य करना होगा तभी इसका विकास एवं उत्थान संभव है।** ●

विश्व भाषा के रूप में हिन्दी : नए प्रतिमान

-डॉ. प्रभुलाल चौधरी
१५, स्टेशन मार्ग, महिदपुर रोड,
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-९८९३०७२७१८

भारतवर्ष की प्रत्येक भाषा की अपनी आन-बान और शान है, अपना स्वाभिमान है, किन्तु इन सब भाषाओं को जोड़ने वाली एक स्वर्णिम कड़ी है हिन्दी। यदि हम भाषाओं के माध्यम से भारतवर्ष की एकता सुनिश्चित करना चाहते हैं तो हिन्दी के प्रति हमारे कर्तव्य हैं, उनको पूरा करने में एक नई तेजस्विता अपेक्षित है।

हमारी सभी भाषाएँ प्रिय हैं, सभी भाषाएँ आदरणीय हैं, सभी भाषाओं में साहित्य है, काव्य है, इसलिए अपने-अपने प्रदेशों में ये भाषाएँ पटरानी बनकर सम्मानित करती रहें लेकिन उन भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी ही होगी और हिन्दी भारत-भारती का सम्मान ग्रहण करेगी। उसको वह सम्मान देना हम सब का राष्ट्रीय धर्म है।

हमारे देश में विविधता में एकता है। आप भारत की सभी भाषाओं के स्वरूप को देखिए वह अलग-अलग है। उनकी बोलने की प्रक्रिया अलग-अलग है, लेकिन सभी भाषाओं में जो आत्मा है वह भारतीय आत्मा है। उसमें सुगंध है हमारे भारत की संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता की, इसलिए हम विविधता में एकता का एक सशक्त मिसाल बने हुए हैं।

स्वाभाविक रूप से यह प्रकृति की देन है। हिन्दी की नियति है कि उसे संस्कृति के चिंतन को प्राप्त करने का अधिकार विरासत में प्राप्त हो गया। हमारा भक्ति-काल का आंदोलन, जो हमारी संस्कृति में किया गया, श्रेष्ठ चिंतन का निचोड़ है। जिसने इस देश के जन-जन को झंकृत कर दिया, आंदोलित कर दिया और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की अटूट शक्ति पैदा कर दी थी। वह हिन्दी आधुनिक काल में स्वतंत्रता-आंदोलन की भाषा बन गई। मैथिलिशरण गुप्त ने जब कहा कि

'हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।'

तो उन्होंने हमारी पूरी मानसिकता को झकझोरने का प्रयास किया था।

जब माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा कि-

'मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।।'

तो उन्होंने इस देश की युवा शक्ति को आंदोलित कर दिया था।

जब बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने कहा कि **'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए'** तो समुचा साहित्य देश की राष्ट्रीयता का प्रतीक बन गया था। एकाएक क्या हुआ कि सन्नाटा छा गया, इसके लिए हमें अपने अंदर झाँकना होगा।

यह सचमुच आश्चर्यजनक है कि हम एक अरब से ज्यादा भारतीय जिस हिन्दी को राजभाषा के प्रति उदासीन रहे हैं उसे सिंगापुरवासियों ने उत्साह से अपनाया है। वहाँ की कुल आबादी में यूँ तो भारतीयों की तादाद केवल छः प्रतिशत है लेकिन फिर भी वहाँ हिन्दी का आकर्षण दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। इसका एक मात्र कारण भारत में नौकरी कर पाने की इच्छा नहीं बल्कि सिंगापुर के युवा मानते हैं कि हिन्दी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय होती जा रही है। अंग्रेजी और चीनी के बाद हिन्दी ही प्रमुख भाषा है। हमारे संविधान के अनुच्छेद ३४६(१) के अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा है। १४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभा द्वारा पारित यह प्रस्ताव आज तक पूरी तरह लागू नहीं हो पाया। संविधान निर्माताओं ने तब यह प्रावधान रखा था कि अगले १५ वर्षों तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए जारी रहेगा। यह प्रावधान ऐसा जोंक की तरह चिपका कि अंग्रेजी ६० साल बाद भी नहीं हटी और हिन्दी को उसका न्यायोचित हक नहीं मिल पाया। वह अनुवाद की भाषा बनी रह गई। वस्तुतः हर सरकारी काम मूलतः हिन्दी में होना चाहिए और जरूरत हो तो उसका अंग्रेजी अनुवाद संलग्न कर देना चाहिए। प्राथमिकता और सर्वोच्चता हिन्दी को ही देनी चाहिए। अंग्रेजी की हैसियत एक विदेशी भाषा की रहे। वह फ्रेंच, जर्मन या रूसी की भाँति ऐच्छिक अध्ययन की भाषा हो। हिन्दी हर प्रकार से एक सम्पन्न, सामर्थ्यवान सम्पर्क भाषा है। इसकी शब्द सम्पदा अंग्रेजी के मुकाबले काफी अधिक है। अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ व प्रभावशाली माध्यम हिन्दी ही है। वस्तुतः यह विश्वभाषा होने का सामर्थ्य रखती है किन्तु अपने ही देश में इसकी शासकीय स्तर पर उपेक्षा हो रही है। हिन्दी राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। जब मॉरीशस, फिजी, गुयाना आदि देशों में हिन्दी बोली जाती है और विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में इसे पढ़ाया जाता है तो भी इसकी अवहेलना क्यों ? हिन्दी को समग्र देश की जनभाषा के रूप में देखो और स्वीकार किया जाना चाहिए। आश्चर्य इस बात का है कि जहाँ विदेशी चाव से हिन्दी सीख रहे हैं वहीं हम अपनी भाषा से दुराव रखते हैं। जरूरत इस बात की है कि अंग्रेजी का मोह त्यागकर हिन्दी को रोजी-रोटी से जोड़ा जाए। यह भ्रम दूर हो जाना चाहिए कि अंग्रेजी का जानकर ही विद्वान् होता है। जब सिंगापुर हिन्दी अपना सकता है तो हम क्यों नहीं।

लोगों में यह भ्रम फैला है कि हिन्दी में वह क्षमता नहीं है। लोग यह भी कहते हैं कि अंग्रेजी पढ़ने से अच्छी नौकरी का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। अंग्रेजी पढ़ने से ही यदि नौकरी मिलती होती तो अमेरिका और इंग्लैण्ड में कोई भी बेरोजगार नहीं होता।

सचमुच लार्ड मैकाले बड़ी सूझबूझ का धनी व्यक्ति था। उसने अपने होम सेक्रेटरी को लिखा था कि मैं नहीं कह सकता कि भारत देश राजनीतिक रूप से आपके अधीन रह पाएगा, लेकिन इतना मैं अवश्य करके जा रहा हूँ कि **यह देश राजनीतिक स्वतंत्रता पा लेने के बाद भी अंग्रेजी मानसिकता, अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकेगा।**

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, आजादी प्राप्त होने के ६७ वर्ष बाद भी हम जिस समस्या से उबर नहीं पाए हैं, वह हमारी मानसिकता की समस्या है। **आश्चर्य की बात है कि देश की आजादी से पहले जो हिन्दी स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनी थी, हमारे देश की राष्ट्रीयता की वाहक बनी थी, वह हिन्दी आजादी के ६७ वर्षों में ऐसे स्तर पर आ गई।** हमें चिन्ता होती है कि हमारा बच्चा आने वाले समय में किस भाषा में बात करेगा। आज हमारे लिए संक्रमण काल का समय है। **आज हम न तो अंग्रेजी बोल पाते हैं और न हिन्दी बोल पाते हैं। हम आज हिंग्रेजी बोल रहे हैं,** हमारे वाक्यों में आधे शब्द हिन्दी के और आधे शब्द अंग्रेजी के होते हैं। हम दरअसल मिलावट और प्रदूषण के शिकार हो रहे हैं।

अंग्रेजी विश्वभाषा है यह दलील उन देशों के नेता देते हैं जहाँ ब्रिटेन का राज था, जहाँ फ्रांस या हॉलैण्ड का राज्य था वहाँ इस **'विश्वभाषा'** की पूछ

नहीं है, भारत में अंग्रेजी की तरह वहाँ फ्रांसीसी और डच का आधिपत्य है। बात समृद्ध और विश्वभाषा की नहीं है, बात है गुलामी की। आप जिसके गुलाम थे, उसी की भाषा को अपने गले तौक बनाए हुए हैं।

हमने जनतंत्र पद्धति को अपनाया है। इसमें तंत्र को जन की अवहेलना करने का अधिकार नहीं दिया जा सकता, लेकिन जन ने अपनी क्षमता का इस तरह विकास किया है कि वह तंत्र की लगाम को कस कर रखे, तंत्र से कहे कि हमारी भावनाओं के अनुरूप तुम काम करो? हमारी इच्छाओं को अभिव्यक्ति नहीं मिलती, इसलिए हमारे देश का जनतंत्र डगमगाता दिखाई देता है।

तंत्र की जो भाषा है, वह हमारा जन नहीं समझता और हमारे जन की जो भाषा है, उसे देश का तंत्र नहीं समझता। आज जब हम हिन्दी की बात करते हैं तो समझ लीजिए कि हम भारतीय भाषाओं की भी बात करते हैं। आज जो अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ा है, वह सरकार की दोषपूर्ण नीति के कारण है।

जब कभी देश को जोड़ने की, एक साथ लाने की, समन्वित करने की आवश्यकता हुई तो हिन्दी ने आगे बढ़कर अपनी भूमिका निभाई। हिन्दी को राष्ट्रभाषा/राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के तीन मूल आधार हैं-

(१) वह सीखने, बोलने और व्यवहार में अपेक्षाकृत सरल है।

(२) उसके बोलने वालों की संख्या अधिक है।

(३) उसमें पूरी सांस्कृतिक गरिमा और राष्ट्रीय चेतना की अभिवृद्धि की गई है। यदि हम भारतीय भाषाओं को तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो निर्विवाद रूप सी हिन्दी में ये विशेषताएँ हैं। इस बात को पहले के लोगों ने अच्छी तरह समझा था कि हिन्दी सम्पर्क भाषा का काम कर सकती है।

हिन्दी का महत्व राष्ट्रभाषा या राजभाषा के रूप में नहीं, बल्कि इसलिए है कि वह एक जनभाषा है। आज हिन्दी प्रेमियों व देश के हितैषी भाई-बहनों का यह उत्तरदायित्व है कि हिन्दी के रूप में विकास व प्रसार में योगदान करें और इसकी विश्वसनीयता में वृद्धि करें। भाषा के संघर्ष की प्रक्रिया में उसे जन-जन के संघर्षों की भाषा भी बनाना होगा। राष्ट्रभाषा और राजभाषा तो वह अपने आप बन जाएगी। संविधान भी पीछे-पीछे आ ही जाएगा।

हमारे यहाँ से जनता की ओर से हिन्दी की स्वीकृति है। जन-सामान्य हिन्दी जानता है, हिन्दी से प्रेम करता है और अपना काम चलाता है। जब वह बद्रिकाश्रम से लेकर कन्याकुमारी तक यात्रा करता है या कच्छ से कामरूप जाता है, चाहे वह किसी भी भाषा का भाषी है, वहाँ तीर्थ स्थानों में हिन्दी से उसका काम चल जाता है।

क्या यह पक्का सबूत नहीं है कि हिन्दी हमारे लिए बहुत काम की भाषा है? विदेशों में लोग जानने लगे हैं कि अगर हमें भारत को जानना है तो हिन्दी के माध्यम से उसके इतिहास को, उसकी संस्कृति को, उसके आचार-विचार को हम जान सकते हैं।

भाषा के स्तर पर विषमता की बात बेमानी है। यह बुद्धिजीवियों के दिमाग की उपज है। मत-भेद, मन-भेद, विभिन्नताएँ और समस्याएँ बुद्धिजीवियों के मन की खुराफत है। जनसाधारण के लिए हिन्दी कोई समस्या नहीं है। कुंभ के मेले में आप गए हैं कभी? यदि नहीं तो आगामी कुंभ पर प्रयाग जाइए। आप पाएंगे कि उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम के लोग ही नहीं, विदेशी भी बड़े सहज भाव से हिन्दी के सहारे मेले का सुख प्राप्त करते हैं - कोई विज्ञापन नहीं, तो भी करोड़ों की तादाद में लोग हिन्दी बोलकर एक दूसरे से मिलते हैं।

आइए हम इंडिया को भारत बनाने का दृढ़ संकल्प करें और इस देश की अस्मिता, इस देश की सोच, देश के चिन्तन के साथ गहराई से जुड़ने का प्रयत्न करें। हम जब इंडिया को भारत बनाने की बात करते हैं तो हम समग्रता में विश्वास करते हैं। साझा चूल्हा है हमारा। साझा इसलिए कि केरल में बैठा हुआ विद्वान् हिन्दी में बात करता और तमिलनाडु में सब्जी बेचने वाला हिन्दी को समझ लेता है। हिन्दी भारत देश की भाषा है, वह सबको जोड़ती है। आज के समय की यह जरूरत है कि उसे और मजबूत किया जाए।

हिन्दी में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है। हमारे सामने जब हिन्दी के शब्द आते हैं तो उसमें स्थानीय शब्दों का होना जरूरी है। 'स्टेशन, टिकट' जैसे शब्द उसमें आने ही चाहिए। यह हमारे सम्प्रेषण के लिए ही है न।

हमारे मनीषियों ने बहुत सोच समझकर ही अपने तीर्थ स्थानों को भारत की चारों दिशाओं में स्थापित किया, जिससे एक दिशा का यात्री दूसरी दिशा में जाकर वहाँ के निवासियों से सम्पर्क कर सके और उस सम्पर्क की यह भाषा थी हिन्दी। इसी सम्पर्क भाषा के महत्व को स्वतंत्रता सेनानियों ने समझा और स्वतंत्रता की लड़ाई में पूरे भारत को एकजुट करने के लिए हिन्दी को अपनाया।

यह विडम्बना है कि हमारे भाग्य-विधाताओं को यह अहसास कभी नहीं रहा कि हिन्दी का प्रश्न केवल भाषा या सम्प्रेषण की सुविधा का नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय एकता का भी है। इन तत्वों का अभाव भौतिक विकास के क्षेत्र में भी देश को पिछलग्गू ही बना रहने देगा और आर्थिक साम्राज्यवाद के शोषण के लिए भी जमीन तैयार करता रहेगा क्योंकि उससे संघर्ष करने के लिए आवश्यक जुझारू मानसिकता ही पैदा नहीं हो पाएगी। मार्क्स ने गलत नहीं कहा था - **'इतिहास से सबक न लो तो उसे दोहराना ही पड़ता है।'** राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय एकता किसी भी प्रकार के भौगोलिक या धार्मिक उन्माद से अलग चीज है।

हम यह जानते हैं कि भारतीय भाषाओं का संक्रमण और संस्कृत शब्दों की उपस्थिति आज बर्मा, मलेशिया, इंडोनेशिया, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, सूडान, फीजी तक की भाषाओं में दिखाई देती है। भारतीय भाषाओं के शब्द बड़े ही सहज रूप में हिन्दी में चले जा रहे हैं। दक्षिण की भाषाओं तमिल, तेलगु, मलयालम और कन्नड़ के भजन आप सुनिए तो आपको बहुत सारे शब्द यों ही मिल जाएंगे जो हिन्दी में बोले जाते हैं। जब हिन्दी व्यापक स्तर पर प्रचलित व समृद्ध भाषा है तो यह प्रश्न कहाँ उठता है कि इसकी लोकप्रियता, इसकी क्षमता में कोई कमी है। भाषा-विज्ञान और व्याकरण की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में बहुत समानता है।

हिन्दी के अखिल भरतीय महत्व का पहला कारण यह है कि भारत के सबसे बड़े वर्ग की यह भाषा है। दूसरा कारण है कि उत्तर भारत, बंगाल, गुजरात व महाराष्ट्र तक की भाषाओं और हिन्दी के शब्द भंडार में इतनी समानता है कि लोग उन्हें आसानी से समझ लेते हैं। तीसरा कारण यह शिक्षा, प्रचार आदि में सहायता करती है। चौथा और सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि हिन्दी भाषी इलाके के मजदूर मुंबई, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े नगरों में भारी संख्या में मिलते हैं।

हिन्दी आज भारत तक सीमित नहीं है बल्कि विश्व के विराट पलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है और एक विश्वभाषा के रूप में तेजी से उभर रही है। हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और सशक्त संवाहिका है जो विदेशों में बसे करोड़ों की संख्या में प्रवासी भारतीयों और भारत मूल के लोगों के बीच आत्मीयता के सीधे सूत्र स्थापित करने और उन्हें भारत, भारतीय और भारतीय संस्कृति से निरन्तर जोड़े रखने में एक सशक्त माध्यम का काम करती है। इसी में वे अपनी अस्मिता की पहचान पाते हैं। ●

बढ़ता अन्धविश्वास और पाखण्ड कहाँ जा रहा है मानव?

नहाने से बीमार हो गए भगवान जगन्नाथ रोज दी जा रही है दवाइयां

भगवान जगन्नाथ की तरह रामपुरा जगदीश मंदिर में बरसों से चल रही परंपरा, शयन के दौरान हर दिन वैद्य करते हैं जाँच

रामपुरा स्थित भगवान जगदीश इन दिनों शयनकाल में हैं, इस दौरान भगवान का प्रतिदिन हेल्थ चैक-अप भी होता है। एक वैद्य उनके स्वास्थ्य की रोज जाँच करके दवाइयाँ भी दे रहे हैं। माना जाता है कि नहाने की वजह से भगवान बीमार हो गए हैं। पुरी के भगवान जगन्नाथ की तरह हूबहू यहाँ एक अरसे से इस परंपरा का निर्वहन किया जाता है। मंदिर में प्राचीन मान्यता के अनुसार भगवान जगन्नाथ १५ दिन के लिए शयन में हैं। इनकी सेवा-सुश्रुषा हो रही है। रोजाना हेल्थ चैक-अप कर वैद्य के माध्यम से औषधियाँ दी जा रही हैं। जो आषाढ़ अमावस्या यानी २७ जून तक जारी रहेगी। शयन के दौरान यहाँ घंटे नहीं बजाते। स्वास्थ्य की दृष्टि से नियमित भोग की जगह किशमिश, काजू, दूध मेवे का भोग लगाया जा रहा है। १५ दिन बाद स्वस्थ होने पर मंदिर में आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा के दिन भगवान के सोलह कलाओं से परिपूर्ण विशेष दर्शन १५ मिनट के लिए होंगे। भगवान को आम पाक का भोग लगाकर भक्तों को इसे प्रसाद के रूप में बाँटा जाएगा। २८ जून सुबह १० बजे पंचामृत स्नान, २९ जून शाम ७ बजे भगवान की रथ यात्रा मंदिर परिसर में निकाली जाएगी। - **जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा**

साँई साहब - साँई साहब एक मुसलमान है। यह भी अपने को अवतार तथा और भी न जाने क्या-क्या बतलाया करते थे। बहुत से मनुष्य इनके चंगुल में फँस गए थे। परन्तु कुछ दिन हुए एक लुहारिन ने इनके अवतारपने की सब पोल खोल दी। साँई जी को जब सब लोग बड़ी श्रद्धा के साथ घेरे हुए थे तो उस समय एक लुहार भी बड़ी श्रद्धा के साथ आपको अपने मकान पर लिवा लाया। लुहार की स्त्री लुहारिन भी वहीं पर उनके पास बैठ गई। कुछ देर में साँई साहब ने एकाएक बहुत क्रोध में आकर बुरा-बुरा मुँह बनाकर अपना डंडा उठाकर धड़ाम से एक किवाड़ में दे मारा और कहा कि **'जा साले!'** सब ने हाथ जोड़कर पूछा कि साँई साहब क्या बात है? साँई साहब ने अपने को त्रिकालदर्शी कहते हुए कहा कि **अरब में इस समय एक कुत्ता काबे को नापाक कर रहा है। मुझे वह दिख रहा था। मैंने उसे यहीं पर बैठे हुए दे मारा है।** यह सुनकर सब लोग हाथ जोड़कर और भी ज्यादा श्रद्धा करने लगे। लुहारिन होशियार थी, उसने कहा है कि साँई साहब मैं आपके लिए चावल बनाकर लाती हूँ आप बैठे रहना। वह अन्दर गई और चावल बनाए, जब चावल बन चुके तो उसने **एक बर्तन में पहले बूरा (चीनी) रखा और फिर बूरे के ऊपर चावल इस तरह से रखे कि जिससे वह बूरा बिल्कुल ही न दिखे। फिर उस बर्तन को लाकर उसने साँई साहब के सामने रख दिया।** लुहारिन चावल रखकर एकदम अन्दर मकान में चली गई। साँई साहब ने समझा कि वह मेरे लिए बूरा लेने गई है। जब बहुत देर हो गई तो उन्होंने उसे बुलाया और कहा कि बूरा क्यों नहीं लाई, उसने कहा कि बूरा तो घर में है ही नहीं। **साँई साहब ने क्रोध में भरकर कहा कि हम बिना बूरे के चावल नहीं खाते।** इतना कहते ही लुहारिन उठी और साँई साहब की दाढ़ी पकड़ कर दे मारा और उनका सब सामान उठाकर बाहर फेंक दिया। **पूछने पर उसने कहा कि भला इसे हजारों कोस का कुत्ता तो दिखता है पर बिल्कुल सामने रखा चावलों से ढका बूरा नहीं दिखता।** सब यह देखकर चकित हो गए और सबने उसके ढोंग को समझ लिया। - **सद्गृहस्थ संत भक्त रामशरणदास पृ.-३८५ से उद्धृत**

डाकन की शंका में रिश्तेदारों ने की वृद्ध महिला की हत्या

दिनांक १० अगस्त २०१४ की रात्रि को कालीदेवी, जिला-झाबुआ (म.प्र.) थाना क्षेत्र के ग्राम पीलिया खदान में डाकन के अंधविश्वास में रिश्तेदारों ने गंगाबाई (५०) नामक एक वृद्धा की हत्या कर दी। बीच-बचाव करने आए पति पर भी धारदार हथियार से जानलेवा हमला किया। पुलिस ने १० लोगों के खिलाफ हत्या सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर लिया। इनमें से एक आरोपी को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

वेद मार्गी बनो

लोग हमें मंदिर जाने को कहते हैं।
पर हम तो रोज मंदिर में ही रहते हैं।।
इसलिए उस मंदिर जाने को देते नहीं तूल।
हम मंदिर ही में रहते हैं, ये लोग जाते हैं भूल।।
मूर्ति को पूजना, है ईश्वर भक्ति के प्रतिकूल।
ईश्वर को सीमित करने की, मत करना ये भूल।।
ये संसार है उसके गर्भ में, कण-कण में वह रम रहा।
जब वह सर्वव्यापक है, फिर किस जगह कम रहा।।
उसकी बनाई विभिन्न मूर्तियाँ, हम रोज ही पूजें।
इसलिए इस जग में हमको, पर उपकार ही सूझे।।
परमेश्वर की करो उपासना, उसका दर्शन मिले कभी ना।
गूढ़ ज्ञान की बात जरा ये, सोच समझ कर देखो।
इन आँखों को बन्द करो, बस ज्ञान चक्षु से देखो।।
भाँति-भाँति के रूप दिखेंगे, भाँति-भाँति की लीला।
सब ही रंग का वह दिखता है, न केवल लाल या पीला।।
उसका रंग जिस पे चढ़ जाये, वो है सच्चा रंगीला।
चाहे संकट के बादल आयें, वो नहीं पड़ता ढीला।।
अलग ही से आता नजर, वो लाखों की बस्ती में।
परवाह नहीं रहती दुनियाँ की, रहता अपनी मस्ती में।।
सारी दुनियाँ चाहे बैरी हो जाये, वो न किसी से डरता है।
जगह-जगह न मांगे भीख, बस प्रभु से प्रार्थना करता है।।
उसी के दिए हुए में, वो पाता है आनन्द।
ईश्वर की उपासना से, मिलता परमानन्द।।
जग को सच्ची राह बताने, आये थे दयानन्द।
वेद मार्ग से ही मिलेगा, सबको परमानन्द।।

- आर्य पी. एस. यादव, आर्य समाज मण्डीदीप

देवताओं तथा त्यौहारों का विरोध गलत

– आचार्य रामगोपाल सैनी
प्राचार्य – पी. जी. कॉलेज
फतेहपुर (सीकर), राज.
चलभाष–०९८८७३९३७१३

आजकल कुछ भ्रमित बुद्धि वाले लोग पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखकर इस तरह के भ्रम फैला रहे हैं–

१. देवता लोग दुराचारी थे।

२. देवता लोग सुरा पीते थे।

३. आर्य जाति के लोग भारत में बाहर से आये हैं।

४. ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य लोग आर्य हैं, शेष सब अनार्य।

५. वेद, उपनिषद्, पुराण आदि आर्यों के ग्रंथ हैं, हमारे नहीं।

६. हम हिरण्यकशिपु के वंशज हैं। विष्णु हमारा शत्रु था।

७. हम राजा बलि के वंशज हैं। इन्द्र तथा विष्णु हमारे शत्रु थे।

८. रक्षा बंधन का त्यौहार आर्यों का त्यौहार है, इसे हमें नहीं मनाना चाहिए।

९. होली का त्यौहार आर्यों का त्यौहार है, इसे हमें नहीं मनाना चाहिए।

१०. हमें देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए।

११. अनार्य लोग भारत के आदिवासी, मूलनिवासी हैं।

१२. जो सुरा पीते थे वे सुर और जो सुरा नहीं पीते थे वे असुर कहलाये।

इस तरह का प्रचार करने वाले लोग अज्ञानग्रस्त एवं भ्रमित हैं।

सभी भारतीय हिन्दू आर्य हैं। सभी हिन्दू भारत के आदिवासी (सर्वप्रथम निवास करने वाले) तथा मूल निवासी हैं। जब पृथ्वी पर मानव बना, तब भारत भूमि पर जो मानव बना वह आर्य था। आर्यों से पहले इस भारत भूमि पर दूसरा कोई नहीं था। आर्य भारत के ही मूल निवासी हैं, वे भारत में कहीं से नहीं आये। हाँ भारतवर्ष से चक्रवर्ती आर्य निकलकर विश्व के कई सुदूर देशों में फैल गये।

देव जाति के लोग सोमलता के रस से बना तथा अनेक औषधियाँ मिलाकर बनाया हुआ **'सोमरस'** नामक एक रसायन (टॉनिक) प्रयोग करते थे जिसके प्रयोग से अवस्था का असर कम दिखाई देता था तथा लोग चिरयुवा दिखाई देते थे। उस सोमरस को धूर्त लोग **'सुरा'** कह कर प्रचारित करते हैं।

कुछ लोगों का यह कथन बहुत बचकाना है कि जो सुरा पीते थे वे सुर कहलाये तथा जो सुरा नहीं पीते थे वे असुर कहलाये। सुर शब्द का अर्थ देवता होता है। सुर शब्द का सुरा (शराब) शब्द से मेल करने की कोई तुक नहीं है। वास्तविक तो यह है कि देव लोग मांस, सुरा तथा सुन्दरी तीनों से दूर रहते थे जबकि असुरों को ये तीनों चीजें अत्यधिक प्रिय थीं।

आर्य व्यवस्था में गुण, योग्यता, कर्म एवं स्वभाव के अनुसार व्यक्ति को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र स्वीकार किया जाता था। ये चारों वर्ण जन्म पर आधारित नहीं थे। ये चारों वर्ण परिवर्तनशील थे। ये चारों वर्ण आर्य संस्कृति के अंग थे। शूद्र लोग आर्य समुदाय का चतुर्थ वर्ण थे। ये चारों वर्ग नैतिकता एवं सामाजिक मर्यादाओं के दायरे में रहते थे। जिन लोगों को नैतिकता, खान-पान में सात्विकता तथा सामाजिक बन्धनों में बंधकर रहना स्वीकार नहीं था, उन लोगों ने असुर, दानव, दैत्य, राक्षस आदि अलग समुदाय बना लिये तथा वे स्वेच्छाचारी जीवन जीने लगे। सारा आर्य (हिन्दू) समाज शिव, शक्ति, ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, हनुमान आदि को अपने आराध्य स्वीकार करता है। इनके अतिरिक्त लोकदेवताओं में राजस्थान में रामदेव, गोगाजी, जीणमाता, हरिराम जी पाबूजी राठौड़, गणगौर आदि देवी देवताओं को पुराने समय से मानता आ रहा है। इसमें शूद्र वर्ग भी शामिल है। आज नया प्रचार चालू किया गया है कि इन देवी-देवताओं को मत मानो। यह बात लोकमानस स्वीकार नहीं कर सकता है क्योंकि लोग देखते तथा सुनते आ रहे हैं कि हमारे पूर्वज अनेक पीढ़ियों से इनको अपना आराध्य मान रहे हैं। हम अपने पूर्वजों को गलत कैसे मान सकते हैं ?

इन देवताओं को न मानने की सलाह देने वालों में अधिक संख्या महात्मा ज्योतिबा फुले तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर को गुरु मानने वालों की है लेकिन इन दोनों के अनुयायी यह क्यों भूल जाते हैं कि डॉ. अम्बेडकर ने धर्म (बौद्ध धर्म) को स्वीकार किया था तथा महात्मा बुद्ध को अपना इष्ट आराध्य माना था। ज्योतिबा फुले ने कदम-कदम पर निर्मीक (सृष्टि निर्माता परमात्मा) को याद किया है तथा अपनी विवाहविधि तथा पूजाविधि पुस्तक में निर्मीक के साथ-साथ अपने कुल परम्परा से मान्य देवताओं कुलस्वामी, कुलस्वामिनी, महाबलि राजा, ज्योतिबा, काल भैरों, महाखंडेराव, नौखण्डोका, सप्तदेवियों तथा ब्रह्मराक्षस दलनकर्ता को प्रणाम किया है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्वयं यह मानते थे कि आज जो लोग शूद्र हैं वे पूर्वकाल में क्षत्रिय थे। ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के मध्य लम्बे चले संघर्ष के कारण क्षत्रिय लोग कमजोर होकर शूद्र कहलाने लगे। – (देखें डॉ. अम्बेडकर लिखित पुस्तक-शूद्र कौन थे ?)

जो लोग क्षत्रियों को आर्य मानते हैं वे क्षत्रियों से परिवर्तित होकर शूद्र बने लोगों को आर्य क्यों नहीं स्वीकार करते हैं ?

आर्य और अनार्य का बखेड़ा छोड़ों। जो लोग भारत में पैदा हुए वे सभी आर्य हैं, चाहे वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कोई भी हों। अनार्य केवल वे हैं जो हिन्दू नहीं हैं जैसे-मुस्लिम, ईसाई आदि।

कई लोग बेतुकी दलीलें देकर अपने को राजाबलि, हिरण्यकश्यप, रावण आदि के वंशज सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। पता नहीं उन्हें पवित्र आर्यवंश का कहलाने में शर्म क्यों आती है और दुराचारी, अनाचारी असुरवंशीय लोगों के वंशज कहलाने की उनकी इच्छा क्यों है ? असुरवंशीय लोगों के काले कारनामे तथा दुराचरण ही आपको प्रिय हैं तो भले ही आप स्वयं को असुर मान लें क्योंकि महर्षि पुलस्त्य का पौत्र तथा ऋषि विश्रवा का पुत्र होकर भी रावण को अपने पूर्वजों का सन्मार्ग अच्छा नहीं लगा, तब उसने ननिहाल के राक्षसों का स्वेच्छाचारी मार्ग स्वीकार कर लिया था। परिणामस्वरूप पथ भ्रष्ट होकर वह अपने पूरे खानदान को रसातल में ले गया। ●

गांधी जी की भूलों से देश को हुई असीमित हानियां

- खुशहालचन्द्र आर्य
मार्फत-गोविन्दराम जी आर्य एण्ड सन्स
९२०, महात्मा गाधी रोड, (दो तल्ला) कोलकता-०७
चलभाष-९०३८४८५१५५

जो जितना बड़ा होता है उसकी भूल या गलती भी उतनी ही बड़ी हानि परिवार, समाज व राष्ट्र का कर देती हैं। गांधी जी ने जो भूलें की वहीं भूलें बदि कोई साधारण व्यक्ति करता तो उसका प्रभाव दस-बीस व्यक्तियों पर पड़ता और उन्हीं की हानि होती। परन्तु गांधी जी की भूल ने देश की दिशा और दशा दोनों ही बदल कर रख दी। गांधी जी से हुई भूलों का विवरण।

१. गांधी जी का अक्रीका से १९१५-१६ में आ गये थे। चार-पाँच वर्ष गांधी जी कांग्रेस के एक अच्छे कार्यकर्ता के रूप में काम करते रहे। परन्तु १९२० में जब बाल गंगाधर तिलक का स्वर्गवास हो गया, तब गांधी जी के हाथ में कांग्रेस की बागडोर आ गई। सन् १९२१ में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन चलाया तब जनता ने उनका खूब साथ दिया। काफी देशभक्त लोग कांग्रेस से जुड़ गये। स्वामी श्रद्धानन्द इनमें मुख्य थे। गांधी जी की सब से बड़ी कमजोरी यह थी कि उनकी समझ में यह आ गया कि हमें आजादी, मुस्लिम भाईयों को येन-केन-प्रकारेण खुश करके ही मिल सकती है। इसलिए गांधी जी ने तुष्टिकरण की नीति अपनाई मुस्लिम भाईयों की जायज-नाजायज बाते मानने लग गये, जबकि तिलक जी हिन्दू-मुसलमान दोनों को समान मानते थे और दोनों ने ही मिल-जुलकर प्रेम पूर्वक कांग्रेस में काम किया।

सबसे पहली भूल गांधी जी से यह हुई कि सन् १९२१ में अफ्रीका के एक खलीफा के ईस्लाम के आधार पर केरेला के मौपला मुसलमानों में यह इस्लामी उन्माद पैदा हो गया कि जो मुसलमान जितने अधिक हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना लेगा, उसके ऊपर खुदा उतना ही अधिक प्रसन्न होगा और मरने के बाद उसे जन्नत (स्वर्ग) में उतनी ही अच्छी जगह मिलेगी। यदि कोई हिन्दू मुसलमान बनने से इनकार करता है तो उसे मार देने में खुदा और भी अधिक खुश होगा। इस अन्धविश्वास से केरेला के मौपला मुसलमानों ने हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। जिसने मुसलमान बनने से इनकार किया उसे जान से मार दिया। इस घटना से पूरे देश के हिन्दुओं में एक प्रकार का रोष पैदा हो गया और उन्होंने गांधी जी से कहा कि आप इस अन्याय को रोको। तब गान्धी जी ने जो उत्तर दिया वह बड़ा ही शर्मनाक था। उन्होंने कहा कि यह उनका धार्मिक मामला है। इसमें मैं हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझता। तब वहाँ पर बड़ी संख्या में आर्य समाजी तथा कुछ हिन्दू संगठन गये और इस अन्याय को बन्द करवाया। जो हिन्दू मुसलमान हो गये थे उनकी शुद्धि करके पुन: हिन्दू बनाया। इस काम में महात्मा आनन्द स्वामी अग्रणीय थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं लिखा है कि इस घटना से मुझे गांधी जी से बड़ी नफरत हो गई और मैंने कांग्रेस छोड़ दी। यह गांधी जी की कितनी हल्की तुष्टिकरण की नीति थी। इतने गम्भीर विषय पर भी वे मौन रह जाते थे। वीर सावरकर ने ''मौपला'' उपन्यास लिखा है, जो इस घटना को पूरी तरह दर्शाता है।

२. अंग्रेजों की सदैव यह चाल रहती थी कि वे हर बात में गांधी को प्रोत्साहन देते थे। जब भी कभी जनता की कोई मांग होती थी, तो कहते थे कि गांधी जी यदि कहेंगे तो हम कर देवेंगे इस से गांधी जी का प्रभाव जनता पर बढ़ता जाता था। अंग्रेज यह बात अच्छी प्रकार जानते थे कि गांधी जी की नीति नर्म है इसलिए क्रान्तिकारियों को जनता से दूर रखने के लिए, हमें गांधी जी का प्रभाव जनता पर बनाए रखना है। जनता का कोई देशभक्त व्यक्ति क्रान्तिकारियों का सम्मान या सहयोग देता था, तो अंग्रेजी सरकार उसे अधिक दु:खी करती थी बजाय गांधी जी को सहयोग देने वाले से। इस प्रकार गांधी जी का प्रभाव बढ़ता गया और क्रान्तिकारियों का प्रभाव घटता गया। पर धन्य हैं, वे क्रान्तिकारी! जिनको जनता व गांधी जी का सहयोग न मिलने पर भी और सरकार का भारी अन्याय होते हुए भी, वे अपने कार्यों को करने में सदा आगे बढ़ते रहे। साण्डर्स जो पुलिस ऑफिसर था जिसने साइमन कमीशन के विरोध में १० अक्टुबर १९२६ को लाहौर में जुलूस निकालते समय लाला लाजपत राय की लाठी मार-मार कर हत्या कर दी थी, उसका बदला लेने के लिए जब वह मोटर साइकल पर लाहौर पुलिस दफ्तर से निकला, तब चार क्रान्तिकारियों जिनके नाम थे- १. चन्द्रशेखर आजाद, २. भगतसिंह, ३. शिवराम राजगुरु, ४. जयगोपाल ने गोलियों से भून कर उसकी हत्या कर दी थी तथा भगतसिंह व वटुकेश्वर दत्त ने संसद भवन में पर्चे बाँटने के उपलक्ष्य में तीन क्रान्तिकारियों जिनके नाम भगतसिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थे, उनको फाँसी देने की बात हुई, तब गोरी सरकार ने गांधी जी से पूछा कि इनको फाँसी देवें या

दिनांक- ८ अगस्त २०१४

भारत छोड़ो आन्दोलन की ७२वीं वर्षगांठ

कांग्रेस ने मुम्बई में प्रस्ताव पारित करके आन्दोलन छेड़ा था कि अंग्रेजो भारत छोड़ो। इस आन्दोलन में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने तथा नेताओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था किन्तु-दूरदर्शी वीर सावरकर ने भविष्यवाणी कर दी थी और जनता को जागृत किया था कि कांग्रेस के नेता भारत को अखण्ड रखते हुए स्वतन्त्र नहीं करा सकेंगे क्योंकि मुस्लिम लीग ने २३ मार्च १९४० को भारत का विभाजन करके पाकिस्तान का निर्माण करने की मांग कर दी थी। उनकी दृष्टि में कांग्रेस के नेता कमजोर-अदूरदर्शी और तुष्टीकरण समर्थक हैं। अत: वे विभाजन के लिए घुटने टेक सकते हैं। उन्होंने जनता से हिन्दू महासभा को बलशाली बनाने के लिए कहा था किन्तु जनता नेहरू व गांधी जी के भ्रम जाल में फस चुकी थी। अत: उसने सावरकर जी को महत्व नहीं दिया जिसके कारण भारत खंडित होकर स्वतंत्र हुआ। -इन्द्रदेव गुलाटी

नहीं। तब गांधी जी ने कहा कि ये तो उग्रवादी हैं और हमारी आजादी के रास्ते में रोड़ा डालने वाले हैं। मैं इनके बारे में कुछ नहीं कहूँगा, तब उन तीनों को २३ मार्च १९३१ को लाहौर की सेन्ट्रल जेल में फाँसी दे दी गई। यह था गांधी जी का क्रान्तिकारियों से व्यवहार।

३. जब सन् १९३९ में कांग्रेस के त्रिपुरा अधिवेशन के लिए पट्टाभिसितारमैया जिसको गांधी जी ने खड़ा किया था, उसके विरोध में सुभाष बाबू अध्यक्ष के लिए विजयी हो गये। तब गांधी जी ने कहा कि पट्टाभिसितारमैया की हार मेरी हार है। इतना कहते ही सुभाष बाबू ने गांधी जी को खुश रखने के लिए कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और अपनी अलग पार्टी फारवर्ड ब्लोक बनाई। यदि सुभाष बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने रहते तो सन् १९४७ के १५ अगस्त को भारत आजाद होने के बाद सुभाष बोस भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री होते, तब आज भारत का नक्शा ही दूसरा होता। इसमें गांधी जी ने लोकतन्त्र की हत्या की। जब सुभाष बाबू भारी मतों से जीत गये थे, तब गांधी जी को यह बात कि पट्टाभिसितारमैया की हार मेरी हार है, कहने की क्या आवश्यकता थी।

४. जब १५ अगस्त १९४७ को आजादी मिली तब कांग्रेस का बहुमत सरदार पटेल को प्रथम प्रधान-मन्त्री बनाने के पक्ष में था। जनता भी सरदार पटेल को ही प्रथम प्रधान-मन्त्री देखना चाहती थी। परन्तु गांधी जी का जवाहरलाल नेहरू पर विशेष प्रेम होने से नेहरू को भारत का प्रथम प्रधान-मन्त्री बना दिया गया। यह भी गांधी जी ने बहुमत की अवहेलना की, जिससे मेरे प्यारे देश भारत का कितना नुकसान हुआ, यह बात हर देशभक्त जानता है। इसके लिए अधिक लिखना, सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

५. गांधी जी की, जो सब से बड़ी भूल या गलती हुई, वह है, जब जिन्ना ने गांधी जी के बहुत समझाने पर भी मुसलमानों के लिये एक अलग स्थान पाकिस्तान ले ही लिया और हिन्दुओं के लिए हिन्दुस्तान रह ही गया, तब मुसलमान भाइयों को हिन्दुस्तान में रखने की क्या आवश्यकता थी? इस काम में गांधी को नेहरू का सहारा मिल गया और दोनों ने मुसलमानों को भारत में रख लिया और हिन्दुओं को पाकिस्तान में रहने के लिए कहा। चाहिए तो यह था कि हिन्दुओं को भारत में बुला लेते और मुसलमानों को पाकिस्तान भेज देते। यह बात डॉ. अम्बेडकर व पटेल तथा अन्य कई नेताओं ने कही भी। यहाँ तक कि जिन्ना ने भी यही बात कही, पर गांधी जी व नेहरू जी ने किसी की बात नहीं मानी। यदि मान लेते तो आज जो समस्याएँ भारत के सामने आ रही हैं, वे नहीं आती और दोनों देश सुख व शान्ति से रहते।

६. गांधी जी आजादी मिलने से पहले कहते थे कि आजादी मिलते ही, सबसे पहले **''गोहत्या बन्दी''** का कानून बनवाऊँगा। दूसरे सब कानून बाद में बनेगें। गांधी जी ने अपने इस प्रण को पूरा करने के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया। इतने महत्वपूर्ण प्रश्न को केवल इतना कहकर ही टाल दिया कि यह राजनैतिक प्रश्न है और मैं राजनीति से दूर हूँ। जब ५५ करोड़ रूपये पाकिस्तान को देने की बात आई तब दिलाने लिए अनशन करने तक की धमकी दे डाली और दिला भी दिये। इसी प्रकार **''गो-हत्या बन्दी''** के लिए भी धमकी दे सकते थे और गो-हत्या बन्द भी हो जाती कारण उस समय तो मुसलमान भाई गो-हत्या के पक्ष में इतने अधिक नहीं थे। गांधी जी के कहने से मान जाते। यदि गो-हत्या बन्द हो जाती तो आज भारत विश्व का उन्नति और समृद्धि में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया मिलता। ●

राजीव गांधी जन्म दिवस - दिनांक २० अगस्त

आप इंदिरा गांधी के पुत्र होने के कारण देश के प्रधानमंत्री बनाए गए।

आपने ईसाई धर्मी सोनिया से ईसाई पद्धति से विवाह किया था।

आपकी सोच थी कि देशभक्ति हर भारतीय के खून में बसी है जबकि १९४७ में ९३% मुस्लिमों ने देश विभाजन का समर्थन किया था और भारतीय कश्मीर में देश विरोधी नारे लगाए जाते हैं।

आपने मिजोरम को राज्य स्तर का दर्जा दिलाया था और वहाँ चुनाव प्रचार में कहा था कि यदि कांग्रेस की सरकार बनी तो राज्य का शासन बाइबिल के अनुसार चलाया जाएगा। इसका परिणाम यह हुआ कि १९९७ में हिन्दू आदिवासियों को मिजोरम से पलायन करना पड़ा और अब शिविरों में रह रहे हैं। किरण बेदी का तबादला मिजोरम में पुलिस के.ऊँचे पद पर हुआ था। उनके बच्चों को मिजोरम के कॉलेजों में यह कहकर प्रवेश नहीं दिया गया कि ये कॉलेज केवल मिजोरम वालों के लिए है।

राजीव गांधी ने मुस्लिमों के दबाव में आकर शाहबानों को गुजारा भत्ता देने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुस्लिम महिला बिल बनवाकर अप्रभावी कर दिया था।

सोनिया गांधी का ईसाई नाम एंटोनिया माइनो है और उनके पुत्र राहुल गांधी का ईसाई नाम राउल विन्सी है।

राजीव गांधी की पुत्री प्रियंका का विवाह ईसाई धर्मी राबर्ट वाड्रा से हुआ है।

राजीव के नाना पं. नेहरू ने, खंडित भारत में, मुस्लिम-ईसाई तुष्टीकरण का जो पौधा १९४७ में लगाया था। उसे खाद-पानी देकर राजीव ने और बड़ा करने में कोई कमी नहीं की।

राजीव गांधी ने कहा था कि न्याय सस्ता तथा जल्दी मिलना चाहिए लेकिन वे इस दिशा में कुछ नहीं कर सके।

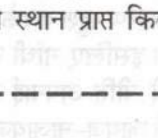

-इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक हिन्दू महासभा
१८/१८६, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, उ.प्र.
चलभाष-०८९५८७७८४४३

मैं उस वक्त वहीं मौजूद था, जब कश्मीर में सभा के दौरान फारुख अब्दुल्ला ने राजीव गांधी को हिन्दू कहा था। तुरंत ही राजीव ने कहा था 'मैं हिन्दू नहीं हूँ'। -एम.के. रैना, लेखक, मुंबई (साभार-दैनिक भास्कर, ट्विटर)

दानवीर भामाशाह श्री नेमीचंद जी शर्मा गांधीधाम ने

वैदिक संसार को वेद प्रचार वाहन किया भेंट

वैदिक संसार के द्वितीय वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर अक्टूबर २०१३ के प्रकाशित वैदिक संसार के पृष्ठ क्रं. ७० पर वैदिक संसार की भावी योजनाओं में **'वेद प्रचार रथ'** के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार विहिन क्षेत्रों विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में यज्ञ करने करवाने एवं यज्ञ करने हेतु प्रेरित करने तथा वैदिक धर्म महत्ता तथा ईश्वर के सत्य स्वरूप का प्रचार-प्रसार कर वैदिक साहित्य विक्रय एवं वितरित करने बाबद प्रकाशित किया गया था।

ईश्वर की महती कृपा से एक वर्ष से भी कम अवधी म **वरिष्ठ समाज सेवी दानवीर, भामाशाह सुप्रख्यात उद्योगपति नेमीचन्द जी शर्मा, गांधीधाम (कच्छ) ने अपनी जन्म दायिनी माता श्रीमती मोहिनी देवी की स्मृति में 'माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट'** बनाकर परोपकारी सेवाकार्यों को संचालित किया हुआ है।

आपने वैदिक संसार के द्वारा किये जा रहें सेवा कार्यों से प्रभावित होकर तथा वैदिक सेंसार की वेद प्रचार वाहन के माध्यम से वेदवाणी जन-जन तक पहुँचाने की भावी योजना से अवगत होने पर सहर्ष चार पहिया वाहन **'वेद प्रचार वाहन' के रूप में दिनांक ६ अगस्त २०१४ को वैदिक संसार को आर्य जगत् की महान् विभूति अखण्ड ब्रह्मचारी युवा संन्यासी स्वामी शांतानन्द जी दर्शनाचार्य, गुरूकुल भवानीपुर (कच्छ) की गरिमामयी उपस्थित में आर्य समाज, गांधीधाम के कोषाध्यक्ष श्री गुरूदत्त शर्मा के निवास पर देवयज्ञ सम्पन्न कर वाहन की कुँजी (चाबी) श्री नेमीचंद जी ने उपस्थित महानुभावों के समक्ष वैदिक संसार प्रकाशक को सादर अर्पण की,** वाहन चालक आसन पर विराजित वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को स्वामी जी ने अपने द्वारा रचयित तथा संत औधवराम गुरूकुल भवानीपुर द्वारा प्रकाशित साहित्य वाहन की पिछली सीट पर सुसज्जित करने पश्चात् ओ३म् ध्वज दर्षित करवाकर वाहन को वेद प्रचार हेतु समर्पित किया। उपस्थित महानुभावों को वैदिक साहित्य वाहन से वितरित किया गया। **ओ३म् ध्वजा लगे वाहन के चारों ओर आर्य समाज के पाँच नियम प्रत्येक नियम महर्षि दयानन्द के नाम के साथ लिखे थे। सामने की ओर मनुस्मृति का वाक्य वेदोऽखिलो धर्ममूलम् अर्थ सहित तथा ऋषि दयानन्द का सन्देश 'वेदों की ओर लोटों' पीछे की ओर लिखा हुआ वाहन तथा वाहन उपयोग उद्देश्य की गरिमा में अभिवृद्धि कर रहे थे।**

इस अवसर पर आर्यसमाज ट्रस्ट, गांधीधाम के मंत्री श्री मोहनलाल जांगिड, सदस्य श्री खेमचन्द जी जांगिड, जांगिड ब्राह्मण जिला सभा गांधीधाम के जिलाध्यक्ष, इलाहाबाद (उ.प्र.) से पधारे ऋषि भक्त डा.जे. आर. शर्मा प्रधान-आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग, दिल्ली से पधारे श्री सोमदत्त जी शर्मा, श्री मोहनलाल जी शर्मा संयोजक वेद विद्या मंदिर, धरमपुरी (इन्दौर), गांधीधाम के श्री चन्द्रप्रकाश जी शर्मा, श्री शंकरलाल जी शर्मा सहित अनेक स्नेही जन उपस्थित रहे। उपस्थित महानुभावों ने वैदिक संसार के द्वारा किये जा रहे कार्यों की तथा कार्यों को गति प्रदान किये जाने हेतु साधन उपलब्ध करवाने पर दानदाता श्री नेमीचंद जी शर्मा की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया।

गांधीधाम से रवाना होकर वेद प्रचार वाहन आर्य वन रोजड़ पहुँचा वहाँ आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी से भेंट की तथा उन्हें इस समाचार से अवगत करवाया उन्होंने भी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए वेद प्रचार निमित्त दिये गये दान बाबद दानदाता की सराहना की तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य प्रचुर मात्रा में वाहन हेतु उपलब्ध करवाया।

दर्शन योग महाविद्यालय के व्यवस्थापक ब्र. दिनेश कुमार जी से भी भेंट की गई उन्होंने भी इस प्रयास की सराहना की तथा दर्शन योग महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करवाया।

माता सुषमा जी वानप्रस्थी, मॉरीशस के श्री ब्रह्मदेव जी तथा अनेक गणमान्य महानुभावों से भेंट उपरांत वेद प्रचार वाहन आगे की यात्रा को प्रस्थान कर अनेक स्थानों पर अपने उद्देश्य अनुसार प्रचार-प्रसार करते हुए इन्दौर पहुँचा जहाँ पर सक्रिय रूप से अपने कार्य को संपादित कर दानदाता के दान का सदुपयोग किया जा रहा है।

कौन है श्री नेमीचन्द जी शर्मा ? -राजस्थान प्रान्त के नागौर जिले के ग्राम-लाडपुरा में पिता श्री जँवरलाल जी शर्मा तथा माता श्रीमती मोहिनी देवी शर्मा के यहाँ जन्में श्री नेमीचन्द जी शर्मा स्नातक शिक्षा प्राप्त करने पश्चात् अपने मामा जी श्री कालूराम जी पालड़िया के पास अहमदाबाद १९८४ में आ गये और एक नीजी फर्म में बाबू की नौकरी की हँसमुंख, मिलनसार, पुरूषार्थ, व्यवहारिकता के गुणों के धनी श्री नेमीचन्द जी ने अहमदाबाद में निजी व्यवसाय प्रारम्भ करने पश्चात् वर्ष १९९७ में गांधीधाम पहुँचे और प्लास्टीक के क्षेत्र में कदम रखा आज आप हिन्दुस्तान के ख्यातनाम प्लास्टीक दाना आयातकर्ता तथा यूरोप के देशों से वस्त्रों के आयात-निर्यातकर्ता है वर्ष में करीब दो ढाई हजार टन का कार्य करते हुए रिपोर्स की दुनिया के जाने माने व्यक्ति है वर्तमान में कांडला पोर्ट के समीप औद्योगिक क्षेत्र में तीन विशाल फैक्ट्रियाँ आपके द्वारा संचालित हैं। **आपकी धर्मपत्नी श्रीमती संतोष देवी-सुपुत्री श्री रामचन्द जी सीलक,** निवासी मोरियाणा, जिला-नागौर (राज.) भी अतिथि सेवाभावी, आध्यात्मिक प्रवृत्ति की महिला है आप दोनों सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में बढ़चढ़ कर तन-मन-धन से अपना योगदान देते हैं। पौराणिक परिवार में जन्में तथा पैतृक संस्कार पौराणिक होने के बावजूद आप आर्य समाज की गतिविधियों में भी रूची पूर्वक सक्रिय रूप से योगदान देते हुए वैदिक विद्वानों का यथोचित सम्मान, वैदिक साहित्य के प्रकाशन तथा वेदोक्त ज्ञान प्रचार-प्रसार में मुक्त हस्त से दान देते रहते हैं।

आपने अपने पैतृक गाँव में निर्मित 'सीताराम परिवार' मन्दिर को भव्यता प्रदान करने में विशिष्ट सहयोग दिया। जांगिड ब्राह्मण (नोहरा पंचायत) पुष्कर में एक हॉल का निर्माण अपनी माता की स्मृति में करवाया, आप जाति-समाज और विचारधारा की संकिर्णताओं से उपर उठकर सार्वजनिक कार्यों में सहयोग करते हैं जैन समाज द्वारा यक्ष बोतरा (कच्छ) में निर्मित भवन में एक कमरे के निर्माण के सहभागी बनकर योगदान दिया।

अपने पैतृक गाँव में गौशाला में भी विशेष योगदान आपका है।, अपने पिता श्री की स्मृति में निर्मित प्याऊ को पिछले करीब दस वर्षों से नियमित संचालित कर रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से गाँव में भव्य शिव मंदिर का निर्माण भी करवा रहे हैं जो पूर्णता की ओर अग्रसर है।

आप स्पेशल इकॉनोमिक झोन इंडस्ट्रीयल एसोसिएशन की कार्यकारिणी में पिछले दस वर्षों से तथा प्लास्टिक युनिट्स एसोसिएशन में पिछले आठ वर्षों से सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप जांगिड ब्राम्हण महासभा के राष्ट्रीय उपप्रधान, गुजरात प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष जैसे अनेक पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। आप अनेक व्यवसायिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए होकर सेवा भाव से सक्रिय सहयोग तन-मन-धन से करते हैं। आपकी काव्य लेखन में विशेष रूची है।

वैदिक संसार को चार पहिया वाहन प्रदान कर आपने वैदिक संसार के द्वारा चलाये जा रहे वेद प्रचार अभियान को गति प्रदान की है। इस हेतु वैदिक संसार परिवार आपका हृदय से आभार व्यक्त करता है तथा परमपिता परमात्मा से आपके सम्पूर्ण परिवार के लिये आरोग्यता, बल, बुद्धि, ऐश्वर्य को प्रदान किये जाने की कामना तथा प्रार्थना करता है। परमपिता परमात्मा न्यायकारी है अतः निश्चित रूप से आपके द्वारा अपने द्वारा पुरूषार्थ और धर्म पूर्वक अर्जित किये हुए पवित्र धन को शुद्ध अंत:करण से प्रसन्नता पूर्वक अर्पित किया है निश्चित रूप से परमात्मा इसका शत-प्रतिशत प्रतिफ ल आपको और आपके परिवारजनों को प्रदान करेगा। -**सम्पादक**

डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी का अभिनन्दन
कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर 'जीवनप्रवाह' का विमोचन

बाँसवाड़ा, २ अगस्त/ बहु आयामी रचनात्मक कार्यकर्ता एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी का रातीतलाई, बांसवाड़ा (राज.) स्थित नेमा भोजनशाला में १ अगस्त २०१४ को सेवा निवृति उपलक्ष्य में आयोजित भव्य समारोह में संत-महात्माओं, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों, शिक्षाविदों, साहित्यकार और गणमान्य समाजसेवियों की ओर से अभिनन्दन शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न एवं अभिनन्दन पत्र भेंट कर किया गया तथा बहु आयामी रचनात्मक गतिविधियों के साथ ही पिसिपल शिशु रोग विशेषज्ञ के रूप में उनकी दीर्घकालीन सेवाओं की सराहना की गई।

समारोह में गुरु आश्रम छींच के महन्त घनश्यामदास महाराज, भारतमाता मन्दिर के महंत रामस्वरूप महाराज तथा बड़ा रामद्वारा के संत रामप्रकाश महाराज, प्राच्यविद्यामर्मज्ञ एवं प्रसिद्ध ज्योतिर्विद पं. लक्ष्मीनारायण द्विवेदी ने डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित पुस्तक **'जीवन प्रवाह'** का विमोचन किया। अपनी तरह के इस ऐतिहासिक एवं बहुविध समारोह का संचालन करते हुए मशहूर प्रयोगधर्मा साहित्यकार हरीश आचार्य ने कला, संस्कृति और साहित्य रसों की कई धाराओं के समन्वय का अनूठा प्रयोग दर्शाते हुए सभी को मुग्ध कर दिया।

समारोह को संबोधित करते हुए विभिन्न सेवा क्षेत्रों, अंचलों और संस्थाओं से जुड़े वक्ताओं ने डॉ. त्रिवेदी को क्षेत्रीय रचनात्मक गतिविधियों में जीवंत और उत्साहपूर्ण भागीदारी निभाने वाला कर्मयोगी निरूपित किया और कहा कि उनके माधुर्यपूर्ण व्यवहार, सहृदयता और निष्काम सेवा के आदर्शों का ही परिणाम है आज सभी लोग उनके कायल हैं और वे रचनात्मक सेवाकार्यों की अहम धड़कन के रूप में स्वीकारे जाते हैं।

समारोह में डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी के जीवन की अहम घटनाओं और उपलब्धियों पर केन्द्रित लघु चित्रात्मक डिस्प्ले फिल्म भी प्रदर्शित की गई। इस अवसर पर नगर परिषद सभापति राजेश टेलर, शैलेन्द्र सराफ, डॉ. दशा सराफ, शंभू हिरन, एड्वोकेट कृष्णकांत उपाध्याय, शंतिलाल सेठ, डॉ. सुशील मेहता, घनश्याम प्रियाणी, श्रीमती उपाध्याय, शिक्षाविद् सरस्वती त्रिवेदी, डॉ. प्रभु शर्मा, प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. एलसी मईडा उपस्थित रहे। गणमान्य महानुभावों ने संबोधित किया और डॉ. त्रिवेदी को बधाई दी।

११ दिवसीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

योगस्थली आश्रम दुचौली रोड, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) द्वारा आश्रम स्थापना के समय से ही प्रतिवर्षानुसार गायत्री महायज्ञ का आयोजन वर्षाऋतु के प्रारम्भ में जुलाई माह में आयोजित किया जाता है। योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ के संस्थापक डॉ. ब्रह्मदत्त जी (वर्तमान नाम ब्रह्मानन्द सरस्वती) है।

उपरोक्त गायत्री महायज्ञ में प्रतिदिन क्षेत्र की महिलाओं की भागीदारी रहती है। २० जुलाई २०१४ से प्रारम्भ हुए गायत्री महायज्ञ का समापन दिनांक ३० जुलाई को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्कृति अकादमी हरियाणा के डायरेक्टर आचार्य विजयपाल जी प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा एवं संचालक गुरुकुल झज्जर, चिकित्सा चक्रवर्ती निदान सम्राट स्वामी दयानन्द गिरी जी-भिवानी, स्वामी विश्वमुनि जी-नारनौल, जिला-वेद प्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ के प्रधान-रोशनलाल जी, उपप्रधान-कैप्टन जगराम जी, उद्योगपति राधेश्याम जी शर्मा-दिल्ली, मध्यप्रदेश के अपरप्रधान वन संरक्षक श्री जगदीश प्रसाद जी शर्मा, आचार्य कपिल देव जी गुरुकुल झज्जर, महात्मा हंसमुनि योगार्थी, महात्मा आनन्द स्वरूप जी, ब्रह्मवादिनी बहन कलावती जी संचालिका कन्या गुरुकुल गनियार, श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य नारनौल, रावबहादुर सिंह जी चेअरमेन यदुवंशी शिक्षा ग्रुप एवं विधायक नागल चौधरी क्षेत्र, श्री विक्रमसिंह जी बोहरा-मैनेजर यदुवंशी शिक्षा निकेतन, महाशय धर्मवीर जी-मंत्री आर्य समाज महेन्द्रगढ़, श्री सूरजभान जी जांगिड-उपप्रधान आर्यसमाज महेन्द्रगढ़, सेठ सुभाष चन्द्र जी दादरी वाले मंत्री, अतिथि सत्कार एवं व्यवस्थापक, पंडित मदनलाल जी आर्य-स्वागताध्यक्ष तथा क्षेत्र के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

आचार्य रामगोपाल शास्त्री
''महात्मा कालूराम सेवा सम्मान'' से सम्मानित

रामगढ़ शेखावटी, जिला-सीकर (राज.) में गुरूपूर्णिमा के अवसर पर १२ जुलाई २०१४ को आर्य समाजी संत महात्मा कालूराम जी के शिखरबंध (आश्रम) में आर्य समाज का अर्धवार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति ट्रस्ट, 'दिल्ली' द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य रामगोपाल शास्त्री (सैनी) प्राचार्य सेठ जी, आर. चमड़िया, पी.जी. संस्कृत महाविद्यालय, फतेहपुर को वैदिक धर्म के प्रचार में विशिष्ट कार्य के लिए **'स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति महात्मा कालूराम सेवा सम्मान'** से सम्मानित किया गया।

आचार्य जी को शाल एवं गायत्री मंत्र का दुपट्टा ओढ़ाकर, महात्मा कालूराम जी का चित्र, सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ एवं श्रीफल भेंट कर कर सम्मानित किया गया।

जड़िया ट्रस्ट की ओर से रामगढ़ विकास ट्रस्ट के सचिव जगदीश प्रसाद जौहरी, वैदिक आश्रम, कोलायत बीकानेर के स्वामी आचार्य शिवकुमार शास्त्री, किशोरीलाल शर्मा, स्व. सोहनलाल जाड़िया स्मृति ट्रस्ट के अध्यक्ष जुगल किशोर जड़िया, ओमप्रकाश जौहरी ने सम्मानित किया।

सम्मानोपरान्त आचार्य रामगोपाल शास्त्री का वेदों पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसमें आपने वेदों की रचना कैसे हुई यह बताते हुए यह भी बताया कि वेदों में राजा, प्रजा, किसान, व्यापारी, शिक्षक, पिता, पुत्र, पति-पत्नी आदि के कर्तव्य बताये गये हैं। वेदों में आचरण की पवित्रता एवं सात्विक आचार विचार पर जोर दिया गया है।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती दिवस पर
भजन संध्या एवं सम्मान समारोह

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका द्वारा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती के अवसर पर स्वस्ति महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी (दिल्ली) में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधायक एवं दिल्ली सरकार के पूर्व वित्तमंत्री डॉ. जगदीश मुखी, दक्षिण दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री खुशीराम एवं मुख्यवक्ता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे। अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री भारतभूषण साहनी ने की। संयोजन अध्यात्म पथ के प्रधान संपादक, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान् क्रांतिकारी, अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी व उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषा-भाषी, इतिहासकार व साहित्यकार थे। उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि आर्यसमाज से जुड़कर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने देशभक्ति का पाठ पढ़ा और देश पर बलिदान हो गये। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। डॉ. जगदीश मुखी ने कहा कि जो जहाँ बैठा है वह वहाँ ईमानदारी से अपना काम करें, यही बिस्मिल के जीवन से सच्ची सीख होगी।

यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न एवं शाल भेंट की। अध्यात्म रत्न सम्मान से सर्वश्री कन्हैयालाल आर्य, विजयगुप्त, चन्द्रकान्ता अमर सिंह आर्य को सम्मानित किया गया तो विद्यासागर नांगिया स्मृति सम्मान से हरबंशलाल कोहली एवं प्रेमसागर नांगिया को। सर्वश्री यशपाल आर्य (चेयरमैन) विद्यासागर वर्मा (पूर्व राजदूत कजाकिस्तान) सरिता जिन्दल (पूर्व निगम पार्षद) संजीव तोमर (कनाड़ा) मेथ्यू श्रुहान (अमेरिका) अरूण सहारन (उद्योगपति) प्रिं. अरूण आर्य, श्री अभय सिन्हा (महासचिव, लोकनायक जयप्रकाश अध्ययन केन्द्र) की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

सभी अभ्यागतों का हार्दिक आभार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने माना।

चलो जोधपुर *चलो जोधपुर*

ऋषि स्मृति न्यास जोधपुर का वार्षिकोत्सव

दिनांक २६ से ३० सितम्बर २०१४ तक

ऋषि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर का वार्षिकोत्सव वर्णित तिथियों में पूर्ण हर्षोल्लास के साथ आर्य जगत् की महान् विभूतियों प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु-अबोहर, डॉ. धर्मवीर जी-अजमेर, डॉ. वेदपाल जी-मेरठ, पं. सत्यपाल जी पथिक आदि अनेक विद्वान् संन्यासी एवं भजनोपदेशकों की उपस्थिति में आयोजित किया जा रहा है। समस्त ऋषिभक्त आर्यजनों से वैदिक धर्म ज्ञान का लाभ लेने के लिए सादर अनुरोध न्यास द्वारा किया गया है।

आर्य समाज देपालपुर के नवनिर्मित भवन में भव्य रूप में प्रथम बार गुंजेगी

सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से वेदवाणी

दिनांक १८ से २० सितम्बर २०१४ तक

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा इन्दौर संभाग प्रभारी, कर्मठ, जुझारु, सरल-सौम्य व्यक्तित्व के धनी, वेद निष्ठ, ऋषिभक्त **लोकसभा अध्यक्ष माननीय सुमित्रा महाजन के विश्वास पात्र,** जन-जन लोकप्रिय **महान् आत्मा श्री गोविन्दराम आर्य,** देपालपुर के सद्प्रयासों से आर्य समाज, देपालपुर के नवनिर्मित दो मंजिला विशाल भवन में प्रथम बार भव्य रूप में वैदिक सत्संग का आयोजन **आर्य जगत् की ख्यातनाम् विदुषी अंजलि आर्या, करनाल** की गरिमामयी उपस्थिति में दिनांक १८ से २०सितम्बर तक प्रस्तावित है। इस अवसर पर मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी एवं आर्यजगत् के गणमान्य महानुभाव भी सादर आमंत्रित है।

सम्पर्क - **गोविन्द राम आर्य,** देपालपुर, चलभाष - ९४२४०१२४७१

रचानाकार महानुभावों से विनम्र अनुरोध

- २ माह में एक रचना से अधिक रचनाएँ न भेजें। रचना संक्षिप्त भेजें।
- समसामयिक रचना समय पूर्व भेजें।
- प्रकाशन सामग्री डाक से ही भेजें।
- पत्रिका को रचना से अलकृंत करने के साथ-साथ यथा संभव अर्थ से भी पोषित करने-करवाने बाबद सहयोग प्रदान करें।
- आपके द्वारा रचयित रचना तथा पत्रिका का लाभ अधिक से अधिक सदस्यों को प्राप्त हो सके इस हेतु पत्रिका के सम्मानीय प्रतिनिधि का दायित्व वहन कर अधिक-से-अधिक सदस्यों को पत्रिका का सदस्य बनाने का श्रम करें।

भूल-सुधार

गत जुलाई अंक के पृष्ठ-२१ पर प्रकाशित लेख **शंकराचार्य के निशाने पर साईं** के लेखक रूपकिशोर जी जाकर का चलभाष नम्बर त्रुटीपूर्ण प्रकाशित हो गया था वस्तुतः उनका संपर्क नम्बर उपरोक्त ०९६१७९०१९२३ है।

वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज धामनोद, जिला-रतलाम (म.प्र.) के तत्वावधान में १७ से २० जुलाई २०१४ तक वार्षिकोत्सव एवं वेदप्रचार के अंतर्गत नित्यप्रति यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रातः-सायं वेद विषयक भजन प्रवचन आयोजित किये गये। समारोह में आमंत्रित **सुश्री अंजलि आर्या, करनाल** (हरियाणा) ने संगीतमय वैदिक भजन व प्रवचनों की अमृत वर्षा की। **स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य गुरुकुल पलवल** (हरियाणा) के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीति पर प्रेरणादायी प्रवचन एवं **पं. कमल किशोर जी शास्त्री, बैरसिया** (भोपाल) के भजनों का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया। **इसी प्रसंग में**- आर्यसमाज सैलाना तथा आर्यसमाज रतलाम (म.प्र.) के वार्षिकोत्सव व वेदप्रचार सप्ताह के आयोजित आयोजनों में पधारे **आर्य जगत् के विद्वान् आचार्य चंद्रेश जी दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात) तथा आर्य गुरुकुल मथुरा से पधारे आचार्य सत्पाल जी** के प्रवचनों का लाभ एक दिवसीय आयोजन आर्य समाज, धामनोद के तत्वावधान में दिनांक १५ अगस्त २०१४ को रतलाम-सैलाना मार्ग पर स्थित ग्राम धामनोद में आयोजित आयोजन में स्थानीय धर्म प्रेमी सज्जनों ने प्राप्त किया। उपरोक्त विद्वानों ने रामायण के प्रसंगों पर तथा महिलाओं की उन्नति के लिये प्रेरणाप्रद प्रभावशील प्रवचन दिये। भजनों के माध्यम से **पं. कमल किशोर जी शास्त्री,** बैरसिया (भोपाल) ने मार्गदर्शन किया। -**विकास शर्मा, मंत्री**-आर्यसमाज धामनोद

निर्वाचन समाचार

● **आर्य समाज, भिलाई नगर,** वृत्त खण्ड-६, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़ के निर्वाचन २० जुलाई २०१४ को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। तदानुसार **प्रधान**-अवनीभूषण पुरंग, **मंत्री**-रवी आर्य, **कोषाध्यक्ष**-रवीन्द्र गुप्ता, **उपप्रधान**-सुदर्शन बहल एवं जवाहरलाल सरपाल, **उपमंत्री**-अरूण ग्रोवर एवं श्रीमती श्रीमती प्रमिला सरपाल, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-यतिन्द्र पुरंग, **आर्य वीरदल अधिष्ठाता**-राजकुमार भल्ला, **आंतरिक लेखा परीक्षक**-श्रीमती मधु गुप्ता नियुक्त किए गए।

● **आर्य समाज खरसौदकलां,** तह.-बड़नगर, जिला-उज्जैन (म.प्र.) की नवगठित कार्यकारिणी का सर्व सम्मति से निम्नानुसार गठन किया गया। **परामर्शदाता**-सर्वश्री महादेव जी पटेल, बाबूलाल जी पटवा (पटेल) पूर्व प्रधान, विष्णुकुमार जी वैष्णव, महेश जी पटेल, ईश्वरलाल जी चौधरी, **प्रधान**-खेमराज जी लाईनमेन, **उपप्रधान**-किशोरलाल जी आचार्य, **मंत्री**-जानकीलाल जी चौहान, **कोषाध्यक्ष**-लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता**-गोपाल जी यादव, **प्रचार मंत्री**-नारायण जी पटेल, **प्रांतीय प्रतिनिधि**-उच्छवलाल जी पाटीदार।

● **आर्य समाज विक्रमनगर** (मौलाना), तह.-बड़नगर, जिला-उज्जैन (म.प्र.) की नवगठित कार्यकारिणी का सर्व सम्मति से निम्नानुसार गठन किया गया। **संरक्षक**-सर्वश्री भागीरथ जी पाटीदार, जगदेवसिंह जी पाटीदार, मनोहरलाल जी पाटीदार, **प्रधान**-भारतलाल जी पटेल, **उपप्रधान**-रमेशचन्द्र जी पाटीदार (कृषि दर्शन), **मंत्री**-दिलीपकुमार जी पाटीदार (एल.आई.सी.), **उपमंत्री**-हीरालाल जी पाटीदार (पूर्व अध्यक्ष पाटीदार समाज), **कोषाध्यक्ष**-निर्भयसिंह जी डाबी, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-भेरूलाल जी, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता**-प्रदीप कुमार जी पाटीदार, **सह आर्यवीर दल अधिष्ठाता**-अनिलकुमार पाटीदार, **संगठन मंत्री**-ईश्वरलाल जी पाटीदार, **प्रांतीय प्रतिनिधि**-लक्ष्मीनारायण जी आर्य, शिवनारायण जी आर्य।

ऋषि भक्त मा. संतोष गंगवार भी सातवी बार संसद में पहुँचे

संसदीय क्षेत्र बरेली (उ.प्र.) से समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार आयशा इस्लाम को ऐतिहासिक २ लाख ७५ हजार मतों से पराजीत कर सातवी बार सांसद का निर्वाचन अपने पक्ष में **माननीय संतोष जी गंगवार** ने कर जनता-जनार्दन का विश्वास अर्जित करने में सफलता प्राप्त की है। ऋषि भक्त, वैदिक धर्म के निष्ठावान सिपाही **माननीय संतोष जी गंगवार** को ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना, स्वस्ति वाचन तथा शान्तिकरण के मंत्र कंठस्थ है आपका विवाह संस्कार आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् स्वामी इन्द्रदेव जी यति पीलीभित ने सम्पन्न करवाया था। आपने भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर मा. नरेन्द्र मोदी के हाथ मजबुत किये हैं।

आपके द्वारा आर्य जगत् का प्रतिनिधित्व करने पर आर्यजन गौरवान्वित है।

-**कृष्ण देव आय,** भजनोपदेशक, बरेली (उ.प्र.)

गुरू पूर्णिमा अवसर पर सम्पन्न हुआ
देवयज्ञ एवं सम्मान समारोह

महर्षि आर्य समाज, देहरी (मंदसौर) के तत्वावधान में आषाढ़ मास वि.सं. २०७१ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पाचवाँ आयोजन सउल्लास **स्वामी गोपालदास जी महंत, रतलाम के मुख्य आतिथ्य में** आयोजित किया गया।

इस अवसर पर बृहद यज्ञ **पं. सत्येन्द्र जी आर्य पिपलिया मण्डी के ब्रह्मत्व** में सम्पन्न किया जाकर वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया। देवयज्ञ में पं. रमेशचन्द्र जी राव पुरोहित आर्य समाज मंदसौर एवं पं. सत्यपाल शर्मा सुविख्यात भजनोपदेशक का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। आर्य समाज देहरी की संस्थापिका श्रीमती राजकुंवर (राजमाता) की ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती सुशीला शर्मा ने यज्ञोपवित धारण करने का व्रत लिया। स्वामी महाराज तथा यज्ञब्रह्मा के प्रवचन तथा वैरसिया (भोपाल) से पधारे पं. कमलकिशोर जी, खेड़ा खदान के मांगीलाल जी आर्य के सुमधुर भजन हुऐ।

आर्य समाज मंदसौर के प्रधान गंगाधर जी शर्मा, गोवर्धनलाल जी खरसौदकला सहित अनेक महानुभाव उपस्थित रहे। शान्तिपाठ सहभोज पश्चात् समापन हुआ। आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था, संयोजन तथा कार्यक्रम संचालन संस्था सचिव नानालाल आर्य ने किया। संस्था प्रधान श्रीमती रेशम कुँवर आर्या ने आभार माना।

श्रावणी उपाकर्म पर्व के अवसर पर
आर्य वीर दल की स्थापना की गई

आंर्यसमाज, रावतभाटा (राज.) द्वारा दिनांक १०.०८.२०१४ को श्रावणी उपाकर्म पर्व सानन्द, सउल्लास मनाया गया। इस अवसर पर आर्यवीर दल रावतभाटा की स्थापना की गई। भजन-प्रवचन के माध्यम से उपस्थितों ने वेद सिद्धांतों तथा श्रावणी उपाकर्म पर्व के विषय में ज्ञानार्जन किया। श्री रेशमपाल सिंह जी मुख्य अतिथि, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री रमेशचन्द्र भाट, श्रीमती सुधासिंह, श्रीमती मोहिनी भाट आदि सदस्यों ने संबोधित किया।

सर्वश्री जोधसिंह, निर्भयसिंह, सुनील, जितेन्द्र, गोविन्द, मोहित, योगेन्द्र आदि सदस्यों ने आर्यवीर दल की सदस्यता ग्रहण की। सर्वश्री अरविन्द श्रीवास्तव, चतुर्भुज वर्मा, गायत्रीदेवी, पंकज कुमार, भूपेन्द्र अवस्थी, शंकरदत्त शुक्ला का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर वैदिक संसार पत्रिका के स्वाध्यायीजनों के विचारों का भी प्रस्तुतिकरण हुआ। शान्तिपाठ द्वारा कार्यक्रम का समापन किया गया।

सामवेद पारायण यज्ञ एवं
वेद प्रवचन सम्पन्न

आर्य समाज गंगापुर सिटी (राज.) में १४ जुलाई से चल रहे सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रवचन कार्यक्रम का दिनांक २० जुलाई २०१४ रविवार को बड़े ही हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में समापन हुआ। आर्य समाज के प्रधान गोविन्द प्रसाद आर्य ने बताया कि **यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. हरिशंकर जी अग्निहोत्री** (आगरा), **मधुर भजनोपदेशक-नरेशदत्त जी** (बिजनोर उ.प्र.) एवं ब्रह्मचारिणी नीलम ने मधुर स्वर से वेद मंत्रो का पाठ किया। आचार्य अग्निहोत्री ने यज्ञ-अग्निहोत्र योग वेद ग्रन्थों के जीवनोपयोगी उपदेशों के साथ-साथ राष्ट्र पर आयी विपत्तियों के गुढ़ एतिहासिक तथ्यों से भी अवगत कराया।

– प्रधान-गोविन्द प्रसाद आर्य

गुरुकुल प्रभात आश्रम में
राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठी सम्पन्न

दिनांक ०७/०८/२०१४ को गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, टीकरी मेरठ में **स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के तत्वावधान में एक राष्ट्रीय वैदिक शोध-संगोष्ठी का आयोजन** किया गया। ब्रह्मचारियों द्वारा सरस्वती वन्दना एवं स्वागत-गीत प्रस्तुत करने के उपरान्त विद्वानों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् विधिवत् गोष्ठी का आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम स्वामी अनन्त भारती जी ने वेदों में वर्णित नैतिकता में मित्रता, मधुरभाषण आदि तत्वों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। सारस्वत अतिथि डॉ. कन्हैयालाल पाराशर जी ने वेद और नीति को परस्पर पर्यायवाची बताते हुए सत्य, दम और त्याग की चर्चा की। डॉ. मानसिंह जी ने **'ऐसा करना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए'** यह बताना नीति माना। डॉ. नृसिंह चरण पण्डा जी ने कहा कि वेद में आचार, विचार की नैतिक बातों का ही वर्णन है। डॉ. एस. डी. कौशल जी के अनुसार नैतिक शिक्षा चरित्र गठन की एक प्रक्रिया है। डॉ. देवेन्द्र सिंह सोलंकी जी ने नैतिक मूल्यों के मूलाधार वेद विषय पर पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. दुर्गाप्रसाद मिश्र जी ने नैतिक तत्वों में घुसे हुए प्रदूषण को दूर करने की बात कही तो डॉ. श्रीवत्स शास्त्री ने कहा नैतिक तत्व तो मार्ग मात्र है वस्तुतः आचरण का महत्व है। इस प्रकार **'वैदिक वाङ्मय में नैतिक तत्व'** विषय पर आयोजित इस शोधसंगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से आए डॉ. योगेन्द्र भानु, डॉ. दीनदयाल, डॉ. विनोद, डॉ. भावप्रकाश, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. वेदव्रत आदि ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। जिन्हें त्रैमासिक शोधपत्रिका पावमानी में प्रकाशित किया जायेगा। अध्यक्षीय भाषण में प्रोफेसर राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने अपने कर्तव्य पालन में नैतिकता होना आवश्यक बताया। अन्त में आशीर्वचन देते हुए **गुरुकुल के कुलपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि संविधान एवं नीति में अन्तर है संविधान दण्ड के बल पर मनवाया जाता है और नैतिक मूल्य एक अनुभूति है, जो अन्तरात्मा से पैदा होते हैं।** तदुपरान्त शान्तिपाठ के साथ शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

शोक-सूचनाएँ

आचार्य सत्यसिंधु जी गुरुकुल होशंगाबाद के पिता **सेठ श्री भेरूसिंह जी गामी**, निवासी-हाटपीपल्या, जिला-देवास (म.प्र.) का देहावसान १५ अगस्त २०१४ को लगभग शतायु अवस्था में हो गया। आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि अनुसार गुरूकुल होशंगाबाद के विद्वानों द्वारा सम्पन्न किया गया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य-मौलाना तथा गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

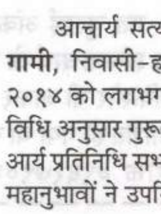

वरिष्ठ समाजसेवी **श्री जगदीशप्रसाद** जी जांगिड (उबाणा), सुपुत्र श्री गणपतराम जी जांगिड, निवासी- बड़ौदा (बाजवा वाले) मूल निवासी-शामगढ़, जिला-सीकर (राज.) का देहावसान ७६ वर्ष की आयु में दिनांक ०१.०८.२०१४ को हो गया। आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति के हँसमुख मिलनसार व्यक्ति थे। आप श्रीराम टिम्बर मर्चेण्ट, जगदम्बा स्टोन कम्पनी एवं घनश्याम ट्रेडर्स बड़ौदा में संचालित प्रतिष्ठानों के प्रतिष्ठित व्यवसायी थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती निर्मलादेवी जी तथा तीन सुपुत्र श्रीराम, प्रहलाद, जयेश जांगिड का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपनी भावांजलि व्यक्त करता है तथा शोक-संतप्त परिजनों के हेतु गहन शोक-संवेदना व्यक्त करता है -सम्पादक

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी बांसवाड़ा का सम्मान एवं उनके जीवन पर आधारित पुस्तक जीवन प्रवाह का छींच आश्रम के महंत श्री घनश्यामदास जी महाराज द्वारा विमोचन

वैदिक संसार के लेखक आचार्य रामगोपाल सैनी कालुराम सेवा सम्मान से सम्मानित

अध्यात्म पथ पत्रिका के वार्षिकोत्सव अवसर पर पत्रिका के प्रकाशक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री संबोधित करते हुए

वेद प्रचार वाहन से अलंकृत हो वैदिक संसार हुआ गतिमान

स्वामी शांतानंद जी का सम्मान करते दानदाता श्री नेमीचंद जी शर्मा

यज्ञ के मुख्य यजमान श्री गुरूदत्त जी शर्मा का सम्मान वैदिक संसार प्रकाशक द्वारा

आर्य जगत की महान विभूति स्वामी शांतानंद जी सरस्वती के साथ दानदाता श्री नेमीचंद जी शर्मा

श्री नेमीचंद जी अपनी भावनाओं से अवगत करवाते

वैदिक संसार प्रकाशक अपने विचार रखते हुए

उपस्थित गणमान्य महानुभाव वेद प्रचार वाहन के साथ

चहुँ ओर से ऋषि दयानंद सरस्वती के संदेशों से अलंकृत वेद प्रचार वाहन करेगा वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३६ पर एवं शेष चित्र अंतिम पृष्ठ पर

हमारे प्रणेता दिवंगत जँवरलाल जी शर्मा एवं
धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी शर्मा

वेद प्रचार वाहन से अलंकृत हो वैदिक संसार हुआ गतिमान

माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट,
गांधीधाम द्वारा वैदिक संसार, इन्दौर को

वेद प्रचार वाहन

भेंट किये जाने की चित्रावली

दानदाता भामाशाह श्री नेमीचंद जी शर्मा एवं
धर्मपत्नी श्रीमती संतोष देवी शर्मा

वेद प्रचार वाहन की कुंजी वैदिक संसार प्रकाशक को सौंपते दानदाता व अन्य गणमान्य महानुभाव

वेद प्रचार वाहन को ओम् ध्वजा दर्श करवाकर कार्यक्षेत्र में गतिमान करते स्वामी शांतानंद जी

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३६ पर

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१९